₹ 20

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

जुलाई 2013

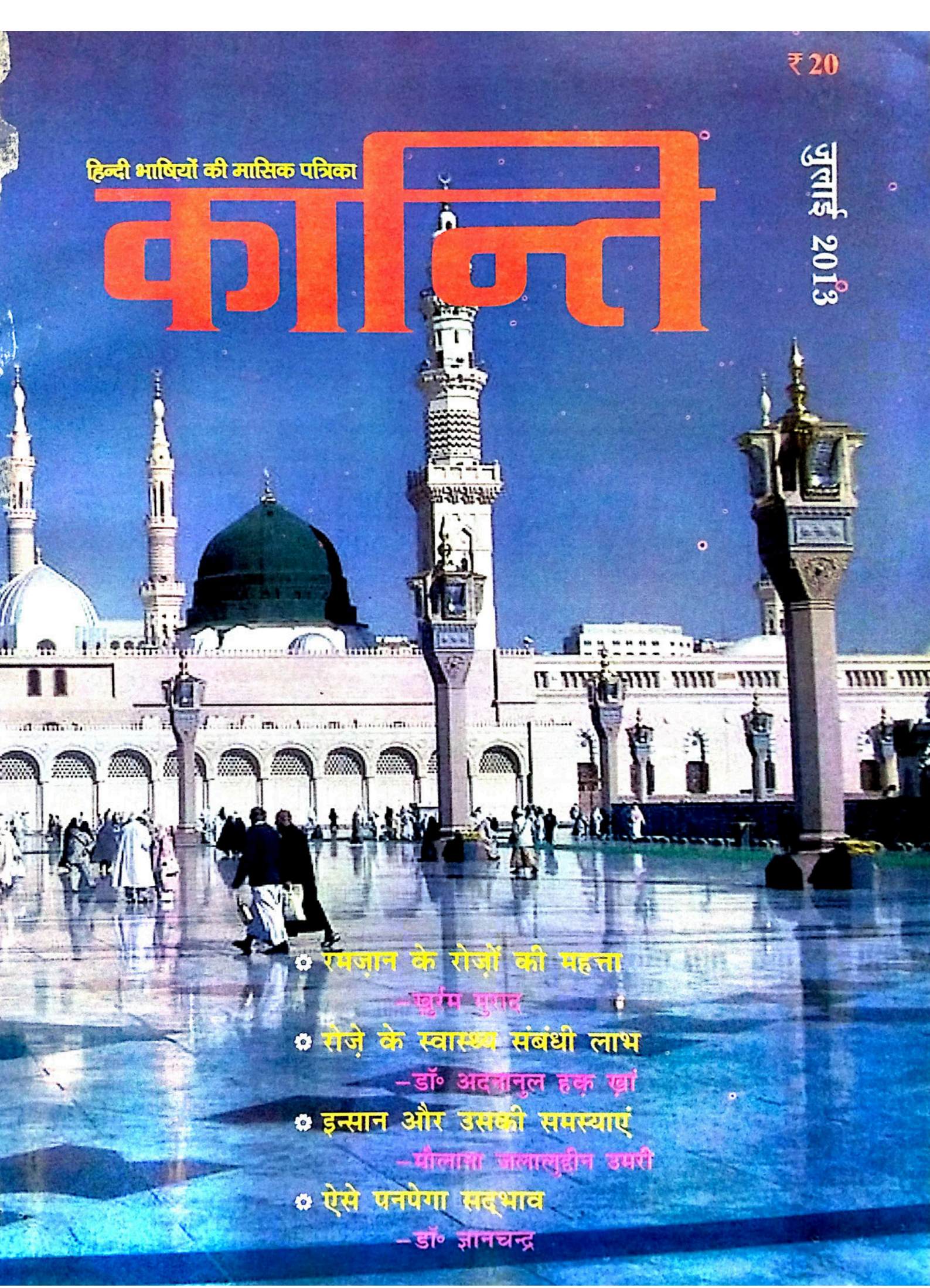

- रमज़ान के रोज़ों की महत्ता
  –ख़ुर्रम मुराद
- रोज़े के स्वास्थ्य संबंधी लाभ
  –डॉ॰ अदनानुल हक़ ख़ां
- इन्सान और उसकी समस्याएं
  –मौलाना जलालुद्दीन उमरी
- ऐसे पनपेगा सद्भाव
  –डॉ॰ ज्ञानचन्द्र

ALTAF I. SHAH

09422388688

नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया:
"हर क़र्ज़ सदक़ा है ।"
(हदीस)

EXIDE
INDUSTRIES LIMITED



GEM BATTERY CENTRE

2, Sunflower Apartments,
Opp. St. Andrew's Church,
Vasco-da-Gama, Goa
Tel. : 0832-2511270/2519066
E-mail : gembatteries@gmail.com

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 23 अंक 1 जुलाई 2013

ऐ लोगो ! जो ईमान लाए हो, तुम्हारे लिए रोज़े अनिवार्य कर दिये गये, जिस तरह तुमसे पहले नबियों के अनुयायियों के लिए अनिवार्य किये गये थे । इससे उम्मीद है कि तुममें ईशपरायणता का गुण पैदा होगा । –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी 314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

09818799223, 011-26949430

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 20/- विशेषांक रु० 30/-

वार्षिक रु० 220/-, दो वर्ष 425/-

पांच वर्ष 1000/-, आजीवन रु० 5000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–100 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–35 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

वरिष्ठ नागरिक

बूढ़े हैं, अशक्त हैं
अंतिम पड़ाव पर खड़े हैं,

यहां वहां जहां तहां हर जगह
धक्के और ठोकरें खाते हैं,
बाहर ही नहीं घर परिवार में भी
अवहेलना झेलते हैं, अनादर पाते हैं
अनावश्यक अनुपयोगी अनचाहा
बेकार का बोझ माने जाते हैं ।

कटोक्तियां सुनते हैं व्यंग्य सहते हैं
अपने ही जाये अकारण बुरा-भला कहते हैं,
अन्दर ही अन्दर घुटते हैं
मन मसोस कर ख़ामोश रहते हैं ।

किसी को याद नहीं हमारा कोई योगदान
कोई नहीं मानता हमारा कोई एहसान
हमारा कोई गुण कोई विशेषता
किसी को भी याद नहीं आती
हमारा किया कोई काम कही कोई बात
किसी को भी पसन्द नहीं आती ।

समय की बलिहारी, कभी जगमगाते थे
आज टिमटिमाते हैं,
शासन-प्रशासन घोषणाएं करके
साल में एक बार दिवस मना कर
कर्तव्य निवृत्त हो जाते हैं ।

फिर भी इतना संतोष है कि
सरकारी वक्तव्यों में
फाइलों में घोषणाओं में
चर्चा में परिचर्च में
वरिष्ठ नागरिक कहलाते हैं !

■ **ओमप्रकाश बजाज**

बी-2, गगन विहार, गुप्तेश्वर,

जबलपुर-482001 (म०प्र०)



कहां क्या है ?

वरिष्ठ नागरिक	–ओमप्रकाश बजाज	3
कुरआन ज्योति		5
अल्लाह का ज़िक्र (हदीस मंजरी)		6
ताकि पूरी ज़िन्दगी अल्लाह की इबादत बन जाए (संपादकीय)		7
यौन अपराध–कारण और निवारण (आपके पत्र)		9
इन्सान और उसकी समस्याएं (ज्वलंत सामयिक)	–मौलाना जलालुद्दीन उमरी	15
राष्ट्रीय एकता का महत्व (दृष्टिकोण)	–तरुण कुमार	19
आत्मचिन्तन का पल (फेसबुक उवाच)	–डॉ॰ मुहम्मद अहमद	21
आस्तिक–नास्तिक बनाम आम आदमी (अभिमत)	–आर॰ एस॰ गिरि	23
रमज़ान के रोज़े की महत्ता (विशेष आयोजन)	–खुर्रम मुराद	26–27
रोज़े के स्वास्थ्य संबंधी लाभ (विशेष आयोजन)	–डॉ॰ अदनानुल हक़ ख़ां	31
ईदगाह (कहानी)	–मुंशी प्रेमचन्द	33
शराब (कविता)	–मोहन लाल तंवर	37
ग़रीबी उन्मूलन में जक़ात का योगदान	–डॉ॰ एम॰ ए॰ रशीद	39
भारतीय नारी की सामाजिक स्थिति और डॉ॰ अम्बेडकर	–डॉ॰ सुरेश उजाला	41
तपन (कविता)	–ईश्वर दयाल जायसवाल	43
ऐसे पनपेगा सद्भाव (नज़रिया)	–डॉ॰ ज्ञानचन्द्र	45
देखते रह जाओगे (कविता)	–रोहित यादव	47
फैशनी दोहे (कविता)	–डॉ॰ राकेश अग्रवाल	47
आंखें : कुदरत का अनमोल तोहफ़ा (स्वास्थ्य चर्चा)	–विजेन्द्र कोहली	48
शिक्षा में मातृभाषा का महत्व (बालवीथी)	–एम॰ बी॰ मुरकुटे	49

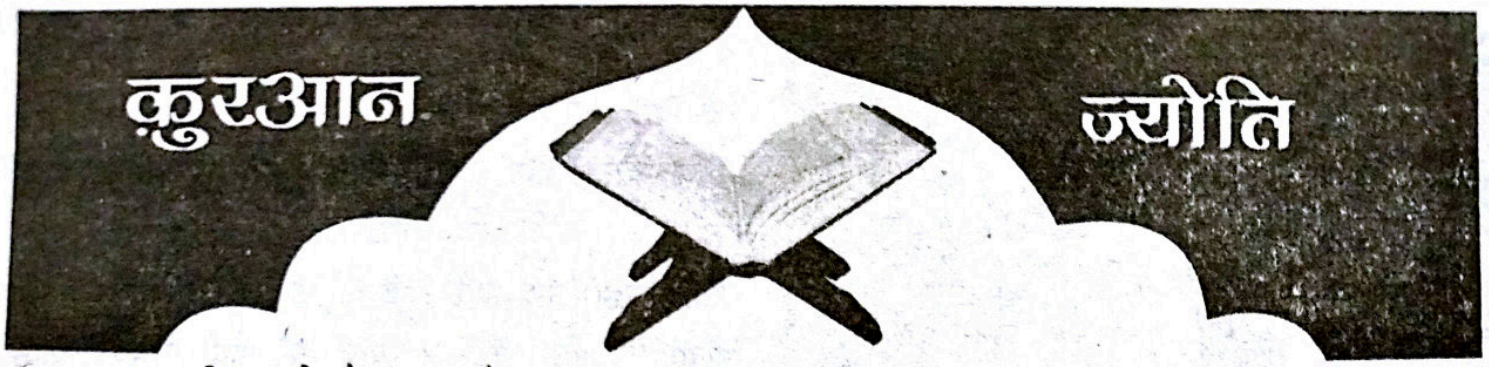

(30) यहूदी कहते हैं कि उज़ैर अल्लाह का बेटा है[29] और ईसाई कहते हैं कि मसीह अल्लाह का बेटा है । ये तथ्यहीन बातें हैं जो वे अपनी ज़ुबानों से निकालते हैं, उन लोगों की देखा-देखी जो इनसे पहले कुफ़्र (अधर्म) में पड़े हुए थे ।[30] अल्लाह की मार इन पर, ये कहां से धोखा खा रहे हैं । (31) इन्होंने अपने विद्वानों और संतों को अल्लाह के सिवा अपना रब बना लिया है[31] और इसी तरह मरयम के बेटे मसीह को भी, हालांकि उनको एक उपास्य के सिवा किसी की बन्दगी करने का आदेश नहीं दिया गया था, वह जिसके सिवा कोई उपासना का अधिकारी नहीं पाक है वह उन शिर्क भरी बातों से जो ये लोग करते हैं ।

–क़ुरआन, 9 : 30,31

29. उज़ैर से तात्पर्य एज़रा (EZRA) हैं जिनको यहूदी अपने धर्म का पुनर्स्थापक मानते हैं । उनका समय 450 ई॰पू॰ के आस-पास बताया जाता है । इसराईली रिवायतों के अनुसार हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के बाद जो आज़माइश का दौर बनी इसराईल पर आया, उसमें न केवल यह कि तौरात दुनिया से गुम हो गयी थी, बल्कि बाबिल की क़ैद ने इसराईली नस्लों को अपनी शरीअत, अपनी रिवायतों और अपनी क़ौमी भाषा इबरानी तक से अनभिज्ञ कर दिया था । अंततः उन्हीं उज़ैर या एज़रा ने बाइबल के ओल्ड टेस्टामेंट को फिर से तर्तीब दिया और नये सिरे से शरीअत बनायी । इसी कारण बनी इसराईल उनका बहुत सम्मान करते हैं और यह सम्मान इस सीमा तक बढ़ गया कि कुछ यहूदी गिरोहों ने उनको अल्लाह का बेटा तक बना दिया । यहां कुरआन मजीद के कथन का अभिप्राय यह नहीं है कि तमाम यहुदियों ने एकमत होकर ख़ुदा का बेटा बनाया है, बल्कि अभिप्रेत यह बताना है कि अल्लाह के बारे में यहूदियों के विश्वासों में जो दोष पैदा हुआ, वह इस सीमा तक तरक़्क़ी कर गया कि एज़रा को अल्लाह का बेटा कहने वाले भी उनमें पैदा हुए ।

30. अर्थात मिस्र, यूनान, रूम, ईरान और दूसरे देशों में जो क़ौमें पहले पथभ्रष्ट हो चुकी थीं उनके दर्शनों और अंधविश्वासों व कल्पनाओं से प्रभावित होकर उन लोगों ने भी वैसी ही भ्रष्टतापूर्ण धारणाएं गढ़ लीं ।

31. हदीस में आता है कि हज़रत अदी बिन हातिम, जो पहले ईसाई थे, जब नबी (सल्ल॰) की सेवा में उपस्थित होकर मुसलमान हुए तो उन्होंने और प्रश्नों के साथ एक प्रश्न यह भी किया था कि इस आयत में हम पर अपने विद्वानों और संतों को 'प्रभु' बना लेने का जो आरोप लगाया गया है उसकी वास्तविकता क्या है ? उत्तर में नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया, क्या यह सच नहीं है कि जो कुछ ये लोग हराम क़रार देते हैं, उसे तुम हराम मान लेते हो और जो कुछ ये हलाल क़रार देते हैं, उसे हलाल मान लेते हो ? उन्होंने कहा कि यह तो ज़रूर हम करते रहे हैं । फ़रमाया, बस यही उनको प्रभु बना लेना है । इससे मालूम हुआ कि अल्लाह की किताब के प्रमाण के बिना जो लोग मानव-जीवन के लिए वैध और अवैध की सीमाएं निर्धारित करते हैं, वे वास्तव में 'प्रभुता' के पद पर अपने आप जा विराजते हैं और जो उनकी शरीअत के इस अधिकार को मानते हैं, वे उन्हें 'प्रभु' स्वीकार करते हैं ।

ये दोनों आरोप, अर्थात किसी को अल्लाह का बेटा क़रार देना और किसी को शरीअत क़ानूनसाज़ी का अधिकार दे देना इस बात के प्रमाण में प्रस्तुत किये गये हैं कि ये लोग अल्लाह पर ईमान के दावे में झूठे हैं । अल्लाह की हस्ती को चाहे ये मानते हों, मगर इनकी ईशधारणा इतनी ग़लत है कि इसके कारण उनका ईश्वर (अल्लाह) को मानना न मानने के बराबर हो गया है ।

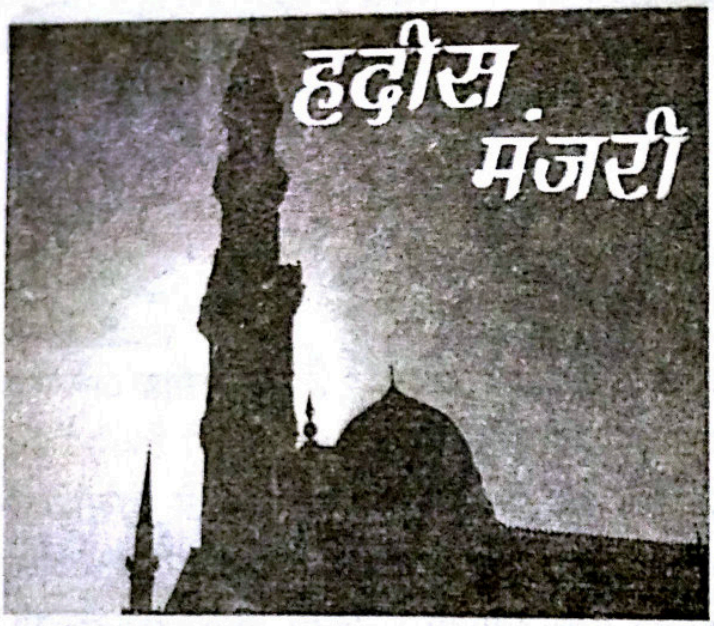

अल्लाह का ज़िक्र

● हज़रत अबू मालिक अल-अशअरी (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : ''सुथराई आधा ईमान है और 'अलहम्दु लिल्लाह (प्रशंसा अल्लाह के लिए है) तुला को भर देता और 'सुबहानल्लाह' (महान है अल्लाह) और 'अलहम्दुलिल्लाह' आसमानों और ज़मीन के मध्य के अंतराल को भर देते हैं–या प्रत्येक भर देता है ।''

–मुस्लिम

● हज़रत सौबान (रज़ि॰) से रिवायत हे । वे कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) जब नमाज़ से निवृत्त होते, तो तीन बार क्षमा-याचना करते और कहते : ''अल्ला हुम्मा अन्तस सलामु व मिन्कस्सलामु, तबारकता या ज़लजलालि वल इकराम ।'' (ऐ अल्लाह, तू सर्वथा सलामती है और सलामती तेरी तरफ़ से है, बड़ा बरकत वाला है तू प्रताप और प्रतिष्ठा के स्वामी ।) औज़ाई से, जो हदीस के एक रावी हैं, पूछा गया कि क्षमा-याचना क्या है ? कहा : आप पढ़ते थे : 'अस्तग़फ़िरुल्लाह; अस्तग़फ़िरुल्लाह' (मैं अल्लाह से क्षमा-याचना करता हूं, मैं अल्लाह से क्षमा-याचना करता हूं ।)

–मुस्लिम

● हज़रत मुग़ीरह बिन शोअबह (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) जब नमाज़ से निवृत्त होते और सलाम फेरते तो कहते : ''अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह एक है उसका कोई साझी नहीं, बादशाही उसी की है और प्रशंसा उसी के लिए है और उसे हर चीज़ पर पूर्व सामर्थ्य प्राप्त है । ऐ अल्लाह, तू जो प्रदान करे उसे कोई रोकने वाला नहीं, और जो तू रोक ले उसे कोई देने वाला नहीं और तेरे मुक़ाबले में किसी साधन-सम्पन्न व्यक्ति का साधन उसे कुछ भी लाभ नहीं पहुंचा सकता ।''

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि॰) से रिवायत है कि हर नमाज़ के बाद जब सलाम फेरते तो यह कहते : अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं, बादशाही उसी की है और प्रशंसा उसी के लिए है और उसे हर चीज़ पर पूर्ण सामर्थ्य प्राप्त है, न कोई ताक़त है और न कोई शक्ति किन्तु अल्लाह के द्वारा, अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, और हम केवल उसी की बन्दगी करते हैं, उसी का अनुग्रह है और उसी का उदारदान और उसी के लिए अच्छी प्रशंसा है । अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, हमारे यहां दीन (भक्ति और बन्दगी) केवल उसी के लिए है । चाहे विधर्मियों को यह बुरा ही लगे । हज़रत इब्न ज़ुबैर (रज़ि॰) कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) हर अनिवार्य नमाज़ के बाद इन्हीं शब्दों के द्वारा अल्लाह के एकमात्र पूज्य होने की अभिव्यक्ति करते थे ।

–मुस्लिम

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

संपादकीय

ताकि पूरी ज़िन्दगी अल्लाह की इबादत बन जाए

रमज़ान का चांद दिखते ही रहमतों और बरकतों का महीना माहे रमज़ान शुरू हो जाएगा । वास्तव में अल्लाह की राह में समर्पित कर देने का प्रतीक पाक महीना रमज़ान समूची मानव जाति को प्रेम भाईचारे और इंसानियत का संदेश भी देता है । यह वह महीना है, जिसमें कुरआन अवतरित किया गया । यह इन्सान का चारित्रिक प्रशिक्षण-मास है, जिसमें वह अपने आचार, विचार और व्यवहार को अपने पैदा करने वाले पालनहार के इच्छानुसार बनाने के लिए अपने को अभ्यस्त करता है । यह मास प्रतिवर्ष इन्सान के अंदर यह भावना बलबती करता है कि उसके विचार और कर्म से हर हाल में अल्लाह की बन्दगी हो और इसमें वह एक पल के लिए भी ग़ाफ़िल न हो । जिस ओर अल्लाह की रज़ा हो, उधर जाए एवं जिस ओर उसकी नाराज़ी हो, उससे बचे । अगर इन्सान के अंदर ईशपरायणता अर्थात तक़्वा का विशिष्ट गुण पैदा हो जाए, तो अल्लाह के इच्छानुसार ज़िन्दगी बिताने का अभीष्ट लक्ष्य सुगमता से प्राप्त किया जा सकता है । इस कारण से भी रोज़ा इंसानों के लिए अनिवार्य ठहराया गया, ताकि इन्सान अल्लाह रज़ा और खुशनूदी हासिल कर सके । कुरआन में है–''ऐ ईमान वालो, तुम्हारे लिए रोज़े अनिवार्य कर दिये गये, जिस प्रकार तुम से पहले नबियों के अनुयायियों के लिए अनिवार्य किये गये थे । इससे आशा है कि तुममें तक़्वा (ईशपरायणता) का गुण पैदा होगा' (2:183)। एक अन्य आयत में है–'रमज़ान वह महीना है जिसमें कुरआन उतारा गया जो इंसानों के लिए सर्वथा मार्गदर्शन है और ऐसी स्पष्ट शिक्षाओं पर आधारित है जो सीधा मार्ग दिखाने वाली और सत्य और असत्य का अंतर खोलकर रख देने वाली है । अतः अब से जो व्यक्ति इस महीने को पाये उसके लिए अनिवार्य है कि इस पूरे महीने के रोज़े रखे' (2:185)। इस प्रकार रोज़ा इन्सान को सच्चा इन्सान बनाता है । उसे संयमी और परहेज़गार बनाता है । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया कि 'रोज़ा' दुनिया में गुनाहों से और आख़िरत में नरक से बचने वाली, ढाल है' । यह ज़िन्दगी को विकारों एवं ख़राबियों से बचाने का प्रभावी माध्यम है । हदीस में है–'जिस व्यक्ति ने (रोज़े की हालत में) झूठ बोलना और उस पर अमल करना न छोड़ा, तो अल्लाह को इसकी कुछ आवश्यकता नहीं कि वह (रोज़ा रखकर) अपना खाना-पीना छोड़ दे' 'कितने ही रोज़ा रखने वाले ऐसे हैं, जिन्हें अपने रोज़े से भूख-प्यास के अतिरिक्त कुछ हासिल नहीं होता' (बुख़ारी, दारमी)। रोज़ा किस तरह से इन्सान के चरित्र को निखारता है ? हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया–'अतः जब तुमगें से किसी का रोज़ा हो, तो चाहिए कि वह न अश्लील बात करे, न शोर मचाए और यदि कोई उससे गाली-गलौच करे या लड़ने-भिड़ने पर उतर आये, तो (उससे भी और अपने मन में भी) कहे कि मैं रोज़े से हूं...' (मुस्लिम)। यूं तो प्रत्येक मुसलमान के लिए बुरी, अभद्र बात कहने, गाली-गलौज करने और लड़ने-भिड़ने आदि कुसंस्कारों से हर हाल में बचना आवश्यक है, लेकिन जब वह रोज़े से हो, तो उसके लिए इस शांति-नीति की आवश्यकता और अधिक बढ़ जाती है ।

रोज़ा रखना इन्सान की हर चीज़ को पाबन्द बनाता है । आंख का रोज़ा यह है कि जिस चीज़ को देखने से अल्लाह ने मना किया, उसे न देखें । कान का रोज़ा यह है कि जिस बात को सुनने से अल्लाह ने मना किया, उसे न सुनें । ज़ुबान का रोज़ा यह है कि जिस बात को बोलने से अल्लाह ने मना किया, उसे न बोलें । हाथ का रोज़ा यह है कि जिस काम को करने से अल्लाह ने मना किया, उसे न करें । पैर का रोज़ा यह है

कि जिस तरफ़ जाने से अल्लाह ने मना किया, उधर न जाएं । दिमाग़ का रोज़ा यह है कि जिस बात को सोचने से अल्लाह ने मना किया, उसे न सोचें । इसी के साथ-साथ यह भी है कि जिन कामों को अल्लाह ने पसन्द किया, उन्हें किया जाए । केवल अल्लाह के बताए गये तरीक़े के अनुसार रोज़ा रखना ही इंसान को लाभ पहुंचाता है । इस्लाम के अंतिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने फ़रमाया–'इंसान के हर अमल का सवाब (अच्छा बदला) दस गुना से सात सौ गुना तक बढ़ाया जाता है, मगर अल्लाह फ़रमाता है–रोज़ा इससे अलग है, क्योंकि वह मेरे लिए है और मैं ही इसका जितना चाहूंगा बदला दूंगा' (बुख़ारी, मुस्लिम)। कोई दूसरा कर्म इसका विकल्प नहीं बन सकता । इस महीने में क़ुरआन का अवतरण हुआ । इस प्रकार यह महीना क़ुरआन के अवतरण का वार्षिकोत्सव भी है । इस महीने में पूरा क़ुरआन पढ़ा जाता है । वैसे तो क़ुरआन पढ़ना नेकी है, उसके हर शब्द के पढ़ने का सवाब है, पर उसे समझकर पढ़ने पर उससे हिदायत मिलती है और इस तरह इस महीने में पढ़ने पर बहुत अधिक नेकियां मिलनी तय है । रमज़ान के महीने में एक ऐसी रात है, जो हज़ार महीनों से ज़्यादा बेहतर है ।' इस रात से मुराद लैलतुल क़द्र है । जैसा कि पवित्र क़ुरआन में है कि 'हमने इस क़ुरआन को शब-ए-क़द्र में नाज़िल (अवतरित) किया है और तुम क्या जानो कि शब-ए-क़द्र क्या चीज़ है । शब-ए-क़द्र हज़ार महीनों से ज़्यादा बेहतर है' (97:1-3)। क़ुरआन इंसान की भलाई और हिदायत का रास्ता दिखाने वाली किताब है । सच्ची बात तो यह है कि इंसान के लिए इससे बढ़कर कोई दूसरी नेमत हो ही नहीं सकती । इसीलिए कहा गया है कि इंसानी तारीख़ में कभी हज़ार महीनों में भी इंसानियत की भलाई के लिए वह काम नहीं हुआ, जो इस एक रात में हुआ है । इस रात की अहमियत के एहसास के साथ जो इसमें इबादत करेगा, वह दरअस्ल यह साबित करता है कि उसके दिल में क़ुरआन मजीद की सही क़द्र और क़ीमत का एहसास मौजूद है । अल्लाह से दुआ है कि रोज़ा सभी रोज़ेदारों के भीतर अपेक्षित गुण और विशिष्टताएं पैदा करे ।





भिक्षाटन–एक गंभीर समस्या

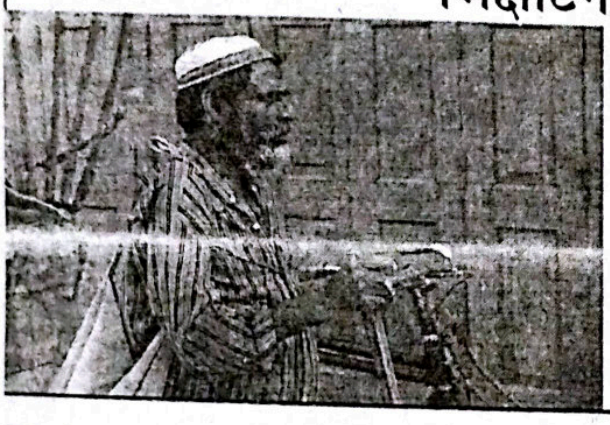



यौन अपराध–कारण और निवारण

दिल्ली में 16 दिसम्बर को एक छात्रा के साथ जो कुछ हुआ उस घिनौनी घटना की निंदा में जनता की प्रतिक्रिया देखने को मिली । मीडिया ने भी इसे पूरा कवरेज दिया । छात्र एवं छात्राओं ने सड़कों से लेकर सदन तक अपने गुस्से का इज़हार किया । छात्रा की मौत के बाद भी यह सिलसिला जारी रहा और अपराधियों के लिए कठोर सज़ा की मांग की जाती रही । अपराधी के लिए फांसी, उम्रक़ैद या उसे पौरुष से वंचित कर देने की मांग तक की गयी ।

उस समय माहौल ऐसा बन गया था मानो सारी महत्वपूर्ण समस्याओं का समाधान हो गया है अब केवल यही एक समस्या रह गयी है । लेकिन उस दौरान भी, बलात्कार, अपहरण, सामूहिक बलात्कार और महिलाओं पर अत्याचार की घटनाएं उसी रफ़्तार से जारी रहीं । 3 साल की बच्ची से लेकर वृद्ध महिलाएं तक इसका शिकार होती रहीं । वास्तविकता यह है कि समाज में बुराई और अपराध की ओर जाने वाले रास्ते खुले हुए हैं और समाज को इसकी कोई परवाह नहीं है । अपराध हो जाने के बाद उसके लिए क़ानून और सज़ा के बारे में सोचा जाता है ।

लड़कियां और युवतियां आज़ादी और फ़ैशन के नाम पर अपने शरीर का प्रदर्शन करती हैं । वे समझती हैं कि वे आज़ाद हैं अपनी मर्ज़ी के अनुसार रहन-सहन अपना सकती हैं, इस पर प्रतिबंध लगाने या आपत्ति करने का किसी को कोई अधिकार नहीं है । यह वास्तव में उनकी ग़लतफ़हमी है । पुरुषों की इच्छा होती है कि लड़कियां कम से कम कपड़े पहनें ताकि वे उनके सौंदर्य से आनंदित हो सकें । टी०वी०, अख़बार और पत्रिकाओं में जो विज्ञापन होते हैं उनमें महिलाओं को नाममात्र कपड़ों में दिखाया जाता है । हर तरह के विज्ञापन के लिए महिला का प्रयोग होता है, यहां तक कि ब्लेड के विज्ञापन में भी महिला की सुन्दरता को पेश किया जाता है । फ़िल्मों और टी०वी० के प्रोग्रामों में भी महिलाओं को अर्द्धनग्न अवस्था में पेश किया जाता है । ये फूहड़ और शर्मनाक दृश्य यौन भावनाओं को भड़काते हैं । इन दृश्यों पर कोई रोक-थाम नहीं है ।

समाज में महिला और पुरुष के निर्बाध मेल-जोल पर कोई रोक नहीं है, लेकिन अगर उसके साथ बलात्कार हो जाए तो क़ानून की पकड़ और सज़ा की बात होती है । दफ़्तार में काम करने वाली महिलाएं अपने मेकअप के साथ सभा की परी बनी रहती हैं, लेकिन अगर उनके साथ कुछ हो जाए तो क़ानून की बात होती है । संयुक्त शिक्षा के अनुसार लड़के-लड़कियां एक साथ पढ़ते हैं, खेलते-कूदते हैं, पार्कों और सिनेमाघरों में साथ जाते हैं, लेकिन अगर उनके बीच कुछ हो जाए तो वे समाज की नज़र में अपराधी हैं । शर्मनाक बात यह है कि देश में शराब खुलेआम बेची और पी जाती है । इस कारोबार में खुद प्रशासन लिप्त है । शराब सभी बुराइयों की मां है । देश में होती यौन अपराध की घटनाओं में शराब की महत्वपूर्ण भूमिका है । अर्थात आज बुराई की ओर ले जाने वाले रास्ते तो खुले हुए हैं, लेकिन जब परिणाम सामने आता है तो सख़्त सज़ा की मांग की जाती है ।

पहले इन रास्तों को बन्द करना होगा जो बुराई की ओर ले जाते हैं । एक पवित्र माहौल तैयार होगा, जिसमें बुराइयों की संभावना ही नहीं रहे । इसके बावजूद अगर कुछ बुराई हो जाती है तो समाज को उससे बचाने के लिए क़ानून और सज़ा का प्रावधान होना चाहिए । इस्लाम यही तरीक़ा बताता है । वह–

–शराब और दूसरे मादक पदार्थों को हराम ठहराता है ।

–महिला-पुरुष के बेरोक-टोक मेल-जोल पर प्रतिबंध लगाता है ।

–महिलाओं को पूरा वस्त्र धारण करने को प्रतिबंधित करता है ।

–पर्दा अनिवार्य ठहराता है ।

–संयुक्त शिक्षा की अनुमति नहीं देता ।

इन सारे प्रावधानों के बावजूद समाज में अगर कोई अश्लील काम करे तो उनके लिए सज़ा की व्यवस्था करता है ।

पवित्र समाज निर्माण के लिए आवश्यक है कि समाज

का निर्माण एकेश्वरवाद के आधार पर हो । इस आधार पर कि समस्त सृष्टि का रचयिता, स्वामी और पालनहार वही एक ईश्वर है और परलोक में उसके प्रति सारे मनुष्य को अपने कर्मों की जवाबदेही करनी है । यही वह डर है जो मनुष्य को बुराइयों से बचा सकता है । लोगों में जवाबदेही की भावना पैदा करने के लिए ही अल्लाह ने अपने पैग़म्बर भेजे । जब तक समाज का निर्माण इन शिक्षाओं के आधार पर नहीं होगा, समाज से बुराइयां समाप्त नहीं होंगी । अपराध हर दौर में रूप बदल-बदलकर सामने आते हैं । आज के भ्रष्ट प्रशासन से समाज सुधार की आशा नहीं की जा सकती । हमें सही दिशा में सोचना होगा केवल तभी समाज को बुराइयों से पाक किया जा सकता है ।

गुलाम रसूल देशमुख

भुसावल, महाराष्ट्र

कल, आज और कल

समय को बदलते, करवट लेते कभी देर नहीं लगती । जो आज वर्तमान में मोती की तरह चमकता दिखता है । वह न जाने आने वाले कल की गोद में कहीं क्यों खो-सा जाता है । शायद इन्हीं सब दूरियों के बीच की दूरी को पीढ़ियों की दूरियां कहा जाता है । कहते हैं कि हर पांच साल बाद एक नया बदलाव आता है जो अपनी ही परछाई अपने बच्चों की शक्ल के रूप में मां-बाप को दिखायी देता है । मां-बाप जहां कच्ची मिट्टी के बने बच्चे को शक्ल का रूप देते हैं । वहीं ये शक्ल उन्हें वक़्त के आईने में अनजान-सी दिखायी पड़ती है ।

बड़ों की भाषा, "आजकल के बच्चे !"

रुकना तो ये जानते नहीं, और बुज़ुर्ग की ये सुनते नहीं । संस्कार, आदर्श, जीवन के मूल्य बच्चों को सौग़ात में मां-बाप से मिलते हैं या यूं कहें कि एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को अपनी सभ्यता का नायाब तोहफ़ा धरोहर के रूप में देती है । आज का समय समुद्र के सिकन्दरों का है । आधुनिक युग की तेज़ हवाओं ने जहां देश-विदेश की दूरियों को ख़त्म-सा कर दिया है वहीं बच्चों का मन भी इससे अछूता नहीं रहा है । आज छोटी-छोटी आंखों में बहुत बड़े-बड़े सवाल छिपे होते हैं । जब समुद्र की लहरें भी धरती की सतह से बार-बार टकराती है तो वे भी धरती को नया चेहरा दे देती हैं । उसी तरह बच्चे भी जब उम्र के साथ नये-नये अनुभवों को जोड़ लेते हैं तो एक नयी शक्ल के रूप में सामने आते हैं । जो पहले से बिल्कुल अलग होती है ।

बच्चों की नज़र में बच्चे हमेशा सही होते हैं और मां-बाप की नज़र में मां-बाप बिल्कुल सही होते हैं । समस्या यह है कि किसे सही मानें ? अगर बच्चों के पास जोश और उत्साह है तो मां-बाप के पास अनुभव जो ज़िन्दगी ने उन्हें दिया है ।

आजकल बड़ी-बड़ी कंपनियों में 'रोल बदलकर' काम करने का प्रचलन है, जिससे एक कर्मचारी दूसरे कर्मचारी की परिस्थितियों को पहचान सके ।

शायद मां-बाप और बच्चों के बीच आयी दूरियों का यह एक हल हो सकता है, ख़ुद को दूसरों की जगह पर रखकर सोचना । कई बार बड़े कहते हैं रहने दो 'बच्चे तो हमें कुछ समझते ही नहीं ?' हम तो कुछ हैं ही नहीं ? और बच्चों का कहना होता है-'अगर बड़े हैं तो क्या हम हर बात मानेंगे ।'

सवाल उठाकर सवाल करना कभी भी समस्या का समाधान नहीं होता । जब ज़िन्दगी के कुछ पलों में ठहराव आये तो मुंह मत मोड़िये 'बात कीजिए' क्योंकि सिर्फ़ हमारी सोच ही दो पीढ़ियों के बीच आये अंतराल को कम कर सकती है ।

'मां-बाप अपनी आंखों से दुनिया को देखते हैं और बच्चे अपनी आंखों से । बच्चों के लिए आने वाला कल न जाने कितनी चुनौतियों से भरा होता है । भीड़ में अपनी पहचान बनाना, ख़ुद को साबित करना, लकीर से हटकर सोचना ।

कहने को चाहे कुछ भी हो पर आख़िर हैं तो हम अपने मां-बाप की ही परछाई ।

इस समस्या का कोई एक समाधान या हल नहीं हो सकता । प्रश्नों के उत्तर ढूढ़ने पर ही मिलते हैं ? पीढ़ियों का अंतराल कम हो ये ज़रूरी है, क्योंकि हमारे बड़े एक छोर है तो हम दूसरा, एक पूर्व है तो दूसरा पश्चिम । आने वाला कल तभी सुनहरा होगा जब दोनों पीढ़ियों का हाथों में हाथ होगा ।

दीप्ति सक्सेना

मुंडवा, पुणे (महाराष्ट्र)

कब बदलेगी मानसिकता ?

आपकी प्रसिद्ध पत्रिका 'कान्ति' मई 13 का नवांक पढ़ा । आपके संपादकीय लेख जागरूकता फैलाने वाले होते

हैं । प्रस्तुत अंक में आपने ''कन्या भ्रूण हत्या : मानसिकता में बदलाव की ज़रूरत'' में सही लिखा है कि कन्या भ्रूण-हत्या की विकृत मानसिकता का वीभत्स प्रदर्शन जारी है । लड़कियों के पालन-पोषण, रहन-सहन में लड़कों की अपेक्षा भेदभाव अब भी जारी है । बेटे की ख़्वाहिश में लड़कियों की हत्या अब भी हो रही है । कब हमारी मानसिकता में बदलाव आएगा कब हमारे दिलों में बेटे-बेटी का भेदभाव ख़त्म होगा ? सिर्फ़ क़ानून बनाने से पूर्णतया रोक-थाम नहीं हो सकती । मन के विचारों में बदलाव ही इस जघन्य घृणित कार्य का अंत कर सकता है ।

इसमें कोई संदेह नहीं कि आपकी पत्रिका निरंतर नय नय साहित्यकारों व लखकों को जोड़ती जा रही है । निरंतर पाठकों की संख्या में बढ़ोतरी हो रही है । इसके लिए आपकी मेहनत, लगन व ईमानदारी को श्रेय जाता है । बधाई स्वीकारें । अच्छे अंक हेतु साधुवाद ।

सुरेन्द्र कुमार 'अंशुल'

1400/9 अर्बन एस्टेट, अम्बाला शहर-134003 (हरि॰)

ईश्वर के प्रति समर्पण

नेता झूठे वादे करते दोष सभी जनता पर धरते,
सच्ची नीति देश भक्ति को, बिल्कुल दिया बिसार ।
बोफोर्स, यूरिया और हवाला, चारा तक में किया घोटाला,
तहलके का है ढंग निराला, नामों की भरमार ।
सी॰बी॰आई॰ जांच के आगे भेद खुले पर सब बच भागे
मुख्य मंत्री और संतरी हुए शिकार
जाति, वर्ण और समुदाय लड़ते अस्ली धर्म भुलाय
मानवता का ख़ून बहाते इनसे ही बनती सरकार ।
जनता तो है भेड़ बेचारी जो भी आया ऊन उतारी
अपनी जान बचाने का भी नहीं इनको अधिकार ।
खेल जगत में सट्टेबाज़ी, मनोरंजन में आग लगा दी
नग्न हो रहे बड़े खिलाड़ी खेल बना व्यापार ।
पुलिस का अपना ढंग निराला सच्चे के हैं मुह पर ताला,
बेक़सूर पर केस बना दे, डरते सब नर-नार ।
अभिनेता भी नेता बनते अभिनय कर जनता को ठगते
संग रग और अंग दिखाते, झूठे सब प्रचार
सीमेंट के अन्दर रेत मिलाते बनते हुए भवन गिर जाते
बेक़सूर दबकर मर जाते फिर भी हंसते ठेकेदार
बड़ा रोग कह भय दिखलाते लालचवश हो दवा खिलाते
वैद्य-डॉक्टर धोखा देते तड़प रहे बीमार ।
व्यापारी यहां लूट मचाते करे मिलावट नहीं शरमाते
नक़ली लेबल लगे माल से भरे पड़े बाज़ार ।
झूठा जग यह सब सपना है कोई नहीं यहां अपना है
परमेश्वर को करो समर्पण, झैवर यही है सार ।

रामस्वरूप झैवर

9-10, शास्त्रीनगर विस्तार
भीलवाड़ा (राज॰)

शर्म आती है

'कान्ति' मासिक का मई 2013 अंक पढ़ा । 'कान्ति' में प्रकाशित रचनाएं श्रेष्ठता लिए हुई है । यौन अपराध प्रतिदिन बढ़ रहे हैं । यौन अपराध की घटनाओं को रोकने हेतु समाज के प्रत्येक नागरिक को जागरूक होने व हिम्मत के साथ इन दरिन्दों का मुक़ाबला करना होगा । इन्हें पकड़ कर क़ानून के हवाल करें ताकि इन्हें इनके किये का उचित दंड मिल सके । पुलिस को सतर्क रहना होगा । अपने कर्तव्य को भली-भांति निभाना होगा ।

हमारे देश में 15 मिनट पर एक महिला से छेड़छाड़ होती है । हर 29 मिनट पर दुष्कर्म का मामला सामने आता है । वहीं हर 53 मिनट पर एक महिला यौन उत्पीड़न की शिकार होती है । यह बात सामाजिक अनुसंधान की रिपोर्ट में सामने आयी है । यह जानकर शर्म आती है कि हमारे देश में यह सब हो रहा है । आज नन्ही मासूम बच्चियां भी इन दुष्कर्मियों से सुरक्षित नहीं हैं । मां-बाप नन्ही बच्चियों को घर से अकेला भेजने पर डरने लगे हैं । यह सब क्यों हो रहा है सरकार को इस पर गंभीरता से सोचना होगा । ऐसे कुकर्म करने वालों को कठोर से कठोर दंड देना होगा । नागरिकों को सचेत रहना होगा ताकि इस तरह का अपराध करने वाले बच न पाएं ।

यशपाल जैन 'आदर्श'

494/5, राजापार्क, जयपुर-302004 (राज॰)

स्वयं को प्रेरित करें

अप्रैल 2013 का अंक पढ़ा । संपादकीय ''महिलाओं की सुरक्षा का गंभीर प्रश्न'' बहुत पसन्द आया । भारतीय महिलाओं की सुरक्षा का गंभीर प्रश्न देश के सामने उठ खड़ा हुआ है । महिला उत्पीड़न की समस्या बढ़ती जा रही है । शराबनोशी महिलाओं के विरुद्ध अपराधों की जड़ है । अधिकतर बलात्कार की घटनाएं शराब के नशे की हालत में होती हैं ।

इसके अलावा दहेज के लिए होने वाली प्रताड़ना भी एक गंभीर समस्या है । पुलिस व्यवस्था में भी सुधार होना चाहिए और पुलिस को चाहिए कि महिलाओं के ख़िलाफ़ होने वाले अपराधों की सही तरीक़े से जांच करे ।

इसके अलावा ''इस्लाम में जनसेवा का महत्व'' भी पढ़ा जो कि एक प्रशंसनीय लेख है । यह बात बिल्कुल सत्य है कि किसी भी कर्म को करने के लिए अच्छे प्रेरक भी हो सकते हैं और बुरे भी ।

अत: जनसेवा का काम अच्छे मक़सद से करना चाहिए । प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह जनसेवा अल्लाह की निकटता पाने के लिए करे, न कि लोगों को दिखाने के लिए । जो कुछ भी कर्म व्यक्ति करता है, उसकी अल्लाह को ख़बर रहती है तथा अल्लाह आख़िरत में इसका बदला देगा । बस नीयत साफ़ होनी चाहिए । दिखावे के लिए जनसेवा नहीं करनी चाहिए ।

''स्वयं को प्रेरित करना सीखें'' लेख भी बहुत पसन्द आया । किसी भी व्यक्ति की सफलता के पीछे किसी अन्य व्यक्ति की प्रेरणा का बड़ा हाथ होता है, पर कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जो स्वयं को ही प्रेरित कर लेते हैं ।

इन्हें अन्य व्यक्ति से प्रेरणा लेने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती है । ऐसे व्यक्ति कठोर परिश्रमी व ऊंची उपलब्धि प्राप्त करने वाले होते हैं । अत: हमें चाहिए कि हम स्वयं को प्रेरित करें तथा ऊंचे से ऊंचा लक्ष्य प्राप्त करें । जीवन में सफल होना है तो जोखिम तो उठाना ही पड़ेगा तथा जोखिम उठाने के लिए स्वयं को प्रेरित करना अनिवार्य है । अत: जीवन की कठिनाइयों से न घबराएं और स्वयं को प्रेरित करते हुए जीवन में आगे बढ़ें । स्वयं द्वारा प्रेरित लोगों के लिए बड़ी से बड़ी समस्या भी आसान बन जाती है तथा ऐसे व्यक्ति लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर लेते हैं ।

अबरार अहमद (लाखेरी वाले)
जे०सी० कालोनी, रंगपुर रोड, कोटा,
राजस्थान-324002

परीक्षा की जगह है संसार

मैं 'कान्ति' का बहुत पुराना पाठक हूं, 'कान्ति' के अन्दर ज्ञान का भंडार है । 'कान्ति' के अन्दर सही, विस्तृत एवं सटीक जानकारी मिलती है । कुछ लोग जो मेहनती हैं, ईमानदार हैं, सच्चे हैं वे 'कान्ति' से जुड़े हैं, और वे लोग देश में, समाज में सुधार चाहते हैं । मैंने बार-बार कुरआन को पढ़ा है और कुरआन का अर्थ भी समझ लिया है । किंतु आज के समय दुनिया ज़्यादा भौतिकवादी है, लूट-खसोट, बेईमानी, टैक्स चोरी, रिश्वत और भाई-भतीजावाद में जुटी हुई है । किंतु कुरआन और इस्लाम में साफ़ लिखा है कि यह दुनिया केवल आज़माइश और परीक्षा है और आख़िरत अस्ली मक़ाम है, जब इस्लाम के इस अर्थ को हम समझ जाएंगे तो हमारी ज़िन्दगी में अमन, चैन, सुख-शांति होगी ।

बिरेन्द्र कुमार
कौशाम्बी, ग़ाज़ियाबाद (उ०प्र०)

विचारों को शुद्ध करने वाली

विचारों को शुद्ध करने वाली पत्रिका 'कान्ति' का अंक मई 2013 पढ़ा । आपका संपादकीय 'मानसिकता में बदलाव की ज़रूरत सटीक है ।

अनुपम जीवन, सार्थक एवं सफल जीवन । विधवाओं का उद्धार आदि लेख प्रेरणादायक हैं । स्वास्थ्य चर्चा के अंतर्गत उपयोगी जानकारियां मिलीं । पत्रिका का 22 वर्ष का प्रकाशन अपनी सफलता की कहानी बताता है । सफलता की कामना करती हूं ।

अंजनी रस्तोगी
अरविन्द महिला विकास क्लब
मढ़ई चौक, बदायूं-243601 (उ०प्र०)

दुष्कर्म को बढ़ावा कौन दे रहा है ?

आजकल मीडिया में दुराचार व बलात्कार की ख़बरें भरी रहती हैं । अख़बारों के पहले पेज से आख़िरी पेज तक कोई न कोई दिलों को झकझोरने वाली दुष्कर्म की न्यूज़ पर ज़रूर नज़र पड़ती है । यदि गंभीरतापूर्वक विचार किया जाए तो महिलाओं के साथ की जा रही बर्बरता की घटनाओं का दोषी समाज, मीडिया, शासन-प्रशासन तथा पुलिस सभी हैं । इस पर समय रहते रोकथाम करने की व्यवस्था की जानी चाहिए, नहीं तो फिर वह दिन दूर नहीं कि पूरा समाज इस दलदल में फंस जाएगा ।

इंटरनेट वेबसाइटों, टी०वी० चैनलों तथा प्रिंट मीडिया के द्वारा नग्न सेक्स उभारने वाले सीन परोसे जा रहे हैं । जो न सिर्फ़ युवा पीढ़ी को बुराइयों के दलदल में ढकेल रहा है, बल्कि कमसिन बच्चों में भी सेक्स के प्रति जागरूकता समय से पहले पैदा कर रहा है ।

दिल्ली की दामिनी और गुड़िया का बर्बर दुष्कर्म कांड शायद देखने या सुनने में न मिलता, यदि वर्ष 2002 के

दौरान गुजरात में मुस्लिम औरतों के साथ सामूहिक खुलेआम बर्बरतापूर्वक दुराचार करने वाले दरिन्दों को सख़्त से सख़्त सज़ाएं दी गयी होतीं और इसके विरुद्ध आक्रोश की आवाज़ें उठायी गयी होतीं ।

नरेन्द्र मोदी, शिवराज सिंह तथा जार्ज फर्नांडीज़ ने शर्मसारी से सिर झुकाने के बजाय, इस वहशियाना करतूत को जायज़ क़रार दिया था । शायद याद होगा बानगी के तौर पर दिलों को झकझोर देने वाली घटना है कि कौसर बानो के साथ संघ परिवार के दंगाइयों ने सामूहिक बलात्कार करने के बाद उस गर्भवती महिला का पेट चीर दिया फिर बच्चादानी से बच्चा निकाल कर तलवार की नोकों पर नचा-नचा कर खुशियां मनाते रहे और शासन-प्रशासन मूक बना तमाशा देख रहा था । कहीं से इस घटना की निंदा की आवाज़ भी नहीं आयी ।

कहने को हम 21वीं सदी में पहुंच गये । विकास के हर क्षेत्र में उच्च सीमा से गुज़र रहे हैं । चन्द्रमा तथा मंगल पर सैर-सपाटे कर रहे हैं । किन्तु हमारी राजनीतिक तथा सामाजिक बुराइयां सभ्यता पूर्व के दौर को भी मात दे रही है । मंत्री से लेकर संतरी तक किसी न किसी कांड में लिप्त है । महिलाएं असुरक्षित हैं । लड़कियों को पैदा होने से पहले लिंग परीक्षण कराकर मारा जा रहा है । पूरा समाज नैतिक पतन के गढ़े में गिरता जा रहा है ।

प्रश्न यह है कि दुष्कर्म एवं बुराइयों को कैसे रोका जाए ? जिस पर शैक्षिक केन्द्रों के संचालक, समाज सुधारकों तथा बुद्धिजीवियों को सोचना होगा और उन्हें आगे आना होगा । कोई सामूहिक कार्ययोजना बनाकर संचालित करना होगा ।

एम० एच० ख़ां
कानपुर, उत्तर प्रदेश

सजीव चित्र

आपकी पत्रिका नियमित पढ़ रहा हूं । बहुआयामी और बहु उपयोगी लेखों से परिपूर्ण होती है । इस्लाम और इसके सामाजिक सरोकार पर आपके लेख ज्ञानवर्धक और उपयोगी होते हैं । आपके प्रयास की सराहना करता हूं ।

अप्रैल 2013 के अंक में "सूखी नदी का चिंतन" बहुत अच्छी और प्रभावी कविता लगी ।

कविता ने एक सजीव चित्र आंखों के आगे प्रस्तुत किया, साथ ही भविष्य के प्रति सचेत होने का महत्वपूर्ण संदेश भी मिलता है । अच्छी कविता के लिए आपको धन्यवाद और बधाई ।

डॉ० मंगल प्रसाद
संपादक, भाषा स्पंदन
कर्नाटक हिन्दी अकादमी
853, 8वां ब्लॉक कोरमंगला, बेंगलूर-560095

लोकतंत्र कहां है ?

जाने-माने विश्व प्रसिद्ध साहित्यकार तथा विचारक श्री विभूति नारायण राय (आज़मगढ़, उ०प्र० निवासी) उत्तर प्रदेश सरकार के शीर्ष पद पर पुलिस महानिदेशक रहे हैं । संपत्ति अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा (गुजरात) के सर्वोच्च पद पर हैं । शीतला सिंह आयोग ने साम्प्रदायिक दंगों के संबंध में जो रिपोर्ट उजागर की है, वह एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ है । श्री राय ने अपने उपन्यासों, कहानियों तथा लेखों में पुलिस महानिदेशक पद पर रहते हुए भी जो सच्चाई व्यक्त की है, उसका भी प्रकाशन 'कान्ति' पत्रिका में होना चाहिए कि दंगों में मुस्लिम भाई ही पीसे गये हैं, तो लोकतंत्र कहां है ?

डॉ० कृष्णमोहन सक्सेना
सी-627 II M.I.G, टिकैट राय योजना,
लखनऊ-226017

प्रेम का यह आधार

'कान्ति' नाम की पत्रिका, विद्वता की रेख
हिन्दू-मुस्लिम प्रेम का, यह आधार विशेष
है आधार विशेष, प्रतीक्षा करते पाठक
नवभारत निर्माण कर रही जैसे साधक
कह अम्बु कविराय, ज्ञान-गुरु पांती-पांती
कान्ति-पत्रिका घर-घर जाकर प्रेम बढ़ाती ।

अम्बु शर्मा
संपादक : नैणसी
डायमंड हार्बर, कोलकाता

विचारोत्तेजक

'कान्ति' का फ़रवरी अंक बहुत उत्तम रहा । आपके संपादकीय व अन्य भी एक-दो लेख पढ़कर विचारोत्तेजन हुआ अत: आपकी सेवा में संज्ञान पत्र भेज रहे हैं ।

डॉ० ज्ञानचन्द्र
6562/1, चमेलियान रोड,
दिल्ली-110006

अनाथ लड़कों की पुकार

VOICE OF ORPHAN BOYS

यतीमख़ाना इस्लामिया (गया)

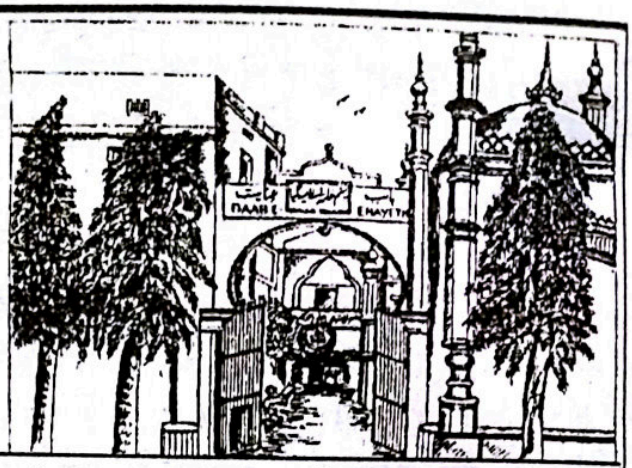

एक परिचय

● दीनी और असरी शिक्षा की अपनी तरह की जानी-मानी रिहाइशी पाठशाला ● 95 वर्षों की सेवाएं ● बहुत से विभाग ● शिक्षा के पड़ाव : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● हिफ़्ज़ का विभाग : हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक ● हर वर्ष बिहार स्कूल बोर्ड परीक्षा का 100 प्रतिशत रिज़ल्ट ● पत्राचार शिक्षा 2013-2014 के सत्र के लिए 11वीं, 12वीं और बी०ए० और लाइब्रेरी साइंस (BLIS) में प्रवेश जारी ● कंप्यूटर की भी शिक्षा ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक अनाथ छात्र पर वार्षिक ख़र्च 12000/- रुपये प्रति वर्ष ● कुल वार्षिक ख़र्च 16 लाख से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● 125 अनाथ बच्चे जिनका पूरा ख़र्च इदारा ही उठाता है ।

● जिस रूप में संभव हो मदद करके अल्लाह से बड़ा इनाम प्राप्त करें–उदाहरण के लिए ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● क़ुरबानी की खाल ● एक अनाथ बच्चे का वार्षिक ख़र्च ● अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम पर कमरा या हॉल बनवाना आदि ।

● याद रखें यहां हर वर्ष ऑडिट (Audit) भी कराया जाता है । आप खुद यतीमख़ाना इस्लामिया पहुंच कर बराबरी का व्यावहारिक नमूना अपनी आंखों से देखें कि किस प्रकार अनाथ और मां-बाप वाले बच्चे मिल-जुलकर रहा करते हैं ।

इनायत पोलिटेक्निक (ENAYETH POLYTECHNIC) की इमारत के निर्माण का काम ज़ोरो शोर से जारी है।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

नोट : यह इदारा विदेशी मुद्रा के क़ानून FCRA के तहत भी रजिस्टर्ड है ।

Forcign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

अब आप विदेश से BANK A/c No. 300402010000187

BANK CODE NO. UBININBBJAM,

UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

में अपनी रक़म भेज सकते हैं

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

चेक, ड्राफ़्ट, मनीऑर्डर या ख़त भेजने का पता

Hon. SECRETARY, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

At+P.o : CHERKI-824237, Distt : GAYA (BIHAR) INDIA

LOCAL DONARS मक़ामी चन्दा देने वाले

BANK A/C NO. : 10581, UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

CORE BANKIN G A/C NO. : 300402010010581, ☎ 0631-2734428 ● Mobile : 9955655960

E-mail : gmocde@yahoo.co.in, Website : www.gmogaya.com

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

अध्यक्ष : डॉ० फ़रासत हुसैन

एज़ाज़ी नाज़िम : डॉ० मुहम्मद एहतिशाम रसूल

इन्सान और उसकी समस्याएं

■ मौलाना जलालुद्दीन उमरी

जीवन की समस्याएं बहुत हैं । आजीविका की समस्या, कपड़े की समस्या, शिक्षा की समस्या, आवास की समस्या, समाज एवं संस्कृति की समस्या, युद्ध एवं संधि की समस्या, जान-माल और इज़्ज़त व आबरू की सुरक्षा की समस्या, कहने का तात्पर्य यह कि एक-दो नहीं अनगिनत समस्याओं ने इन्सान को घेर रखा है । इन समस्याओं का संबंध चाहे किसी एक व्यक्ति से हो या परिवार, समाज और राज्य से, हम इन सबको तीन शीर्षकों के अंतर्गत विभक्त कर सकते हैं : दृष्टिकोण, सामाजिक संबंध और क़ानून–ज़िन्दगी की ऐसी कोई समस्या नहीं है जो किसी न किसी रूप में इन शीर्षकों के अंतर्गत न आती हो ।

इन्सान की जितनी समस्याएं हैं, वे सब इस मूल से उत्पन्न होती हैं कि वह अपने बारे में क्या सोचता है और अपने चारों ओर फैली हुई इस विस्तृत दुनिया के संबंध में क्या दृष्टिकोण अपनाता है ? इससे इस ब्रह्माण्ड में उसकी हैसियत सुनिश्चित होती है, जिससे यह ज्ञात होता है कि उसकी सामाजिक व्यस्तता का रुख़ क्या होना चाहिए ? परन्तु व्यावहारिक जीवन में उसके सामने सबसे पहले दो प्रश्न आते हैं । एक यह कि जीवन की विभिन्न समस्याओं में वह अपने जैसे दूसरे इन्सानों के साथ किन बुनियादों पर संबंध बनाता है ? दूसरे यह कि वह किस क़ानून का पालन करता है ? अर्थात वह कौन-सी सत्ता है, जिसका वह विरोध नहीं कर सकता और जिसका फ़ैसला उसके लिए अंतिम फ़ैसले की हैसियत रखता है ?

दृष्टिकोण

इन्सान पैदा होते ही अपने आपको ऐसे वातावरण में पाता है जहां रात आती है और दिन जाता है, आसमान पर तारे झिलमिलाते हैं और डूब जाते हैं, ज़मीन लहलहाती और मुरझा जाती है, नदी-नाले और सरिताएं बहने लगती हैं और सूख जाती हैं, पेड़ों और खेतों में हरियाली आती और चली जाती है । यह परिवर्तन यूं ही नहीं गुज़र जाते, बल्कि इन्सान पर अपना प्रभाव डालते हैं । दिन निकलता है तो वह अपनी आजीविका के लिए संघर्ष करना शुरू करता है, रात उसके विश्राम का ज़रिया बनती है, ज़मीन की हरियाली से वह लाभ उठाता है और सूखा पड़ जाने से उसे हानि होती है । हवा और पानी उसे जीवन प्रदान करते हैं, परन्तु यही हवा और पानी आंधी और बाढ़ बनकर उससे जीवन छीन भी लेते हैं । ज़मीन की गोद में वह शरण लेता है परन्तु यही ज़मीन कभी उसे अपने ऊपर सहन करने से इन्कार भी कर देती है ।

इस प्रकार इन्सान के चारों ओर होने वाले परिवर्तन उसके लिए सुख का संदेश भी है और दुख का कारण भी । उसे राहत भी पहुंचाते हैं और तकलीफ़ भी, उनसे वह स्वास्थ्य-लाभ भी प्राप्त करता है और रोग से भी ग्रसित होता है । इसलिए वह इन परिवर्तनों का एक तमाशाई की हैसियत से अध्ययन नहीं कर सकता, बल्कि वह इनके बारे में सोचने को विवश है कि इन परिवर्तनों के पीछे कौन से कारक हैं और यह सब कुछ क्यों हो रहा है ?

कभी वह सोचता है कि न ज़मीन पर उसका आदेश चलता है न आसमान पर, उसकी मर्ज़ी का पाबंद न सूरज है न चांद, उसकी आज्ञा का पालन न पानी करता है न हवा । वह ऐसा प्राणी है जो इस ब्रह्माण्ड की अनगिनत शक्तियों के मुक़ाबले में बहुत ही निर्बल और बेबस है, जिन पर कोई ज़ोर और अधिकार नहीं रखता, वे चाहें तो उसे जीवित रखें चाहें तो मार दें, चाहें सेहत व तंदुरुस्ती दें चाहें दीन लें । जैसे ही यह एहसास उसके अन्दर पैदा हुआ दुनिया की हर वह चीज़ उसे डराने लगी जो किसी भी रूप में उसे लाभ या हानि पहुंचा सकती है । ज़मीन की उसने पूजा की, क्योंकि वह बहुत-से ख़ज़ानों की मालिक है । आसमान को देवता बना लिया, क्योंकि उससे नेमतों की वर्षा होती है, पहाड़ों के सामने उसका सिर झुक गया, इसलिए कि वह उससे ऊंचे हैं, समुद्रों से वह भयभीत हो गया, क्योंकि उसकी लहरें उसे विनष्ट कर सकती हैं । इस प्रकार हर

छोटी-बड़ी शक्ति ने उस पर शासन किया और उसने उसका अनुसरण स्वीकार कर लिया ।

कभी उसने सोचा कि जिन चीज़ों से वह सहमा हुआ है और जो उसे महान सत्ता एवं सामर्थ्य की मालिक नज़र आती हैं, वे भी बेबस और मजबूर हैं । सूरज हर समय उसे रोशनी क्यों नहीं पहुंचाता ? दमकते-चमकते चांद को ग्रहण क्यों लग जाता है ? सितारे डूब क्यों जाते हैं ? ज़मीन अपनी इच्छा से अन्न क्यों नहीं उपजाती ? पहाड़ क्यों एक विशेष विधान से बंधे हैं ? क्या यह इस बात का प्रमाण नहीं है कि इस ब्रह्माण्ड में कुछ अज्ञात शक्तियां काम कर रही हैं, जिनके आदेश से आग प्रकाशमान है, पानी जिनके इशारे से बरसता है और ज़मीन जिसकी अनुमति से अनाज पैदा करती है । सूखा और हरियाली, खुशहाली और बदहाली, तंदुरुस्ती और बीमारी, ग़रीबी और अमीरी, ज़िन्दगी और मौत, तात्पर्य यह कि हर प्रकार का कार्य वे शक्तियां यहां कर रही हैं ।

अब इन्सान को इसकी चिंता हुई कि वह इन शक्तियों को जाने और समझे जिन्हें वह देख तो नहीं रहा है, परन्तु जिनके प्रदर्शन को वह चारों ओर देख रहा है ।

परन्तु अनदेखी शक्तियों की यह कल्पना, इन्सान की स्वाभाविक जिज्ञासा को समाप्त न कर सकी । उसने सोचा जिन शक्तियों को मैं देख नहीं रहा हूं, उन्हें क्यों मानूं ? जब मुझे नहीं मालूम कि इस ब्रह्माण्ड में किसका शासन चल रहा है तो उसे क्यों स्वीकार करूं ? अतः उसने कहा इस ब्रह्माण्ड में कुछ विशेष कारकों के जमा हो जाने से विशेष प्रकार की कुछ घटनाएं घटती हैं । आग जलाती है, वर्षा से पौधों को हरियाली और बढ़ोतरी मिलती है, संखिया (एक प्रकार का तेज विष) से आदमी मरता और अमृत से सेहत पाता है । यह सब कुछ होता है परन्तु हम नहीं जानते क्यों ऐसा होता है ? हमें जो कुछ मालूम है वह यह कि हम एक ऐसे वातावरण में रहते हैं, जहां हमारे अनुकूल और प्रतिकूल शक्तियां तीव्रता से हर ओर काम कर रही हैं । इसलिए सोचने की बात यह है कि इन अनुकूल शक्तियों से कैसे लाभ उठाया जाए और प्रतिकूल शक्तियों से कैसे बचा जाए, न यह कि दुनिया क्या है ? इसे किसने पैदा किया ? कौन चला रहा है इसे ? हम कहां से आये हैं ? कहां जाएंगे ? हम पर किसका शासन है ? इस प्रकार के प्रत्येक प्रश्न निरर्थक हैं ।

इन्सान को अस्तित्व में आये एक अनुमान के अनुसार पांच लाख साल बीत चुके हैं । इस बीच उसने अनगिनत अनुभव प्राप्त किये, सभ्यता एवं संस्कृति में उन्नति की, नित नयी चीज़ों को आविष्कार किया, ज्ञान एवं कला की खोज की जिसके परिणामस्वरूप चिंतन-मनन के नवीन विषय उसके सामने आते रहे, परंतु इसके बावजूद उसने अपनी खोज और जिज्ञासा का प्रारंभ जिस बिन्दु से किया था आज भी वही है । उसके मस्तिष्क ने प्रथम दिन जिस आश्चर्य एवं विस्मय की स्थिति में यह प्रश्न छोड़ा था कि यह दुनिया क्या है और मैं क्या हूं, आज भी उसी आश्चर्य की स्थिति में यह ऐलान कर रहा है कि यह दुनिया क्या है और मैं क्या हूं और जब तक वह वास्तविकता से अवगत न हो जाए, यह सवाल उसके लिए रहस्य ही रहेगा ।

सामाजिक सम्बंध

मनुष्य स्वभावतः अकेलापन से घबराता है और बड़ी हद तक सामूहिक जीवन व्यतीत करने को विवश भी है, क्योंकि वह दूसरों के सहयोग के बिना अपने खाने, कपड़े और रहने-सहने की समस्याएं तक हल नहीं कर सकता । इसलिए वह हमेशा लोगों से संबंधों की रूपरेखा पर विचार करता रहा है । एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति का क्या संबंध है ? व्यक्ति और राज्य को जोड़ने वाले उसूल क्या हैं ? औरत और मर्द के संबंधों का सही तरीक़ा क्या है ? पड़ोसी और अजनबी, देशवासी और विदेशी लोगों के साथ किन बुनियादों पर संबंध हो ?

इस प्रकार के जितने प्रश्न उभरते हैं, उनके भिन्न-भिन्न और कभी-कभी विरोधाभासी जवाब उसने दिये हैं । परन्तु कतिपय बातों पर उसका मतैक्य भी रहा है । यह मतैक्य किसी वाह्य शिक्षा के परिणामस्वरूप नहीं बल्कि प्रकृति के दबाव और उसकी अपेक्षाओं के कारण हुआ है । उसकी प्रकृति ने उसे बताया कि न्याय एवं इन्साफ़, सच्चाई, अमानतदारी, वादा निभाना, क्षमा, दया, प्रेम, सहानुभूति, शुद्धता एवं पतिव्रता गुणों के द्वारा हर प्रकारर का संबंध अच्छा हो सकता है । इसलिए इन गुणों को सामाजिक संबंधों की बुनियाद होना चाहिए । अब तक का अनुभव भी इसका प्रमाण है कि जहां कहीं जिस अनुपात में ये गुण पाये गये उसी अनुपात में मानवीय संबंध भी अच्छे हुए । संबंध के इस प्राकृतिक सिद्धांत को नैतिकता का सिद्धांत भी कहा जाता है । दुनिया ने देखा कि जब कभी इसकी अवहेलना

हुई, संबंधों में बिगाड़ और तनाव पैदा हुआ । अत्याचार एवं ज़ोर-ज़बरदस्ती, झूठ, धोखा, विश्वासघात, बेवफ़ाई, अधिकारों का हनन और प्रतिशोध की भावना ने इन्सान को भेड़िया ही नहीं बना दिया बल्कि दूसरों से उसके संबंध पशुता की सीमा से भी नीचे आ गये ।

परन्तु इस सबके बावजूद प्रश्न नैतिक मूल्यों की पाबन्दी का है । यह प्रश्न इसलिए पैदा होता है कि प्रत्येक व्यक्ति के अपने हित एवं रुचि को केन्द्र दूसरे व्यक्ति से भिन्न होता है । इन्सान को अपने निज से जो दिलचस्पी होती है वह दूसरे से नहीं होती । वह अपने बाल-बच्चों एवं परिवार वालों से जितना प्रेम करता है, उतना प्रेम उन व्यक्तियों से नहीं करता जिनका संबंध उसके परिवार से नहीं होता । उसे अपने देश एवं राष्ट्र से जो लगाव होता है किसी दूसरे राष्ट्र से वह लगाव नहीं हो सकता । यदि इन्सान अपने इस पारस्परिक संबंधों में नैतिक मूल्यों का अनुसरण करता है, तो कभी-कभी उसके अपने हित पर चोट लगती है । कभी उसकी अपनी हानि होती है, कभी पारिवारिक संबंध को क्षति पहुंचती है, कभी देश एवं राष्ट्र के हितों पर आंच आती है । कभी-कभी ये क्षतियां अपनी अन्तिम सीमा को पहुंच जाती हैं । इन्सान आसानी से इन्हें सहन नहीं कर पाता और तुरंत उसके मस्तिष्क में प्रश्न उठता है कि क्या नैतिकता का महत्व इतना अधिक है कि हर स्थिति में उसका सम्मान आवश्यक है ? क्या सच्चाई पर उस समय भी क़ायम रहना चाहिए, जबकि तलवार सिर पर लटक रहा हो ? क्या शत्रु को धोखा देना भी कोई अपराध है ? क्या क्षमा और दरगुज़र हर हाल में प्रशंसनीय है या कभी प्रतिशोध भी वांछनीय है ? यहीं से यह बहस शुरू होती है कि नैतिकता किसे कहते हैं ? इसका उद्देश्य क्या है ? क्या नैतिक मूल्य अटल हैं या इनमें किसी प्रकार का परिवर्तन संभव है ?

कुछ चिंतकों ने इसके जवाब में स्पष्ट रूप से कह दिया और अधिकतर लोगों का व्यवहार एवं आचरण इसी बात का समर्थन करता है कि नैतिक मूल्यों की पाबन्दी हर समय ज़रूरी नहीं, बल्कि कभी-कभी इनके विपरीत आचरण करना ज़रूरी हो जाता है । किसी बाप का बेटे की हत्या करना नैतिक अपराध है, परन्तु बेटा यदि राष्ट्रद्रोही हो तो बाप का यह क़दम राष्ट्र के साथ उसकी वफ़ादारी का प्रमाण है । सच कहना नैतिक गुण है, परन्तु शत्रु को वस्तुस्थिति से अवगत कराना मूर्खता है । आतिथ्य-सत्कार एवं नम्रता अच्छे गुण हैं, परन्तु यदि इसके प्रकट करने से आदमी का अपमान एवं अपयश हो और उसके सम्मान को हानि पहुंचे, तो यही गुण अवांछनीय हैं ।

परन्तु यदि इस मान्यता को स्वीकार कर लिया जाए कि व्यक्तिगत एवं राष्ट्रीय हित के लिए नैतिक मूल्यों को नज़रअंदाज़ किया जा सकता है तो किसी भी व्यक्ति से यह अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वह इस पर अडिग रहेगा, क्योंकि हर व्यक्ति को अपना हित अधिक प्रिय एवं मूल्यवान होता है, चाहे दुनिया उसे कितना ही तुच्छ और मूल्यहीन ही क्यों न समझे । इसलिए यह फ़ैसला कठिन है कि अमुक लाभ को नैतिकता से उच्चतर होना चाहिए और अमुक को निम्नतर ।

इस दृष्टिकोण के विपरीत कुछ लोगों ने कहा कि नैतिकता को हर लाभ एवं हानि से ऊपर होना चाहिए । सच्चाई से विमुखता कभी सही नहीं है, चाहे उसके नतीजे में सिर, धड़ से अलग हो जाए और बड़ी से बड़ी क्षति ही क्यों न उठानी पड़े । न्याय एवं इन्साफ़ का दामन नहीं छोड़ा जा सकता, चाहे उसके घेरे में अपनी औलाद ही क्यों न आये । विश्वासघात हर हाल में अनुचित है, चाहे उससे राष्ट्र एवं देश को कितना ही बड़ा नुक़्सान क्यों न पहुंचे ।

लेकिन क्या इन्सान नैतिक मूल्यों के लिए हमेशा इतनी बड़ी क़ुरबानियां दे सकेगा ? क्या सत्ता एवं सामर्थ्य के होते हुए वह ज़ोर-ज़बरदस्ती एवं हिंसा से बाज़ रह पाएगा ? क्या निर्धनता और दरिद्रता की अवस्था में चोरी करने से वह बच पाएगा ? क्या कामेच्छा के वशीभूत होकर भी वह पवित्रता एवं अस्मिता पर क़ायम रह पाएगा ?

इसका जवाब यह दिया जाता है कि नैतिक मूल्यों का सम्मान चूंकि इन्सान का स्वभाव है, इसलिए इन मूल्यों की अवहेलना को उसकी अन्तरात्मा ने हमेशा अपराध ही समझा है । यदि नैतिक मूल्यों के विरुद्ध किसी ने कोई कार्य किया है, तो वाह्य-प्रभावों के दबाव से किया है । ये प्रभाव न हों तो वह नैतिक मूल्यों के लिए हर प्रकार की कठिनाई झेल सकता है । इसलिए हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि इन्सान की अन्तरात्मा जागे और उसका स्वभाव दूषित न होने पाये । फिर न तो कोई किसी की इज़्ज़त लूटेगा और न किसी के जान-माल पर क़ब्ज़ा करेगा और न धोखा, फ़रेब, दोषारोपण जैसे अनैतिक कृत्य में लिप्त हो सकेगा ।

क़ानून

इसमें संदेह नहीं कि इन्सान स्वभावत: भलाई पसन्द है, परंतु उसे विचार और कर्म की आज़ादी भी है, इसलिए बड़े से बड़ा अपराध भी उससे अनपेक्षित नहीं है । वह दूसरों को नुक़्सान पहुंचा सकता है, राष्ट्र के साथ ग़द्दारी कर सकता है, देश के हित के विरुद्ध संघर्ष कर सकता है, तात्पर्य यह कि हर ग़लत और नाजायज़ काम उसके लिए संभव है । इसीलिए क़ानून की ज़रूरत महसूस हुई । नैतिकता के द्वारा संबंधों को मधुर तो बनाया जा सकता है, परन्तु उन्हें क्षति से नहीं बचाया जा सकता । यह काम क़ानून का है । क़ानून के बिना मात्र नैतिकता के सहारे कोई सामूहिक जीवन उसी समय चल सकता है, जबकि इन्सान फ़रिश्ता बन जाए और उससे किसी अनैतिक कृत्य की संभावना शेष न रहे । परंतु स्वयं क़ानून के संबंध में प्रश्न पैदा होता है कि सही क़ानूनों और ग़लत क़ानूनों का ज्ञान कैसे हो ? कौन निश्चित करे कि मनुष्य का अमुक कर्म व्यक्ति और समाज के प्रति हानिकारक है और अमुक लाभदायक ? वह कौन-सी सीमा है जिसके अंतर्गत व्यापार, खेती, शिक्षा, संस्कृति, राजनीति और अभिव्यक्ति की आज़ादी मिलनी चाहिए ? और कहां यह सीमा समाप्त हो जाती है ?

इसके जवाब में अधिनायकतंत्र (राजतंत्र) ने कहा क़ानून बनाने का अधिकार उस व्यक्ति का है, जो राष्ट्र में सबसे बड़ा है जिसके हाथ में सत्ता एवं सामर्थ्य है, वही राष्ट्र की भलाई और बुराई को समझ सकता है । किसी दूसरे में न तो यह योग्यता होती है कि वह राष्ट्र के लाभ-हानि का निर्णय करे और न उसे इसका अधिकार ही प्राप्त है । इस व्यवस्था के सत्ताधारी का काम है आदेश देना और नागरिकों का काम है उसके आदेशों का पालन करना । यह अधिनायक-तंत्र का का उसूल है, इससे कम पर वह तैयार नहीं होता ।

अधिनायक-तंत्र या राज-तंत्र पर यह आपत्ति की गयी कि उसकी क्या ज़मानत है कि राष्ट्र का सबसे बड़ा व्यक्ति जो भी क़ानून बनाएगा वह सर्वथा राष्ट्र के लिए लाभदायक ही सिद्ध होगा ? क्या वह अपने व्यक्तिगत हित को दूसरों के हितों पर प्रधानता नहीं दे सकता ? क्या उससे यह अपेक्षित नहीं कि जन-भावनाओं को ठेस पहुंचा कर और न्याय एवं इन्साफ़ को छोड़कर अत्याचार का रास्ता अपना लेगा, विशेषकर तब जबकि वह सत्तासीन हो और उससे जवाबदेही करने वाली शक्ति मौजूद न हो ? यह मात्र आशंका ही नहीं बल्कि अधिनायक-तंत्र का संपूर्ण इतिहास इसका समर्थन करता है । इन्सानों ने सत्ता के नशे में भेड़ियों और दरिन्दों से भी ज़्यादा दरिन्दगी का प्रदर्शन किया है ।

अधिनायक-तंत्र के इन भयानक परिणामों से मुक्ति पाने के लिए यह उपाय किया गया कि क़ानून बनाने का अधिकार पूरी जनता को दे दिया गया कि वह अपने भाग्य का स्वयं ही मालिक हो और उसके भले-बुरे का फ़ैसला किसी एक व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर न हो ।

यहां यह प्रश्न पैदा होता है कि जनता अपने अधिकार का कैसे उपयोग करे, स्पष्ट है कि न तो यह संभव है कि जनता के संपूर्ण व्यक्ति मिलकर अपने लिए क़ानून बना सकें और न प्रत्येक व्यक्ति में उसकी योग्यता ही होती है । इसलिए यह तरीक़ा सुझाया गया कि जनता अपने प्रतिनिधि चुने, जो उसके लिए क़ानून बनाएं । इन प्रतिनिधियों का बनाया हुआ क़ानून मानो जनता का अपना क़ानून होगा, क्योंकि ये प्रतिनिधि उसके विश्वासपात्र और उसके विचारों के प्रवक्ता होते हैं । जब तक ये प्रतिनिधि जनता का प्रतिनिधित्व करेंगे और जब तक जनता का इन पर विश्वास रहेगा, वह उन्हें बाक़ी रखेगी और यदि वे उसकी मर्ज़ी और इच्छाओं को नज़रअंदाज़ करेंगे तो वे अपना विश्वास खो देंगे और जनता उन्हें हटा देगी ।

इस उद्देश्य के लिए जनता को हर चंद साल बाद मौक़ा दिया जाएगा कि वह अपने प्रतिनिधियों के संबंध में अपनी इच्छा प्रकट कर सके । यह क़ानून बनाने की लोकतांत्रिक परिकल्पना है ।

परन्तु लोकतंत्र पर उसी प्रकार की आपत्ति की जा सकती है जैसी अधिनायक-तंत्र या राज-तंत्र पर की जाती है । क्योंकि जनतंत्र के इस प्रस्तावित समाधान में भी संपूर्ण जनता के विचारों का प्रतिनिधित्व नहीं हो पाता, केवल एक छोटी-सी तादाद का प्रतिनिधित्व होता है । जनता का लगभग आधा भाग उन लोगों पर आधारित होता है जिनकी उम्र एवं योग्यता ही इतनी नहीं होती कि वे किसी मामले में अपनी राय दे सकें और जो उम्र के लिहाज़ से इस योग्य होते हैं कि अपने प्रतिनिधि चुनें उनमें भी एक बड़ी तादाद को इससे कोई दिलचस्पी नहीं होती कि क्या क़ानून बनेगा और कौन बनाएगा ?

राष्ट्रीय एकता का महत्व एवं इसे विकसित करने के उपाय

■ तरुण कुमार

सर्वप्रथम यह जानना आवश्यक प्रतीत होता है कि ''राष्ट्रीय एकता'' क्या है ? राष्ट्रीय एकता दो शब्दों से बना है, राष्ट्र (Nation) तथा एकता (Intogration) जिसे एकीकरण भी कहते हैं । राष्ट्र का अर्थ है विभिन्न प्रजातियों के व्यक्तियों का वह समूह, जिसका अपना निश्चित भूभाग होता है जिसके सदस्यों का सामूहिक इतिहास होता है । सामूहिक लक्ष्य होता है तथा विचारों, भावनाओं एवं भाषाओं में समानता होती है । दूसरा शब्द एकता (एकीकरण) है जिसका अर्थ होता है वह प्रक्रिया, जिसके द्वारा विभिन्न अंशों को एक पूर्ण में संकलित कर दिया जाता है । एक सामान्य अर्थ में राष्ट्रीय एकता का महत्व होता है । वह प्रक्रिया जिसके द्वारा किसी राष्ट्र के भिन्न-भिन्न अंशों को एक पूर्ण रूप से संकलित कर किया जाता है । जैसे भारत एक राष्ट्र है जहां विभिन्न धर्मों, विश्वासों, भाषाओं तथा जातियों के लोग रहते हैं, इस विभिन्नता के बावजूद यदि सभी लोग अपने आपको भारतीय राष्ट्र के सदस्य समझते हों, राष्ट्र के प्रति निष्ठा का भाव रखते हों, आपस में एकता का बोध हो तो इसे ही राष्ट्रीय एकता कहते हैं ।

''राष्ट्रीय एकता का मतलब किसी राष्ट्र के लोगों के ऐसे मानसिक परिवेश से है, जो उन्हें इस हद तक सहायता करता हो कि वे अपने क्षेत्र, भाषा, धर्म, जाति या सम्प्रदाय की विभिन्नता पर ध्यान दिये बिना ही आपस में एकत्व, अपने राष्ट्र के प्रति निष्ठा तथा एक सामान्य लक्ष्य के प्रति निश्चयात्मकता का भाव रख सकें ।''

राष्ट्रीय एकता का संबंध देश के प्रति निष्ठा के भाव से होता है । राष्ट्र के लोग अपने देश (राष्ट्र) के प्रति निष्ठा का भाव रखने लगते हैं । इस्लाम में भी एकता को सर्वश्रेष्ठ स्थान देते हुए जन्म भूमि से प्रेम रखने का आदेश दिया गया है । राष्ट्र के लोगों में एक सामूहिक लक्ष्य विकसित हो जाता है और वे उसको प्राप्त करने के लिए सामूहिक रूप से सक्रिय हो उठते हैं ।

राष्ट्रीय एकता का महत्व

राष्ट्रीय एकता का महत्व राष्ट्र के अस्तित्व के लिए बहुत ज़रूरी है । जब राष्ट्र के लोग संगठित रहते हैं तथा राष्ट्र को मज़बूत बनाने हेतु प्रयास करते हैं तब राष्ट्र का अस्तित्व सुरक्षित रहता है । इसके विपरीत जब राष्ट्रीय एकीकरण कमज़ोर हो जाता है, अर्थात जब देश के लोग आपस में जाति, वर्ग सम्प्रदाय या धर्म के नाम पर लड़ने तथा संघर्ष करने लगते हैं, तो राष्ट्र के अस्तित्व को ख़तरा उत्पन्न होता है । इससे हमारे राष्ट्र को नुक़्सान हो सकता है । वैसे हमारा देश भारत वर्ष राष्ट्रीय एकता के मामले में काफ़ी मज़बूत है

माल का लालच और ईमान दोनों किसी बन्दे के दिल में हरगिज़ जमा नहीं हो सकते ।
मद्रासी
मद्रासी होटल
मालवीय रोड
रायपुर (सी॰जी॰)
फोन : 0771-2539516,2236788
मद्रासी होटल
शॉप नं॰ 1-7
मोतीबाग़ चौपाटी, रायपुर
फोन : 0771-2533946, 5053603

जहां दुश्मनों की दाल नहीं गल सकती । राष्ट्रीय एकता का दूसरा महत्व है कि बाहरी आक्रमण का सामना करने के लिए यह सहायक सिद्ध होता है । जब देशवासी सभी क़ौमो-मिल्लत के लोग एक साथ मिलकर रहेंगे तथा प्यार तथा भाईचारे एवं सद्भावना को क़ायम रखेंगे तो बाहरी आक्रमण का हम डटकर मुक़ाबला कर सकते हैं तथा अपने देश को सुरक्षित रखने में सफल हो सकते हैं । राष्ट्रीय एकता का तीसरा महत्व है, आंतरिक शत्रुओं से निबटने के लिए तैयार रहना । राष्ट्रीय एकता का चौथा महत्व है, राष्ट्रीय आर्थिक तथा नैतिक विकास । इसका मतलब कि देश में इन सभी प्रकार के विकासों के लिए यह आवश्यक है कि देश के नागरिकों के बीच सद्भाव, प्यार, भाईचारा हो, एकता का बोध हो, राष्ट्र के प्रति निष्ठा का भाव हो । इसके रहने पर ही देश का बहुमुखी विकास संभव है । पांचां तत्व है– ''राष्ट्रीय चेतना'' राष्ट्रीय एकता की चर्चा करते हुए डॉ० के०एल० श्रीमाली ने कहा कि राष्ट्रीय चेतना को विकसित करने के लिए राष्ट्रीय एकता आवश्यक है । उन्होंने बताया कि शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना को विकसित किया जाना चाहिए, क्योंकि देश का बहुमुखी विकास सही अर्थों में राष्ट्रीय चेतना पर निर्भर करता है । इससे स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय एकता, व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में सहायक होता है ।

राष्ट्रीय एकता को विकसित करने के उपाय

उचित सामाजीकरण-राष्ट्रीय एकता को बढ़ाने का एक मौलिक उपाय यह है कि बच्चों के सामाजीकरण को अधिक से अधिक उचित तथा स्वस्थ बनाने का प्रयास किया जाए । माता-पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चों के भिन्न-भिन्न समूहों, वर्गों तथा सम्प्रदायों के प्रति अनुकूल एक सामूहिक दृष्टिकोण विकसित करने का प्रयास करें । बच्चों में सकारात्मक मनोवृत्ति उत्पन्न करें तथा राष्ट्र के प्रति निष्ठा का भाव जागृत करें जिसमें राष्ट्रीय एकता मज़बूत होगी ।

उचित शिक्षा-राष्ट्र एकता के उन्नति बनाने में शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण है । शिक्षा तंत्र या शिक्षा व्यवस्था को उचित होने पर राष्ट्रीय एकता निश्चित रूप से सबल बन सकता है । डॉ० राधाकृष्णन ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि राष्ट्रीय एकता को बनाने में शिक्षा की भूमिका काफ़ी महत्वपूर्ण है । इसके लिए ज़रूरी है कि–उपयुक्त पाठ्यक्रम, सामाजिक अध्ययनों पर बल, उचित पाठ्य-पुस्तकें, भाषा, राष्ट्रीय गान, राष्ट्रीय दिवस का उत्सव, प्रभावशाली राष्ट्रीय नीति, आर्थिक संपन्नता, स्वस्थ राजनीति और धार्मिक विश्वासों के साथ समझौता करने का वातावरण विकसित किया जाए ।

संक्षेप में, इन सब बातों से स्पष्ट होता है कि भारत वर्ष के सभी धर्मों, भाषाओं एवं सम्प्रदायों के मानने वाले, जब आपस में मिल-जुलकर रहेंगे तो देश की एकता मज़बूत होगी । कोई दुश्मन हमारी ओर आंख उठाकर बुरी नज़र से नहीं देख सकता । इसके लिए हम हिन्दू-मुस्लिम, सभी प्यार, भाईचारे, सद्भावना, स्नेह को क़ायम रखेंगे ।

इससे हमारा देश का चहुंमुखी विकास होगा । हम देश को और अधिक सबल एवं मज़बूत बनाने में सफल होंगे । इस संबंध में डॉ० मुहम्मद इक़बाल के एक महत्वपूर्ण शेर से इस तथ्य को और अधिक स्पष्ट करना चाहूंगा–

''सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्तां हमारा
हम बुलबुले हैं, इसकी यह गुलसितां हमारा,
मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना,
हिन्दी हैं, हम वतन हैं, हिन्दोस्तां हमारा ।''

मुनअम पब्लिक स्कूल

(सी०बी०एस०ई०, दिल्ली से सम्बद्धता प्राप्त, 10+2, इंग्लिश मिडियम विद्यालय)
महाराजगंज, पो० दादपुर, जिला हजारीबाग, झारखण्ड।

नामांकण सुचना

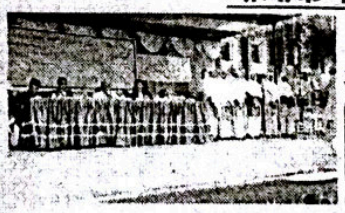

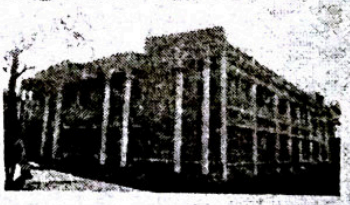

हजारीबाग के प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपुर पहाडी क्षेत्र में स्थापित, विशाल कैम्पस में फैला एक अति-आधूनिक शैक्षणिक संस्था जहां छात्र-छात्राओं के लिए माडर्न स्कूल की तमाम सुविधाएं उपलब्ध हैं।

सफलता का सत्रहवां साल - मुस्लिम लडकीयों के लिए नायाब तोहफा

लडकीयों के लिए 100 बेड का शानदार होस्टल

सत्र 2013-2014 के लिए छात्रावास में रह कर शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक छात्र-छात्राएं 150/- रू० अदा कर के फार्म एंव प्रास्पेक्टस स्कूल काउंटर से प्राप्त करें या 175/- रू० का ड्राफ्ट भेज कर डाक से भी प्राप्त किया जा सकता है। विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें -

मो० 09431530878, Website : munammission.org
E-mail-munam_school2000edu@yahoo.com

एस०एम० नईम
डायरेक्टर
एम०ए०, बी०एड

वकील अहमद
प्रिन्सिपल
बी०एस०सी०, बी०एड

आत्मचिन्तन का पल

■ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

आज हिंदी पत्रकारिता दिवस है । 187 वर्ष पहले 30 मई 1826 को पंडित जुगल किशोर सुकुल ने हिंदी का पहला समाचारपत्र ''उदंत मार्तड'' का प्रकाशन शुरू किया था । यह साप्ताहिक पत्र था, लेकिन अर्थाभाव के चलते इसके मात्र 79 अंक ही निकल पाये थे । पहले की मिशनरी पत्रकारिता आज उद्योग बन चुकी है । इसके पास धन तो आ गया है, परन्तु आत्मा रुख़सत हो चुकी है । नैतिक स्तर अधोगति को प्राप्त हो चुका है । पत्रकार और पत्रकारिता दोनों अनैतिकता के वाहक बने हुए हैं । पत्र-पत्रिकाओं की अश्लीलता कोई छिपी चीज़ नहीं ।

अश्लील विज्ञापनों ने नारी का भारी मान-मर्दन किया है और कर रहे हैं । दूसरी ओर अख़बारों के धंधेबाज़ हर अनैतिक धंधे/कृत्य का विज्ञापन छापकर एडमंड बर्क की चतुर्थ सत्ता को रसातल में ले जा रहे हैं । धन कमाने की ऐसी होड़ लगी हुई है कि 'पेड न्यूज़' जैसा खुला भ्रष्टाचार सामने है ! आज न कोई मर्यादा है और न ही कोई आदर्श ...मिशन तो कब का फुर्र हो गया । बस धन आये...चाहे जो करना पड़े, सब ठीक !! पत्रकारों की यह स्थिति एक दिन में ही नहीं बन गयी, अपितु भौतिकवाद ने धीरे-धीरे उन्हें सभी मूल्यों से हटा दिया ।

स्थितियां कितनी ही जटिल क्यों न हों, नैतिकता को खोना सचमुच बहुत चिंताजनक है । धनाभाव के कारण कोई सभ्य जीव भला अपनी नैतिकता क्यों खोएगा ? क्या हमारे पूर्वज धनवान थे ? क्या उनका जीवन अर्थहीनता का शिकार न था ? आने-पाई के हिसाब वाली उनकी डायरियां देखिए...उनके जीवन वृत्तांत पढ़िये...क्या उनके सामने कम कठिनाइयां और चुनौतियां थीं ?

इतिहास गवाह है कि संपादकाचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की आर्थिक दशा इतनी चिंतनीय हो गयी थी कि आपने दो चलताऊ पुस्तकें लिखीं, लेकिन अंत में इसकी कमाई को हराम समझकर अपनी नैतिकता और मर्यादा पर अडिग रहते हुए पुस्तक को न प्रकाशित करवाने का फ़ैसला किया । क्या हिंदी पत्रकारिता दिवस पर हम अपने खोखलेपन को दूर करने का कुछ संकल्प करेंगे या इस दिवस को परम्परागत ढंग से यूं ही रस्मी अंदाज़ से मनाकर 'इति श्री' कर लेंगे ??? (30 मई 2013 का पोस्ट)

मेरे मालिक ने यह एहसान किया

मेरे मालिक ने मेरे हक़ में यह एहसान किया
खाके नाचीज़ था मैं सो मुझे इन्सान किया ।
आदमी से मलक को क्या निस्बत
शान अरफा है 'मीर' इन्सां की ।

लेकिन क्या हो गया है इंसानों को जो ख़ुद इंसानों के ख़ून के प्यासे हैं.....चाहे नक्सली हों या अन्य हिंसाचारी, आख़िर ये सब इंसानियत के दायरे में कैसे आ सकते हैं ? क्या हिंसक अपनी मांगों पर बल देने के लिए अहिंसक रास्ता नहीं अपना सकते ?

ज़माना गवाह है कि बेक़सूरों के प्रति हिंसाचार का परिणाम बड़ा दुखदाई होता है । इससे प्राप्ति अनर्थकारी और अकल्याणकारी ही होती है.....बुद्ध पूर्णिमा (25 मई 2013) के सुअवसर पर ऐसा नरसंहार सर्वथा निंदनीय और विक्षोभकारी भी है....अहिंसा के महान प्रवर्तक, प्राणी-हिंसा के सख़्त विरोधी बुद्ध जी की शिक्षाओं के विपरीत माओ की हिंसा-शिक्षा को प्रश्रय क्यों ? (25 मई 2013 को पोस्ट)

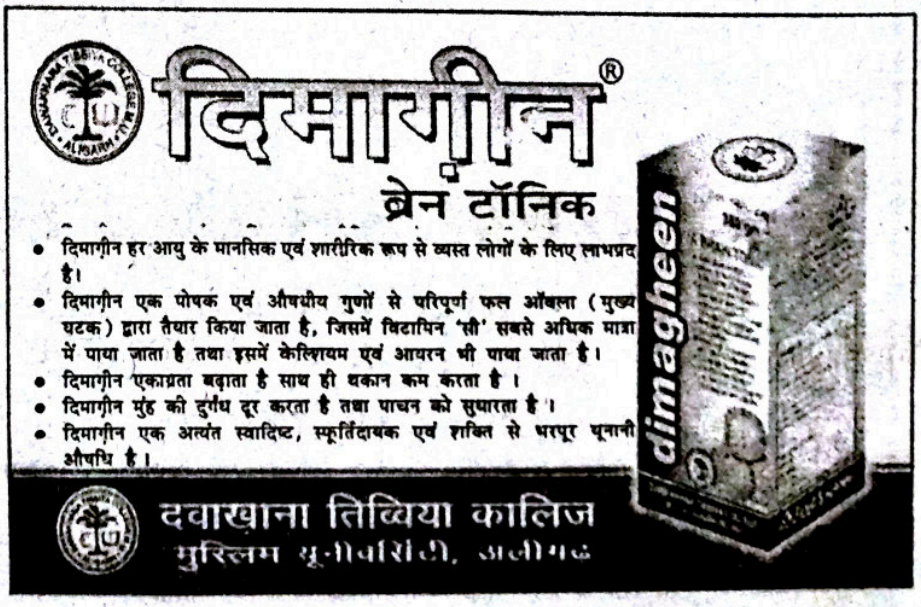

WANTED PRINCIPAL

Qualification:

Master Degree + B. Ed. / M. Ed.

Work Experience:

At least 5 years' teaching experience in any reputed school with ICSE Curriculum.

Salary Offered:

Rs. 30,000 to 35,000/-
+ Accommodation

Send Resume with full details to

NEW SHAMS SCHOOL

Syed Ali Campus, P O. BOX 20,
Jamia Abad Road, BHATKAL – 581 320
Email: shamsschoolbkl@gmail.com
Website: www.shamsschoolbkl.org

(Also required experienced teachers: Male/Female)

आस्तिक-नास्तिक बनाम आम आदमी

■ आर० एस० गिरि
(अपहर, सारण, बिहार)

वह एक आम आदमी है जो नहीं जानता है आस्तिक और नास्तिक का भेद । वह चाहता है कोई समझा दे उसे इसका गूढ़ रहस्य । क्योंकि आस्तिक और नास्तिक का अंतर्द्वंद्व कभी भी समाप्त नहीं होने वाली अंतहीन कहानी यानी इवर लास्टिंग स्टोरी है । वह दोनों में अन्तर जानना चाहता है । दोनों के व्यावहारिक पक्ष को समझना चाहता है । बिना समझे वह किसी एक का पक्षधर नहीं हो सकता है । उनकी पहचान कैसे हो ? वह इतना तो जानता है कि जो इश्वर को मानता है वह आस्तिक और जो ईश्वर को नहीं मानता है वह नास्तिक कहलाता है । ये दोनों का विषय वस्तु तो एक ही है 'ईश्वर' । इसी के इर्द-गिर्द दोनों घूमते हैं । यदि नास्तिक नहीं हों तो आस्तिक का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा । उसी तरह आस्तिक नहीं हों तो नास्तिक का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा । दोनों का जन्म एक साथ होता है जैसे जीवन और मृत्यु, लंबा और नाटा, बड़ा और छोटा, सत्य और असत्य आदि ।

वह जानना चाहता है, आस्तिक क्या करता है नास्तिक क्या करता है ? क्योंकि इनके अपने तर्क हैं, इनके साहित्य एवं दर्शन है । इन्हीं दर्शनों के द्वारा वे आम आदमी को अपनाते हैं । लेकिन उनके सिद्धांत और व्यवहार की परख आम आदमी की जानकारी से दूर है । दोनों ने कहा सदा सत्य बोलो, ईमानदारी सबसे अच्छी नीति है, चोरी मत करो, असहायों की मदद करो आदि ।

आम आदमी इनके व्यावहारिक पक्ष को देखना चाहता है, 'सदा सत्य बोलो' कहने वाले क्या सच बोलते हैं ? क्या उन्होंने कभी कटु और बेबाक सत्य को बोलकर देखा है ? सत्य बोलने का उपदेश तो दोनों ने दिया है । क्या आपने कभी यह कहा है कि सदा सत्य सुनो ? क्या किसी प्रवचन या तक़रीर में सत्य सुनने के लिए कहा जाता है ? जब सत्य सुनने का उपदेश ही नहीं दिया जाता तो कोई कैसे सत्य बोलेगा और सत्य सुनने की हिम्मत करेगा ? क्या हज़ारों वर्षों का प्रवचन और तक़रीर सुनना व्यर्थ हो गया ?

भूतकाल के मनिषियों की वाणी सुनाना भर ही उपदेशकों का काम है या उनके उपदेशों को व्यवहार में लागू करने का कोई मार्ग प्रशस्त करना भी उनकी ज़िम्मेदारी है जिससे उसे व्यावहारिक रूप भी दिया जा सके ? आम आदमी निवेदन करता है, कोई बतला दे उसे कि जो तक़रीर सत्य बोलने हेतु की गयी किसी ने नहीं सीखा लेकिन असत्य बोलना सबने सीख लिया । झूठ बोलने के लिए लोग किसकी तक़रीर सुनने गये, किस विद्यालय में इसकी शिक्षा दी गयी, इनके ग्रंथ कौन हैं, इनका दर्शन क्या है ? क्या झूठ बोलने वाले को आस्तिक या नास्तिक में बांटा जा सकता है ? अपने सीने पर हाथ रखकर दोनों पक्ष अपने आप से पूछ तो लो क्या आप सच बोलते हैं और सत्य बोलने की हिम्मत रखते हैं ? आपके भीतर से एक आवाज़ आएगी उसी को साक्षी मान लें, निर्णय हो जाएगा ।

दोनों पक्ष ईमानदारी को सर्वोत्तम नीति मानते हैं लेकिन ईमानदारी पर कैसे चला जाए कोई रास्ता सुझाया है । इस वर्तमान परिवेश में ईमानदारी से जिया जा सकता है ? जो ज्ञान आस्तिकों एवं नास्तिकों ने समान रूप से दिया, उसे किसी ने नहीं माना । चारों तरफ़ बेईमानी की फ़ौज खड़ी हो गयी है । क्या आस्तिकों और नास्तिकों की सत्ता के बराबर और सबल सत्ता भी है जो अपना प्रभाव विस्तार कर रहा है ? क्या आज मात्रवत् परदारेषु, पर द्रव्येषुलोष्ठवत् लागू हो सकेगा । आम आदमी ने सुना है द्यानादधर्मम् । धन से ही धर्म होगा । धन की कोई सीमा रेखा तय नहीं है । बड़े-बड़े धार्मिक आयोजनों की व्यवस्था वे ही करने वाले हैं जो अपार धन के स्वामी हैं । आम आदमी फटेहाली का जीवन जीने को बाध्य हैं । संपत्तिशाली के लिए दीन-हीन कंगाल यतीमों का एक वर्ग चाहिए जिनको दान, ज़कात व ख़ैरात बांटकर अपने को पुण्यवान कहलवा सके ।

कितना धन चाहिए ? "गीता दर्शन में कृष्ण का वचन है कि जीवन को चलाने के लिए जितने धन की ज़रूरत हो उतने के ही अधिकारी हो इससे अधिक की जो कामना

करता है वह चोर है उसको दंड देना चाहिए ।'' स: स्तेन दण्डमऽर्हति । धन की लिप्सा में डूबा दुर्योधन तुम्हें पांच गांव नहीं देकर सारे धन पर कुंडली मारकर बैठ गया है उसे दंड दो । अत: उठो, युद्ध करो । युद्ध अनिवार्य है ।

आज के युग में तो भ्रष्टाचार इस तरह उज़ागर हो रहा है कि इसे यदि भ्रष्टाचार युग कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी । क्या इस होड़ में आस्तिक शामिल है कि नास्तिक । आम आदमी देखना चाहता है इस रेस में किसका घोड़ा सबसे आगे जाएगा । इन घोटालेबाज़ों की शिक्षा किस विद्यालय, महाविद्यालय एवं धर्मग्रंथों से मिली । इनके मास्टर माइंड कौन हैं ।

आम आदमी जानना चाहता है क्या भ्रष्टाचार का भी अंत होगा ? क्योंकि उसने सुना है माल्यस नाम का एक पादरी इंग्लैंड में हुआ था । जिसने जनसंख्या का सिद्धांत दिया था । उसने कहा–जीवन को चलाने और पालने वाले साधनों का विकास अंकगणितीय प्रणाली 1,2,3,4,5,6,7 की दर से होता है । इन साधनों के उपभोग के लिए जनसंख्या का विकास ज्योमेट्रिकल प्रणाली के अनुसार 1×2×2×2× 2×2×2 होता है । जब तक जीवनयापन के साधन 7 गुना होते हैं उनको लेने वाले 64 गुना हो जाते हैं । माल्यस इससे आगे नहीं जा सके। समय के साथ उन्होंने यह तो कह दिया, 'पृथ्वी पर भाड़ बढ़ता है तो अकाल, बाढ़, आंधी, युद्ध आदि प्राकृतिक प्रकोप होते हैं जिसके बाद उतने ही लोग बच जाते हैं जितना बोझ प्रकृति उठा सकती है ।' जीवन-यापन के साधनों को लूट लेने की एक होड़ चलती है । बड़ी मछली छोटी मछली को खाने लगती है और भ्रष्टाचार का राक्षस जो हज़ारों सिर वाला है पैदा हो जाता है जिसका ज़िव माल्थस ने नहीं किया । लेकिन लूट और भ्रष्टाचार की रफ़्तार 1×4 की होती है । जब तक जनसंख्या 64 गुनी होगी भ्रष्टाचार 64×4 गुणा बढ़ता जाएगा । इस राक्षस को मार देने का उपाय धर्मग्रंथों में तलाश करना चाहिए । क्या किसी आस्तिक ने इसे मारने का उपाय सुझाया है ? आम आदमी मुंह बाये खड़ा है वह किंकर्तव्यविमुढ़ है । कौन देगा प्रकाश आस्तिक या नास्तिक ?

आम आदमी ने देखा वहां मस्जिद तोड़ दी गयी है तोड़ने वाले शौर्य-जुलूस रिकाले हैं, कहीं मंदिर तोड़ा गया है, तो कहीं बुद्ध की मूर्ति चूड़-चूड़ कर दी गयी है । तोड़ने वाले अट्टाहास कर रहे हैं । आम आदमी जानना चाहता है ये लोग आस्तिक हैं या नास्तिक ?

अपने घर को
इस्लाम के प्रकाश से रोशन कीजिए
स्वयं पढ़िए, अपने प्रियजनों, संबंधियों और अन्य लोगों को भी पढ़ाइए

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कान्ति
www.kanti.in
सहयोग राशि वार्षिक : Rs. 220/-
आजीवन : Rs. 5,000/-

ماہنامہ دعوت نئی دہلی
www.dawatonline.com
सहयोग राशि वार्षिक : Rs. 600/-
आजीवन : Rs. 10,000/-

कान्ति
स्वस्थ चेतना का वाहक हिन्दी साप्ताहिक अखबार
सहयोग राशि वार्षिक : Rs. 250/-
आजीवन : Rs. 5,000/-

सहयोग राशि
वार्षिक
स्वदेश में
: Rs. 220/-
विदेशों में
30 अमेरिकी
डॉलर
आजीवन
: Rs. 5,000/-

ماہنامہ زندگی نو نئی دہلی
www.zindgienau.com

मांगे जाने पर नमूने की प्रति निशुल्क भेजी जाएगी।

MANAGER, DAWAT TRUST,
D-314, DAWAT NAGAR, ABUL FAZL ENCLAVE,
JAMIA NAGAR, NEW DELHI-110025,
TEL.: Dawat: 09818799113, Kanti: 09818799223,
E-mail: dawattrust@yahoo.co.in

हमारी कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें

इस्लाम एक सामान्य परिचय	–शैख़ अली तंतावी	90.00
इस्लाम एक स्वयंसिद्ध ईश्वरीय जीवन व्यवस्था	–राजेन्द्र नारायण लाल	25.00
प्यारे नबी की पाक ज़िन्दगी	–एजाज़ुल हक़ क़ुद्दूसी	30.00
इतिहास के साथ यह अन्याय	–बी॰ एन॰ पाण्डे	7.00
मेरे दावती तजुर्बात (प्रथम)	–नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	25.00
ग़लत फ़हमियों का निवारण	–डॉ॰ ज़ाकिर नाइक	25.00
क़ुरआन और हम मुसलमान	–नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	15.00
क़ुरआन का पैग़ाम	–ख़ुर्रम मुराद	10.00
क़ुरआन पर अनुचित आक्षेप	–नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	15.00
हमें ख़ुदा कैसे मिला?	–अब्दुल ग़नी फ़ारूक़	100.00
इस्लाम आतंक या आदर्श?	–स्वामी लक्ष्मी शंकराचार्य	40.00
इस्लाम और इनसान (1-6)	–डॉ॰ सैयद शाहिद अली	84.00
दलित समस्या जड़ में कौन?	–इन्तिज़ार नईम	140.00
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) और भारतीय धर्म-ग्रंथ	–डॉ॰ एम॰ ए॰ श्रीवास्तव	18.00
इस्लामी सभ्यता	–मुंशी प्रेम चन्द्र	5.00
क़ुरआन पुकारता है "ऐ लोगो..."	–मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी	12.00
आधुनिक नारी	–नुज़हत यासमीन	10.00
इस्लाम एक मात्र रास्ता	–मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी	12.00
शैतानी धोखे के विभिन्न रूप	–डॉ॰ सैयद शाहिद अली	40.00

हमारी सभी पुस्तकें मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स से भी प्राप्त की जा सकती हैं।

MADHUR SANDESH SANGAM

E-20, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025

E-mail : madhursandeshsangam@yahoo.co.in, Ph. : 9212356332

रमज़ान के रोज़ों की महत्ता

■ ख़ुर्रम मुराद

रमज़ान के महीने में 'शबे क़द्र' वह बहुमूल्य रात है जिसमें हज़ारों महीनों से बढ़कर बरकत और भलाई है । यह वह मुबारक रात है जिसमें हमारे पालनहार ने अपनी सबसे बड़ी रहमत हमारे ऊपर उतारी–"हमने इसे (क़ुरआन को) बरकत वाली रात में उतारा ।" (क़ुरआन, 443) यह किताब अर्थात क़ुरआन पालनहार की ओर से रहमत ही रहमत है ।

सच पूछिए तो इस महीने का हर दिन और हर रात मुबारक है । दिन निकलता है तो अनगिनत बन्दों को यह सौभाग्य प्राप्त होता है कि वह अपने मालिक की आज्ञापालन और उसे राज़ी करने के लिए अपने शरीर की उचित और अनिवार्य मांगों को त्याग कर इस बात की गवाही दें कि केवल अल्लाह ही को राज़ी करना उसका उद्देश्य है । उसकी आज्ञापालन ही जीवन की वास्तविक भूख और प्यास है । फिर जब रात का अंधेरा छा जाता है तो अनगिनत बन्दे अल्लाह को सामने मानकर खड़े हो जाते हैं और अल्लाह के कलाम को अपने दिलों में उतारते हैं । उनके दिल शीशे के चिराग़ों की तरह जगमगा उठते हैं, ठीक उसी तरह जैसे आकाश पर तारे ।

"उसके प्रकाश की मिसाल ऐसी है जैसे एक ताक़ में चिराग़ रखा हुआ है, चिराग़ एक फ़ानूस में हो फ़ानूस का हाल यह हो कि जैसे मोती की तरह चमकता हुआ तारा । ...ऐसे लोग जिन्हें व्यापार और क्रय-विक्रय अल्लाह की याद से और नमाज़ क़ायम करने से और ज़कात देने से ग़ाफ़िल नहीं करता ।" (क़ुरआन, 24:35-37)

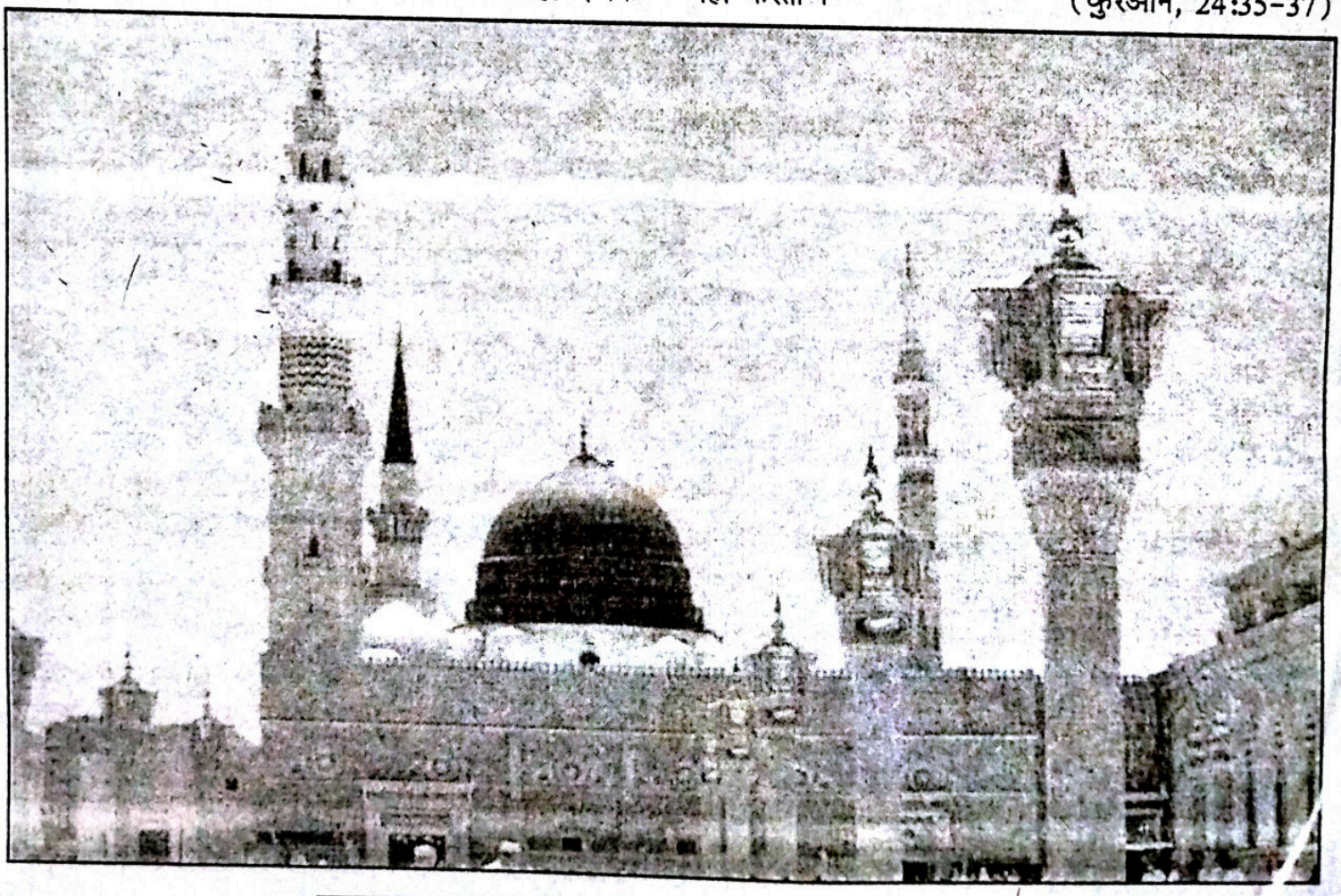

ईशपरायणता ही अभीष्ट

रमज़ान के महीने की हर घड़ी में इतनी बरकत है कि नफ़्ल अर्थात भलाई के ऐच्छिक काम फ़र्ज़ भलाई के अनिवार्य कामों की श्रेणी को पहुंच जाते हैं औरफ़र्ज़ों का बदला 70 गुना अधिक बढ़ जाता है । रमज़ान आता है तो आसमान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और रहमतों की वर्षा होती है । जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और नेकी के रास्तों पर चलने की सहूलत आम हो जाती है । जहन्नम (नरक) के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और रोज़ा बुराई के रास्तों की रुकावट बन जाता है । शैतानों को ज़ंजीरों में जकड़ दिया जाता है और बुराई फैलाने का अवसर कम से कम हो जाता है । (हदीस)

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने उस व्यक्ति के शुभ सूचना दी है जो रमज़ान में रोज़े रखे उसके अगले-पिछले सारे गुनाह माफ़ कर दिये जाएंगे । उसके भी गुनाह माफ़ कर दिये जाएंगे जो रातों को नमाज़ के लिए खड़ा होता है । शर्त यह है कि वह अपने पालनहार की बातों और उसके वादों को सच्चा जाने और उसके साथ किये गये अपने वादे को अच्छी तरह निभाये और आत्मनिरीक्षण की कभी अनदेखी न करें ।

रोज़ेदार का हिस्सा : यह महीना निस्संदेह बहुत बरकत वाला और बहुत महान है, लेकिन ऐसा भी नहीं कि उसकी रहमतें और बरकतें हर उस व्यक्ति के हिस्से में आ जाए जो इस महीने को पाले । जब वर्षा होती है तो विभिन्न नदी-नाले और तालाब अपनी क्षमता और अपनी गहराई के अनुसार ही उसके पानी से लाभांवित होते हैं । भूमि के विभिन्न टुकड़े भी अपनी सामर्थ्य के अनुसार ही फ़सल देते

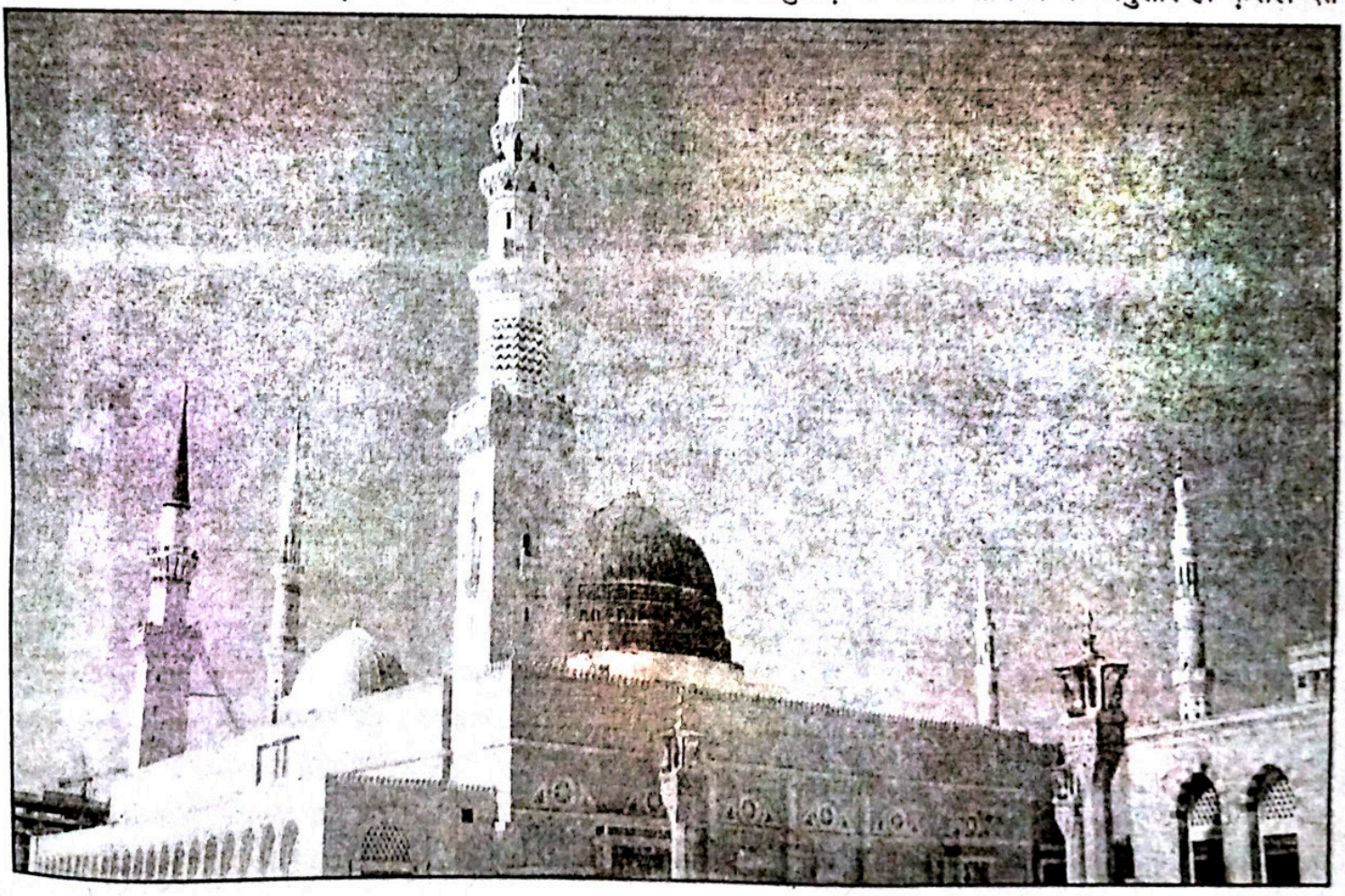

हैं । वर्षा सब पर समान होती है मगर एक छोटे से गढ़े में उतना अधिक पानी नहीं भर पाता जितना एक बड़े तालाब में भर जाता है । इसी प्रकार जब पानी किसी चट्टान या बंजर ज़मीन पर गिरता है तो उसके ऊपर ही बह जाता है और उसे लाभ नहीं पहुंचता, लेकिन अगर भूमि उपजाऊ हो तो वह लहलहा उठती है । यही हाल मनुष्यों के स्वभाव और उनके भाग्य का है ।

रमज़ानुल मुबारक के इन ख़ज़ानों में से आपको क्या कुछ मिलेगा ? भूमि की तरह आपके दिल नर्म और आंखें गीली होंगी । आप ईमान का बीज अपने भीतर डालेंगे और अपनी क्षमता एवं सामर्थ्य की सुरक्षा करेंगे तो बीज पौधा बनेगा और पौधा वृक्ष । वृक्ष भलाई के कामों के फल, फूल और पत्तियों से लहलहा उठेंगे और आप सदा रहने वाली बादशाहत की फ़सल काटेंगे । किसान की तरह आप मेहनत और कोशिश करेंगे तो जन्नत के इनामों की फ़सल तैयार होगी और जितनी मेहनत करेंगे उतनी ही अच्छी फ़सल तैयार होगी। दूसरी ओर दिल चट्टान की तरह कठोर होंगे और आप मेहनत करने के बजाय पड़े सोते रहेंगे तो रोज़ों, तरावीह और रहमत का सारा पानी बह जाएगा और आपके हाथ कुछ भी नहीं आएगा । ईशकृपा के बिना कुछ भी नहीं मिलता यह सच है, लेकिन यह ईशकृपा भी उसी पर है जो कोशिश और मेहनत करे । अल्लाह कहता है कि आप उसकी ओर एक बालिश्त बढ़ेंगे तो वह आपकी ओर दो बालिश्त बढ़ेगा । आप उसकी ओर चलना शुरू करेंगे तो वह आपकी ओर दोड़ता हुआ आएगा । लेकिन आप खड़े रहेंगे, पीठ फेर कर लापरवाही के साथ तो फिर आपके पास ईशकृपा कैसे आएगी ?

रमज़ान के महीने की हर घड़ी में इतनी बरकत है कि नफ़्ल अर्थात भलाई के ऐच्छिक काम फ़र्ज़ भलाई के अनिवार्य कामों की श्रेणी को पहुंच जाते हैं औरफ़र्ज़ों का बदला 70 गुना अधिक बढ़ जाता है । रमज़ान आता है तो आसमान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और रहमतों की वर्षा होती है । जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और नेकी के रास्तों पर चलने की सहूलत आम हो जाती है । जहन्नम (नरक) के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और रोज़ा बुराई के रास्तों की रुकावट बन जाता है । शैतानों को ज़ंजीरों में जकड़ दिया जाता है और बुराई फैलाने का अवसर कम से कम हो जाता है ।

(हदीस)

ऐसा न कीजिए कि रमज़ान का पूरा महीना गुज़र जाए, रहमतों और बरकतों के डोल के डोल उंडेले जाते रहें और आप इतने अभाग्यशाली हों कि आपकी झोली ख़ाली रह जाए । कुछ करने के लिए और अपने हिस्से की रहमतें समेटने के लिए तैयारी कर लीजिए और नबी (सल्ल०) की इस चेतावनी को अच्छी तरह याद रखिए–

"कितने रोज़ेदार हैं, जिनको अपने रोज़ों से भूख-प्यास के सिवा कुछ नहीं मिलता, और कितने रातों को नमाज़ पढ़ने वाले हैं, जिनको अपनी नमाज़ों से रतजगे के सिवा कुछ नहीं मिलता ।"

(हदीस)

सारी निर्भरता आप पर है । नबी (सल्ल०) रमज़ान से पहले अपने साथियों को संबोधित करके इस महीने की बरकतें भी बयान करते और उन बरकतों से अपना भरपूर हिस्सा लेने के लिए पूरी मेहनत और कोशिश पर भी ज़ोर देते ।

बरकत का रहस्या : रमज़ान के महीने में जो बरकत है उसका रहस्या क्या है, यह जानना सबसे पहले ज़रूरी है । इसलिए कि यह जाने बिना रमज़ान की बरकतों से लाभ उठाना संभव नहीं । रमज़ान की महानता और इसकी बरकत का रहस्य यह है कि इस महीने में क़ुरआन नाज़िल किया गया, यानी नाज़िल किया जाना शुरू किया गया । अर्थात इस महीने में अल्लाह की अनन्त रहमत ने हम जैसे मनुष्यों के मार्गदर्शन की व्यवस्था की । सही और ग़लत को परखने की वह कसौटी हमें दी जो हर तरह की त्रुटि से पाक है । यानी बात यह नहीं है कि रमज़ान का महीना इसलिए मुबारक है कि इसमें रोज़े रखे जाते हैं और क़ुरआन पाठ का आयोजन किया जाता है । बल्कि रोज़े और क़ुरआन पाठ के लिए इस महीने को

इसलिए चुना गया कि कुरआन के नाज़िल होने के कारण यह महीना पहले ही महान था । कुरआन नाज़िल होने की महान घटना इसकी अपेक्षित हुई कि इसके दिनों को रोज़ों और रातों को कुरआन पाठ के लिए विशेष कर दिया जाए । अल्लाह ने इस बात को ऐसे कहा है–

"रमज़ान वह महीना है, जिसमें कुरआन उतारा गया जो इन्सानों के लिए सर्वथा मार्गदर्शन है और ऐसी स्पष्ट शिक्षाओं पर आधारित है जो सीधा मार्ग दिखाने वाली और सत्य और असत्य का अन्तर खोलकर रख देने वाली है । अत: अब से जो व्यक्ति इस महीने को पाये उसके लिए अनिवार्य है कि इस पूरे महीने के रोज़े रखे ।" (कुरआन, 2:185)

कुरआन अल्लाह की नेमतों में से सबसे उच्च और अनुपम नेमत है और उसकी रहमतों में सबसे बड़ी रहमत। इसका अवतरण मानव इतिहास की सबसे महान घटना है । मनुष्य के लिए न्याय की कोई कसौटी है तो यही कुरआन है, प्रकाश है तो यही है । वैसे तो हमारे ऊपर अल्लाह की नेमतें बेहिसाब हैं, हम हर क्षण दोनों हाथों से उसकी रहमतों के ख़ज़ाने समेट रहे हैं, लेकिन दुनिया और दुनिया की नेमतें उसी समय तक हमारी हैं, जिस समय तक हमारी सांसे चल रही हैं । अंतिम सांस निकली तो जीवन समाप्त और संसार की सारी नेमतें भी हमारे लिए समाप्त। जो चीज़ जीवन के इन नश्वर क्षणों को शाश्वत जीवन में, इन समाप्त हो जाने वाली नेमतों को कभी समाप्त न होने वाली नेमतों से बदल सकती है वह केवल कुरआन की नेमत है । इसीलिए यह संसार के सारे ख़ज़ानों से क़ीमती ख़ज़ाना है । यही कारण है कि जिस रात यह अवतरित किया गया उसे मुबारक रात कहा गया । कुरआन का मिशन यह है कि एक ऐसी उम्मत अस्तित्व में आये जो मानवजाति के सामने अपने पालनहार और उसके दीन की गवाह बनकर खड़ी हो ताकि न्याय स्थापित हो जाए ।

सारी मानवजाति को सीधे रास्ते पर डाल देने की ज़िम्मेदारी कितनी बड़ी ज़िम्मेदारी है, कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) जब हिरा की गुफ़ से घर आये तो कांपते हुए आये । ख़ुद अल्लाह ने इस कलाम को एक भारी बोझ बताया है । यह कोई आसान काम नहीं, लेकिन इतना कठिन भी नहीं कि इसे उठाना मनुष्य के वश से बाहर हो, नहीं तो अल्लाह, जो रहमान व रहीम भी है और न्याय करने वाला और सब कुछ जानने वाला है ऐसा बोझ क्यों डालता ।

बस इस बोझ को उठाने के लिए अपने अन्दर एक ऐसा इन्सान बनाने की आवश्यकता है जो सिर्फ़ अल्लाह का बन्दा हो । इसके लिए कुरआन पर दृढ़विश्वास ज़रूरी है, कुरआन का ज्ञान भी ज़रूरी है और कुरआन से गहरा संबंध भी आवश्यक है । इसके लिए चरित्र बहुत ऊंचा होना चाहिए और शक्ति और सामर्थ्य भी अधिक होनी चाहिए ।

ऐसा न कीजिए कि रमज़ान का पूरा महीना गुज़र जाए, रहमतों और बरकतों के डोल के डोल उंडेले जाते रहें और आप इतने अभाग्यशाली हों कि आपकी झोली ख़ाली रह जाए । कुछ करने के लिए और अपने हिस्से की रहमतें समेटने के लिए तैयारी कर लीजिए और नबी (सल्ल॰) की इस चेतावनी को अच्छी तरह याद रखिए–"कितने रोज़ेदार हैं, जिनको अपने रोज़ों से भूख-प्यास के सिवा कुछ नहीं मिलता, और कितने रातों को नमाज़ पढ़ने वाले हैं, जिनको अपनी नमाज़ों से रतजगे के सिवा कुछ नहीं मिलता ।" (हदीस)

इस शक्ति और इन उच्च योग्यताओं का स्रोत है तक़्वा अर्थात, ईशपरायणता । अल्लाह ने कुरआन के आरंभ में ही स्पष्ट कर दिया है कि "इस किताब से केवल वही मार्गदर्शन ले सकते हैं जो ईशपरायणता रखते हो, दूसरी ओर रोज़े रखने का उद्देश्य यह बताया गया कि "तुम्हारे अन्दर ईशपरायणता का गुण पैदा हो ।" इन दोनों आयतों को मिलाकर पढ़िये आपको मालूम हो जाएगा कि रोज़े से कुरआन मजीद का इतना गहरा संबंध क्यों है ।

ईशपरायणता क्या है ? : ईशपरायणता बहुत महान गुण है और यह सारे अपेक्षित गुणों का संग्रह भी है । जो लोग

ईशपरायणता का गुण रखते हैं उनको अल्लाह ने कुरआन में दुनिया और आख़िरत (परलोक) की सारी भलाइयों की ज़मानत दी है । ईशपरायणता वह चीज़ है, जिसके द्वारा हर कठिनाई से निकलने का रास्ता मिलता है । इससे दुनिया के सारे काम आसान हो जाते हैं–

"अगर बस्तियों के लोग ईमान लाते और ईशपरायणता का मार्ग अपनाते तो हम उन पर आसमान और ज़मीन से बरकतों के दरवाज़े खोल देते ।" (कुरआन)

ईशपरायणता उस शक्ति का नाम है जिसके बल पर हम उस चीज़ से रुक जाएं जिसको हम ग़लत समझते हों और उस चीज़ पर जम जाएं जिसको सही समझते हों । ईशपरायणता अर्थात तक़्वा का शाब्दिक अर्थ है 'बचना' । यह शक्ति हमारे स्वभाव में है कि हम नुक़्सान व तकलीफ़ से बचें, लाभ का लालच करें और उसे प्राप्त करने की कोशिश करें । हम जलती आग में हाथ नहीं डालते, बल्कि हमारा हाथ अपने-आप ही आग के पास से खिंच आता है । हमारा बच्चा ग़लती से आगे के पास चला जाए तो हम बेचैन हो जाते हैं, लपकते हैं कि किसी तरह उसको बचा लें । इसलिए कि हमें इस बात पर विश्वास है कि आग में हमारा हाथ जल जाएगा या आग बच्चे को जला देगी ।

यह दुनिया की आग का तक़्वा है । इस आग का नुक़्सान हमारे अनुभव में है इसलिए इससे बचने की शक्ति इतनी मज़बूत है । एक आग और है, जो ईमान एवं कर्म की ख़राबियों से भड़कती है । किन राहों पर चलने से इस दुनिया और आने वाली दुनिया में अल्लाह की उस आग में गिरना और जलना संभव है, यही बात कुरआन बताता है । वह सचेत करता है कि उन राहों के पास न जाओ, उस आग से बचो । सत्य का इन्कार, अवज्ञा, अत्याचार, झूठ, हराम, दूसरे के अधिकारों का हनन और उन्हें दुख पहुंचाने से बचो–ये सब आग है ।

दुनिया की आग से हम बचते हैं, क्योंकि हम उसे देखते हैं, इसका हमें अनुभव है इसलिए इसके नुक़्सान हमें पूरा विश्वास है । अगर ऐसा ही विश्वास हमें इस पर हो जाए कि झूठ बोलने से ज़ुबान आग में जल रही है, हराम खाने से पेट आग के अंगारों से भर रहा है या हराम पर चलने से आग बोढ़ना बिछौना और खाना-पीना बन रही है तो फिर निश्चित रूप से हमारे अन्दर वह शक्ति पैदा होगी जो हमें इन कामों से रोक सके ।

यह अल्लाह का और उसकी आग का तक़्वा है । इस तक़्वा का पहला स्रोत परोक्ष पर ईमान है । यानी अल्लाह को अपना पालनहार और स्वामी मानने का अर्थ यह भी है कि कुछ सच्चाइयां ऐसी हैं, जिन्हें हम देख नहीं सकते, छू नहीं सकते जो हमारी ज्ञानेन्द्रियों की पकड़ से नहीं आ सकतीं । इसका अर्थ यह भी है कि सही-ग़लत का ज्ञान केवल वही दे सकता है और इन सच्चाइयों का ज्ञान भी केवल उसी को प्राप्त है । जिसके पास खुले छिपे दोनों का ज्ञान है । तक़्वा वाले वे बन सकते हैं जो इन छिपी बातों पर विश्वास करें । इन बातों को मान लेने वाले के पास एक ही रास्ता है कि वह अपने तन, मन, धन सबको पूरा का पूरा अपने रब के हवाले कर दे । उसका सारा काम अल्लाह के आदेशानुसार होने लगे ।

यही है वह ईशपरायणता जो अल्लाह ने कुरआन के आरंभ में ही बता दिया है–परोक्ष पर ईमान, नमाज़ के रूप में शरीर और जान से बन्दगी, उसका दिया हुआ माल उसी के मार्ग में ख़र्च करना, सत्य और असत्य की परख के लिए ईश्वरीय प्रकाशना पर ईमान और परलोक पर विश्वास ।

जो अल्लाह को अपना पालनहार कहे और इसके बाद भी अपनी शक्तियों को, अपने समय को और अपने माल को उन मार्गों में लगाये जो उसे नापसन्द हैं और उन चीज़ों से न बचे उसके ग़ुस्से की आग को भड़काने वाली हैं, वह ईशपरायणता से वंचित है । अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने एक बार अपने दिल की ओर इशारा करके कहा कि तक़्वा यहां है । (हदीस)

For Information On
City Shops, Roads, Restaurants, Magazine, Schools and much more.
Syed Shahbaz Alam Barvi
Business Development Director (09049185093)
Visit us:
www.shoppinglanes.com

रोज़े के स्वास्थ्य संबंधी लाभ

■ डॉ॰ अदनानुल हक़ ख़ां
(अकोला, महाराष्ट्र)

रोज़े का मक़सद यूं तो ईशपरायणता, संयम और ईश्वर का सामीप्य प्राप्त करना है, लेकिन रोज़े के कई दूसरे लाभ भी हैं । इन्हीं में से स्वास्थ्य संबंधी लाभ भी हैं ।

दैनिक जीवन में हमारे शरीर में बहुत से हानिकारक पदार्थ जमा हो जाते हैं, जो वसा में संचित होते रहते हैं । लगातार रोज़े रखने से कुछ दिनों में वसा (चर्बी) ख़त्म हो जाती है और वे हानिकारक पदार्थ भी नष्ट हो जाते हैं । कई बीमारियां ऐसी हैं जो पाचन क्रिया से जुड़ी विकृतियों के कारण होती है । रमज़ान में पाचन तंत्र को आराम मिलने से वे विकृतियां भी नहीं होती और शरीर उनसे पैदा होने वाले रोग से सुरक्षित रहता है । उपवास के कारण शरीर में चीनी की मात्रा कम हो जाती है और शरीर में संचित अतिरिक्त वसा से ही शरीर की आवश्यक क्रियाएं चलती हैं, परिणामस्वरूप उच्च रक्तचाप और मोटापे के रोगी को लाभ प्राप्त होता है ।

रोज़े की हालत में निर्धारित समय पर पानी नहीं पिया जाता है, जिससे शरीर में जल की मात्रा संतुलित रहती है और उच्च रक्तचाप का ख़तरा नहीं रहता । किडनी को भी आराम मिलता है । मधुमेह के रोगियों के लिए तो उपवास एक उत्कृष्ट चिकित्सा है, क्योंकि रोज़ा शरीर के भार को कम करता है तथा रक्त में मौजूद अतिरिक्त शर्करा को नियंत्रित करता । चूंकि रोज़ा शरीर में संचित अतिरिक्त वसा को निकाल देता है, इसलिए हृदयाघात का ख़तरा भी नहीं होता । हृदयाघात आमतौर पर धमनियों में वसा के जम जाने से होता है । रोज़ा रखने से त्वचा साफ़ होती है और आंखों की रोशनी बढ़ती है ।

मधुमेह के रोगियों के लिए तो उपवास एक उत्कृष्ट चिकित्सा है, क्योंकि रोज़ा शरीर के भार को कम करता है तथा रक्त में मौजूद अतिरिक्त शर्करा को नियंत्रित करता । चूंकि रोज़ा शरीर में संचित अतिरिक्त वसा को निकाल देता है, इसलिए हृदयाघात का ख़तरा भी नहीं होता । हृदयाघात आमतौर पर धमनियों में वसा के जम जाने से होता है ।

1994 ई॰ में मोरक्को में "स्वास्थ्य और रमज़ान" शीर्षक के तहत प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस का आयोजन किया गया था जिसमें 50 से अधिक मुस्लिम और ग़ैर-मुस्लिम वैज्ञानिकों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये थे । रोज़े के बारे में एक बात जो सभी ने स्वीकार की वह यह थी कि रोज़ा मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है । कई रोगों के लिए तो रोज़ा चिकित्सा जैसा है । रोज़े से मनोवैज्ञानिक लाभ भी प्राप्त होते हैं । रोज़ा रखने वाले को शांति भी मिलती है और उसकी स्मरण शक्ति भी बढ़ती है ।

कई मुस्लिम देशों में यह अनुभव भी किया गया कि रमज़ान के महीने में अपराध दर बहुत कम हो जाती है और चारों ओर शांति का वातावरण रहता है । नशीले और मादक पदार्थों का सेवन करने वाले भी रमज़ान में इस बुराई से बचे रहते हैं और इनके दुष्प्रभावों से सुरक्षित रहते हैं । मोटापा और भारवृद्धि आज विश्व भर में एक गंभीर समस्या बनी हुई है । डाइटिंग आदि भी इसमें कोई उपयोगी सिद्ध नहीं हो रही है । इस्लामी तरीक़े से रोज़ा रखने से इसमें विशेष लाभ मिल रहा है ।

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने इसलिए कहा है कि रोज़ा रखो तुम स्वस्थ रहोगे । इस प्रकार इस्लामी तरीक़े से रखा गया रोज़ा मनुष्य को न केवल संयमी और अल्लाह का आज्ञाकारी बनाता है, बल्कि वह शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकारों को भी दूर करता है । मनुष्य को स्वस्थ बनाता है । अपराध की प्रवृत्ति को कम करके समाज में शांति और भाईचारे का वातावरण बनाता है ।

درسیات کی مقبول عام درسی کتاب ''سچّا دین'' کے ہندی اڈیشن

सच्चा दीन

लड़कों और लड़कियों के लिए दीनी तालीमात का सेट

مجلس تدوین وترتیب درسیات کی نظر ثانی اور حذف واضافہ کے بعد نئی کمپوزنگ اور نئے سائز میں بچوں کو اسلامی عقائد، عبادت، سیرت رسول ﷺ، سیرت انبیاء وصلحا، اخلاق وعادات اور معاشرتی آداب سے متعلق ضروری معلومات عام فہم اور دل نشیں انداز میں بہم پہنچائی گئیں ہیں۔

ہر سبق کے بعد مشکل الفاظ کے معانی اور مناسب مشقی سوالات بھی دیے گئے ہیں۔اس صورت میں کتاب کی اہمیت میں اور اضافہ ہوگیا ہے۔

- [حصہ اوّل] سائز $\frac{20 \times 30}{8}$ • صفحات: 112 • قیمت: 50.00
- [حصہ دوم] سائز $\frac{20 \times 30}{8}$ • صفحات: 124 • قیمت: 46.00
- [حصہ سوم] سائز $\frac{20 \times 30}{8}$ • صفحات: 140 • قیمت: 70.00
- [حصہ چہارم] سائز $\frac{20 \times 30}{8}$ • صفحات: 144 • قیمت: 70.00

مرکزی مکتبہ اسلامی پبلشرز، نئی دہلی ۲۵

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025
Phone: 26971652, 26954341, 26946447(D) Fax: 26947858
E-mail: mmipublishers@gmail.com • Website: www.mmipublishers.net

ईदगाह

■ मुंशी प्रेमचन्द

रमज़ान के पूरे तीस रोज़ों के बाद ईद आयी है । कितना मनोहर, कितना सुहावना प्रभाव है । वृक्षों पर अजीब हरियाली है, खेतों में कुछ अजीब रौनक़ है, आसमान पर कुछ अजीब लालिमा है । आज का सूर्य देखो, कितना प्यारा, कितना शीतल है, यानी संसार को ईद की बधायी दे रहा है । गांव में कितनी हलचल है । ईदगाह जाने की तैयारियां हो रही हैं । किसी के कुरते में बटन नहीं है, पड़ोस के घर में सुई-धागा लेने दौड़ा जा रहा है । किसी के जूते कड़े हो गये हैं, उनमें तेल डालने के लिए तेली के घर पर भागा जाता है । जल्दी-जल्दी बैलों को सानी-पानी दे दें । ईदगाह से लौटते-लौटते दोपहर हो जाएगी । तीन कोस का पैदल रास्ता, फिर सैकड़ों आदमियों से मिलना-भेंटना, दोपहर के पहले लौटना असंभव है । लड़के सबसे ज़्यादा प्रसन्न हैं । किसी ने एक रोज़ा रखा है, वह भी दोपहर तक, किसी ने वह भी नहीं, लेकिन ईदगाह जाने की खुशी उनके हिस्से की चीज़ है । रोज़े बड़े-बढ़ों के लिए होंगे । इनके लिए तो ईद है । रोज़ ईद का नाम रटते थे, आज वह आ गयी । अब जल्दी पड़ी है कि लोग ईदगाह क्यों नहीं चलते । इन्हें गृहस्थी चिंताओं से क्या प्रयोजन ! सेवैयों के लिए दूध और शक्कर घर में है या नहीं, इनकी बला से, ये तो सेवैयां खाएंगे । वह क्या जानें कि अब्बाजान क्यों बदहवास चौधरी कायम अली के घर दौड़े जा रहे हैं । उन्हें क्या ख़बर कि चौधरी आंखें बदल लें, तो यह सारी ईद मुहर्रम हो जाए । उनकी अपनी जेबों में तो कुबेर का धन भरा हुआ है । बार-बार जेब से अपना ख़ज़ाना निकालकर गिनते हैं और खुश होकर फिर रख लेते हैं । महमूद गिनता है, एक-दो, दस,-बारह, उसके पास बारह पैसे हैं । मुहसिन के पास एक, दो, तीन, आठ, नौ, पन्द्रह पैसे हैं । इन्हीं अनगिनती पैसों में अनगिनती चीज़ें लाएंगे—खिलौने, मिठाइयां, बिगुल, गेंद और जाने क्या-क्या ।

और सबसे ज़्यादा प्रसन्न है हामिद । वह चार-पांच साल का ग़रीब सूरत, दुबला-पतला लड़का, जिसका बाप गत वर्ष हैजे की भेंट हो गया और मां न जाने क्यों पीली होती-होती एक दिन मर गयी । किसी को पता क्या बीमारी है । कहती तो कौन सुनने वाला था ? दिल पर जो कुछ बीतती थी, वह दिल में ही सहती थी और जब न सहा गया, तो संसार से विदा हो गयी । अब हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में सोता है और उतना ही प्रसन्न है । उसके अब्बाजान रुपये कमाने गये हैं । बहुत-सी थैलियां लेकर आएंगे । अम्मीजान अल्लाह मियां के घर से उसके लिए बड़ी अच्छी-अच्छी चीज़ें लाने गयी हैं, इसलिए हामिद प्रसन्न है । आशा तो बड़ी चीज़ है, और फिर बच्चों की आशा ! उनकी कल्पना तो राई का पर्वत बना लेती है । हामिद के पांव में जूते नहीं हैं, सिर पर एक पुरानी-धुरानी टोपी है, जिसका गोटा काला पड़ गया है, फिर भी वह प्रसन्न है । जब उसके अब्बाजान थैलियां और अम्मीजान नियमतें लेकर आएंगी, तो वह दिल से अरमान निकाल लेगा । तब देखेगा, मुहसिन, नूरे और सामी कहां से उतने पैसे निकालेंगे ।

अभागिन अमीना अपनी कोठरी में बैठी रो रही है । आज ईद का दिन, उसके घर में दाना नहीं ! आज आबिद होता, तो क्या इसी तरह ईद आती और चली जाती ! इस अंधकार और निराशा में वह डूबी जा रही है । किसने बुलाया था इस निगोड़ी ईद को ? इस घर में उसका काम नहीं, लेकिन हामिद ! उसे किसी के मरने-जीने के क्या मतलब? उसके अन्दर प्रकाश है, बाहर आशा । विपत्ति अपना सारा दलबल लेकर आये, हामिद की आनंद-भरी चितबन उसका विध्वसं कर देगी ।

हामिद भीतर जाकर दादी से कहता है—तुम डरना नहीं अम्मां, मैं सबसे पहले आऊंगा । बिल्कुल न डरना ।

अमीना का दिल कचोट रहा है । गांव के बच्चे अपने-अपने बाप के साथ जा रहे हैं । हामिद का बाप अमीना के सिवा और कौन है ! उसे कैसे अकेले मेले जाने दे ? उस भीड़-भाड़ से बच्चा कहीं खो जाए तो क्या हो ? नहीं, अमीना उसे यूं न जाने देगी । नन्ही-सी जान ! तीन कोस चलेगा कैसे ? पैर में छाले पड़ जाएंगे । जूते भी तो

नहीं हैं । वह थोड़ी-थोड़ी दूर पर उसे गोद में ले लेती, लेकिन यहां सेवैयां कौन पकाएगा ? पैसे होते तो लौटते-लौटते सब सामग्री जमा करके चटपट बना लेती । यहां तो घंटों चीज़ें जमा करते लगेंगे । मांगे का ही तो भरोसा ठहरा । उस दिन फ़हीमन के कपड़े सिले थे । आठ आने पैसे मिले थे । उस उठन्नी को ईमान क़ी तरह बचाती चली आती थी इसी ईद के लिए लेकिन कल ग्वालन सिर पर सवार हो गयी तो क्या करती ? हामिद के लिए कुछ नहीं है, तो दो पैसे का दूध तो चाहिए ही । अब तो कुल दो आने पैसे बच रहे हैं । तीन पैसे हामिद की जेब में, पांच अमीना के बटुवें में । यही तो बिसात है और ईद का त्योहार, अल्लाह ही बेड़ा पर लगाए ।

धोबन और नाइन और मेहतरानी और चुड़िहारिन सभी तो आएंगी । सभी को सेवैयां चाहिए और थोड़ा किसी को आंखों नहीं लगता । किस-किस से मुंह चुराएगी ? और मुंह क्यों चुराए ? साल-भर का त्योहार है । ज़िन्दगी ख़ैरियत से रहे, उनकी तक़दीर भी तो उसी के साथ है । बच्चे को ख़ुदा सलामत रखे, ये दिन भी कट जाएंगे ।

गांव से मेला चला । और बच्चों के साथ हामिद भी जा रहा था । कभी सबके सब दौड़कर आगे निकल जाते । फिर किसी पेड़ के नीचे खड़े होकर साथ वालों का इन्तिज़ार करते । यह लोग क्यों इतना धीरे-धीरे चल रहे हैं ? हामिद के पैरों में तो जैसे पर लग गये हैं । वह कभी थक सकता है ? शहर का दामन आ गया । सड़क के दोनों ओर अमीरों के बग़ीचे हैं ।

पक्की चारदीवारी बनी हुई है । पेड़ों में आम और लीचियां लगी हुई हैं । कभी-कभी कोई लड़का कंकड़ी उठाकर आम पर निशान लगाता है । माली अंदर से गाली देता हुआ निकलता है । लड़के वहां से एक फलांग पर हैं । ख़ूब हंस रहे हैं । माली को कैसा उल्लू बनाया है ।

बड़ी-बड़ी इमारतें आने लगीं । यह अदालत है, यह कॉलेज है, यह क्लब घर है । इतने बड़े कॉलेज में कितने लड़के पढ़ते होंगे ? सब लड़के नहीं हैं जी ! बड़े-बड़े आदमी हैं, सच ! उनकी बड़ी-बड़ी मूंछे हैं । इतने बड़े हो गये, अभी तक पढ़ते जाते हैं । न जाने कब तक पढ़ेंगे और क्या करेंगे इतना पढ़कर ! हामिद के मदरसे में दो-तीन बड़े-बड़े लड़के हैं, बिल्कुल तीन कौड़ी के । रोज़ मार खाते हैं, काम से जी चुराने वाले । इस जगह भी उसी तरह के लोग होंगे और क्या । क्लब-घर में जादू होता है । सुना है, यहां मुर्दों की खोपड़ियां दौड़ती हैं । और बड़े-बड़े तमाशे होते हैं, पर किसी को अंदर नहीं जाने देते । और वहां शाम को साहब लोग खेलते हैं । बड़े-बड़े आदमी खेलते हैं, मूंछों-दाढ़ी वाले । और मेमें भी खेलती हैं, सच ! हमारी अम्मां को यह दे दो, क्या नाम है, बैट, तो उसे पकड़ ही न सके । घुमाते ही लुढ़क जाएं ।

महमूद ने कहा—हमारी अम्मीजान का तो हाथ कांपने लगे, अल्लाह क़सम ।

मुहसिन बोला—चलो, मनों आटा पीस डालती हैं । ज़रा-सा बैट पकड़ लेगी, तो हाथ कांपने लगेंगे ! सैकड़ों घड़े पानी रोज़ निकालती हैं । पांच घड़े तो तेरी भैंस पी जाती है । किसी मेम को एक घड़ा पानी भरना पड़े, तो आंखों तक अंधेरी आ जाए ।

महमूद—लेकिन दौड़तीं तो नहीं, उछल-कूद तो नहीं सकतीं ।

मुहसिन—हां, उछल-कूद तो नहीं सकतीं, लेकिन उस दिन मेरी गाय खुल गयी थी और चौधरी के खेत में जा पड़ी थी, अम्मां इतना तेज़ दौड़ी कि मैं उन्हें न पा सका, सच।

आगे चले । हलवाइयों की दुकानें शुरू हुई । आज ख़ूब सजी हुई थीं । इतनी मिठाइयां कौन खाता ? देखो न, एक-एक दूकान पर मनों होंगी । सुना है, रात को जिन्नात आकर ख़रीद ले जाते हैं ।

अब्बा कहते थे कि आधी रात को एक आदमी हर दूकान पर जाता है और जितना माल बचा होता है, वह तुलवा लेता है और सचमुच के रुपये देता है, बिल्कुल ऐसे ही रुपये ।

हामिद को यक़ीन न आया—ऐसे रुपये जिन्नात को कहां से मिल जाएंगे ?

मुहसिन ने कहा—जिन्नात को रुपये की क्या कमी ? जिस ख़ज़ाने में चाहें चले जाएं । लोहे के दरवाज़े तक उन्हें नहीं रोक सकते जनाब, आप हैं किस फेर में ! हीरे-जवाहरात तक उनके पास रहते हैं । जिससे ख़ुश हो गये, उसे टोकरों जवाहरात दे दिये । अभी यहीं बैठे हैं, पांच मिनट में कलकत्ता पहुंच जाएं ।

हामिद ने फिर पूछा—जिन्नात बहुत बड़े-बड़े होते हैं ?

मुहसिन–एक-एक सिर आसमान के बराबर होता है जी ! ज़मीन पर खड़ा हो जाए तो उसका सिर आसमान से जा लगे, मगर चाहे तो एक लोटे में घुस जाए ।

हामिद–लोग उन्हें कैसे खुश करते होंगे ? कोई मुझे यह मंतर बता दे तो एक जिन्न को खुश कर लूं ।

मुहसिन–अब यह तो न जानता, लेकिन चौधरी साहब के क़ाबू में बहुत-से जिन्नात हैं । कोई चीज़ चोरी हो जाए चौधरी साहब उसका पता लगा देंगे और चोर का नाम बता देंगे । जुमराती का बछवा उस दिन खो गया था । तीन दिन हैरान हुए, कहीं न मिला तब झख मारकर चौधरी के पास गये । चौधरी ने तुरन्त बता दिया, मवेशीख़ाने में है और वहीं मिला । जिन्नात आकर उन्हें सारे जहान की ख़बर दे जाते हैं ।

अब उसकी समझ में आ गया कि चौधरी के पास क्यों इतना धन है और क्यों उनका इतना सम्मान है ।

आगे चले । यह पुलिस लाइन है । यहीं सब कानिसटिबिल क़वायद करते हैं । रैटन ! फाय फो ! रात को बेचारे घूम-घूमकर पहरा देते हैं, नहीं चोरियां हो जाएं । मुहसिन ने प्रतिवाद किया–यह कानिसटिबिल पहरा देते हैं ? तभी तुम बहुत जानते हों अजी हज़रत, यह चोरी करते हैं । शहर के जितने चोर-डाकू हैं, सब इनसे मुहल्ले में जाकर 'जागते रहो ! जागते रहो !' पुकारते हैं । तभी इन लोगों के पास इतने रुपये आते हैं ।

मेरे मामू एक थाने में कानिसटिबिल हैं। बरस रूपया महीना पाते हैं, लेकिन पचास रुपये घर भेजते हैं । अल्लाह क़सम ! मैंने एक बार पूछा था कि मामू, आप इतने रुपये कहां से पाते हैं ? हंसकर कहने लगे–बेटा, अल्लाह देता है । फिर आप ही बोले–हम लोग चाहें तो एक दिन में लाखों मार लाएं । हम तो इतना ही लेते हैं, जिसमें अपनी बदनामी न हो और नौकरी न चली जाए ।

हामिद ने पूछा–यह लोग चोरी करवाते हैं, तो कोई इन्हें पकड़ता नहीं ?

मुहसिन उसकी नादानी पर दया दिखाकर बोला–अरे, पागल ! इन्हें कौन पकड़ेगा ! पकड़ने वाले तो यह लोग खुद हैं, लेकिन अल्लाह, इन्हें सज़ा भी ख़ूब देता है । हराम का माल हराम में जाता है । थोड़े ही दिन हुए, मामू के घर में आग लग गयी । सारी लेई-पूंजी जल गयी । एक बरतन तक न बचा । कई दिन पेड़ के नीचे सोये, अल्लाह क़सम, पेड़ के नीचे ! फिर न जाने कहां से एक सौ क़र्ज़ लाए तो बरतन-भांड़े पर आये ।

हामिद–एक सौ तो पचास से ज़्यादा होते हैं ?

'कहां पचास, कहां एक सौ । पचास एक थैली-भर होता है । सौ तो दो थैलियों में भी न आये ?

अब बस्ती घनी होने लगी । ईइगाह जाने वालों की टोलियां नज़र आने लगी । एक से एक भड़कीले वस्त्र पहने हुए । कोई इक्के-तांगे पर सवार, कोई मोटर पर, सभी इत्र में बसे, सभी के दिलों में उमंग । ग्रामीणों का यह छोटा-सा दल अपनी विपन्नता से बेख़बर, संतोष और धैर्य में मगन चला जा रहा था । बच्चों के लिए नगर की सभी चीज़ें अनोखी थीं । जिस चीज़ की ओर ताकते, ताकते ही रह जाते और पीछे से हार्न की आवाज़ होने पर भी न चेतते । हामिद तो मोटर के नीचे जाते-जाते बचा ।

सहसा ईदगाह नज़र आयी । ऊपर इमली के घने वृक्षों की छाया है । नाचे पक्का फ़र्श है, जिस पर जाजम बिछा हुआ है । और रोज़ेदारों की पंक्तियां एक के पीछे एक न जाने कहां तक चली गयी हैं, पक्की जगत के नीचे तक, जहां जाजम भी नहीं है । नये आने वाले आकर पीछे की क़तार में खड़े हो जाते हैं । आगे जगह नहीं है । यहां कोई धन और पद नहीं देखता । इस्लाम की निगाह में सब बराबर हैं । इन ग्रामीणों ने भी वुज़ू किया और पिछली पंक्ति में खड़े हो गये । कितना सुन्दर संचालन है, कितनी सुन्दर व्यवस्था ! लाखों सिर एक साथ सजदे में झुक जाते हैं, फिर सबके सब एक साथ खड़े हो जाते हैं, एक साथ झुकते हैं, और एक साथ खड़े हो जाते हैं, एक साथ खड़े हो जाते हैं, एक साथ झुकते हैं और एक साथ खड़े हो जाते हैं, कई बार यही क्रिया होती है, जैसे बिजली की लाखों बत्तियां एक साथ प्रदीप्त हों और एक साथ बुझ जाएं, और यही क्रम चलता रहे। कितना अपूर्व दृश्य था, जिसकी सामूहिक क्रिया, विस्तार और अनंतता हृदय को श्रद्धा, गर्व और आत्मानंद से भर देती थीं, मानों भ्रातृत्व का एक सूत्र इन समस्त आत्माओं को एक लड़ी में पिरोये हुए हैं ।

नमाज़ ख़त्म हो गयी । लोग आपस में गले मिल रहे हैं । तब मिठाई और खिलौने की दूकान पर धावा होता है । ग्रामीणों का यह दल इस विषय में बालकों से कम उत्साही नहीं है । यह देखो, हिंडोला हैं एक पैसा देकर चढ़ जाओ । कभी आसमान पर जाते हुए मालूम होंगे, कभी

ज़मीन पर गिरते हुए। यह चर्खी है, लकड़ी के हाथी, घोड़े, ऊंट, छड़ों में लटके हुए हैं। एक पेसा देकर बैठ जाओ और पच्चीस चक्करों का मज़ा लो।

महमूद और मुहसिन और नूरे और समी इन घोड़ों और ऊंटों पर बैठते हैं। हामिद दूर खड़ा है। तीन ही पैसे तो उसके पास हैं। अपने कोश का एक तिहाई ज़रा-सा चक्कर खाने के लिए नहीं दे सकता।

सब चर्ख़ियों से उतरते हैं। अब खिलौने लेंगे। उधर दूकानों की क़तार लगी हुई है। तरह-तरह के खिलौने हैं–सिपाही और गुजरिया, राज और वकी, भिश्ती और धोबिन और साधु। वह ! कत्ते सुन्दर खिलोने हैं। अब बोला ही चाहते हैं।

महमूद सिपाही लेता है, ख़ाकी वर्दी और लाल पगड़ी वाला, कंधे पर बंदूक़ रखे हुए, मालूम होता है, अभी क़वायद किये चला आ रहा है। मुहसिन को भिश्ती पसंद आया।

कमर झुकी हुई है, ऊपर मशक रखे हुए हैं मशक का मुंह एक हाथ से पकड़े हुए है। कितना प्रसन्न है ! शायद कोई गीत गा रहा है। बस, मशक से पानी अड़ेला ही चाहता है।

नूरे को वकील से प्रेम है। कैसी विद्वत्ता है उसके मुख पर ! काला चोगा, नीचे सफ़ेद अचकन, अचकन के सामने की जेब में घड़ी, सुनहरी ज़ंजीर, एक हाथ में क़ानून का पौथा लिये हुए। मालूम होता है, अभी किसी अदालत से ज़िरह या बहस किये चले आ रहे हैं। यह सब दो-दो पैसे के खिलौने हैं।

हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं, इतने महंगे खिलौने वह कैसे ले ? खिलौना कहीं हाथ से छूट पड़े तो चूर-चूर हो जाए। ज़रा पानी पड़े तो सारा रंग घुल जाए। ऐसे खिलौने लेकर वह क्या करेगा, किस काम के !

मुहसिन कहता है–मेरा भिश्ती रोज़ पानी दे जाएगा सांझ-सबेरे।

महमूद–और मेरा सिपाही घर का पहरा देगा कोई चोर आएगा, तो फ़ौरन बंदूक़ से फैर कर देगा।

नूरे–और मेरा वकील ख़ूब मुक़दमा लड़ेगा।

समी–और मेरी धोबिन रोज़ कपड़े धोएगी।

हामिद खिलौनों की निंदा करता है–मिट्टी ही के तो हैं, गिरे तो चकनाचूर हो जाएं, लेकिन ललचाई हुई आंखों से खिलौनों को देख रहा है और चाहता है कि ज़रा देर के लिए उन्हें हाथ में ले सकता। उसके हाथ अनायास ही लपकते हैं, लेकिन लड़के इतने त्यागी नहीं होते हैं, विशेषकर जब अभी नया शौक़ है। हामिद ललचता रह जाता है।

खिलौने के बाद मिठाइयां आती हैं। किसी ने रेवड़ियां ली हैं, किसी ने गुलाबजामुन किसी ने सोहन हलवा। मज़े से खा रहे हैं।

हामिद बिरादरी से पृथक है। अभागे के पास तीन पैसे हैं। क्यों नहीं कुछ लेकर खाता ? ललचाई आंखों से सब की ओर देखता है।

मुहसिन कहता है–हामिद रेवड़ी ले जा, कितनी खुशबूदार है !

हामिद को सन्देह हुआ, ये केवल क्रूर विनोद हैं मुहसिन इतना उदार नहीं है, लेकिन यह जानकर भी वह उसके पास जाता है। मुहसिन दोने से एक रेवड़ी निकालकर हामिद की ओर बढ़ाता है। हामिद हाथ फैलाता है। मुहसिन रेवड़ी अपने मुंह में रख लेता है। महमूद नूरे और समी ख़ूब तालियां बजा-बजाकर हंसते हैं। हामिद खिसिया जाता है।

मुहसिन–अच्छा, अबकी ज़रूर देंगे हामिद, अल्लाह क़सम, ले जा।

हामिद–रखे रहो। क्या मेरे पास पैसे नहीं है ?

समी–तीन ही पैसे तो हैं। तीन पैसे में क्या-क्या लोगे ?

महमूद–हम से गुलाबजामुन ले जाओ हामिद। मुहसिन बदमाश है।

हामिद–मिठाई कौन बड़ी नेमत है। किताब में इसकी कितनी बुराइयां लिखी हैं।

मुहसिन–लेकिन दिन में कह रहे होंगे कि मिले तो खा लें। अपने पैसे क्यों नहीं निकालते ?

महमूद–हम समझते हैं, इसकी चालाकी। जब हमारे सारे पैसे ख़र्च हो जाएंगे, तो हमें ललचा-ललचाकर खाएगा।

मिठाइयों के बाद कुछ दूकानें लोहे की चीज़ों की, कुछ गिलट और कुछ नक़ली गहनों की। लड़कों के लिए यहां कोई आकर्षण न था। वे सब आगे बढ़ जाते हैं, हामिद लोहे की दुकान पर रुक जात हैं। कई चिमटे रखे हुए थे। उसे ख़याल आया, दादी के पास चिमटा नहीं है। तबे से रोटियां

उतारती हैं, तो हाथ जल जाता है । अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे तो वह कितना प्रसन्न होंगी ! फिर उनकी उंगलियां कभी न जलेंगी । घर में एक काम की चीज़ हो जाएगी । खिलौने से क्या फ़ायदा ? व्यर्थ में पैसे ख़राब होते हैं । ज़रा देर ही तो खुशी होती है । फिर तो खिलौने को कोई आंख उठाकर नहीं देखता । यह तो घर पहुंचते-पहुंचते टूट-फूटकर बराबर हो जाएंगे । चिमटा कितने काम की चीज़ है । रोटियां तवे से उतार लो, चूल्हें में सेंक लो । कोई आग मांगने आये तो चटपट चूल्हे से आग निकालकर उसे दे दो । अम्मां बेचारी को कहां फ़ुरसत है कि बाज़ार आएं और इतने पैसे ही कहां मिलते हैं ? रोज़ हाथ जला लेती हैं ।

हामिद के साथी आगे बढ़ गये हैं । सबील पर सबके सब शर्बत पी रहे हैं । देखो, सब कितने लालची हैं । इतनी मिठाइयां लीं, मुझे किसी ने एक भी न दी । उस पर कहते हैं, मेरे साथ खेलो । मेरा यह काम करो । अब अगर किसी ने कोई काम करने को कहा, तो पूछूंगा । खाएं मिठाइयां, आप मुंह सड़ेगा, फोड़े-फुंसियां निकलेंगी, आप ही ज़बान चटोरी हो जाएगी । तब घर से पैसे चुराएंगे और मार खाएंगे । किताब में झूठी बातें थोड़े ही लिखी हैं । मेरी ज़बान क्यों ख़राब होगी ? अम्मां चिमटा देखते ही दौड़कर मेरे हाथ से ले लेंगी और कहेंगी—मेरा बच्चा अम्मां के लिए चिमटा लाया है ।

कविता

शराब

शराब ग़मों को नहीं, आदमी को पीती है,
शराब आदमी को मार, खुद जीती है,
हे शराबियों ध्यान से मेरी बात सुनना,
वो इन्सानों का दुश्मन है, जिसे शराब से प्रीति है ।

शराब हिन्दू, मुसलमान, सिख, पारसी की दुश्मन है,
शराब से वीरान हो जाते लोगों के गुलशन हैं,
आंगन में फुदकते चिड़ियों जैसे ये छोटे-छोटे बच्चे,
इनके उजड़ जाते नशेमन है ।

शराब से गन्दी हवस जगती है,
शराबी को हर औरत भोग की वस्तु लगती है,
शराब दुराचार की जननी है,
शराब औरत की अस्मत को ठगती है ।

याद करिये दिल्ली का वो घिनौना कांड,
जिस बस में थे सात पापी सांड,
वो शराब पी पशु बन गये थे,
उनकी पशुता से शर्मिन्दा है पूरा ब्रह्माण्ड

शराब मन की बेशर्मी और तन का रोग है,
गन्दी नालियों में पड़े मिलेंगे शराबी लोग हैं,
शराबी होना हमारे दुष्कर्मों का भोग है ।

शराबी की इन्द्रियां कांपती है, धमनियां हांपती है,
और जीभ ! घर बेचो, गहने बेचो, जापती है ।
जब शराबी पीकर आता है,
तो बच्चे रोते हैं कांपती-कांपती है ।

शराबी का घर है परिवार का बेड़ा गर्क है,
शराबी और सूफ़ी में यही एक फ़र्क है,
घर की अस्मिता को बेच, जो करता खुश मन है,
शराबी हिन्दुत्व व इस्लाम का दुश्मन है,

यदु वंश का सत्यानाश किया था शराब ने,
हमारे साहित्य में इनका वर्णन है ।
जिससे गुर्दे, आंतें, जिगर हो जाते ख़राब हैं,
उसका सबसे बड़ा कारण शराब है,

मेरी बात अगर वच है तो मैं कहूंगा,
पियक्कड़ों के चेहरे बेआब है,
हे मेरे कृष्ण, हे मेरे करीम, हे मेरे राम, हे मेरे रहीम,
औरतें हो रही हैं विधवा, बच्चे हो रहे हैं यतीम,
दुनिया को शराब से बचा मेरे मौला,
दुआ मांगती है मरयम, मीरा, दर्शना व नसीम ।

मोहन लाल तंवर
ई-207, शास्त्रीनगर, अजमेर (राज॰)

अनाथ लड़कियों की पुकार

VOICE OF ORPHAN GIRLS

मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया)

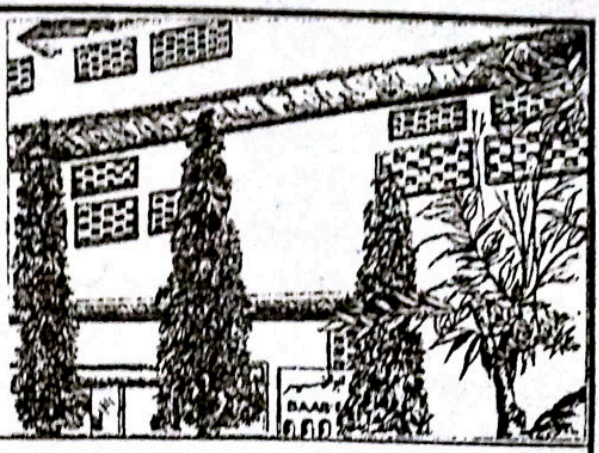

संक्षिप्त परिचय

लड़कियों के लिए आधुनिक और इस्लामी तालीम से लैस राष्ट्रीय स्तर का एक आदर्श रिहाइशी इदारा

संस्था ने अपनी उम्र के 25 वर्ष दिसम्बर 2011 में ही पूरे कर लिए मगर अब तक माली दुश्वारियों के सबब अपना सिल्वर (Silver Jubilee) भी नहीं मना सका ।

● 25 वर्षीय सेवाएं ● 19 विभाग ● शिक्षा : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● पत्राचार शिक्षा I.A., B.A. एवं Library Science ● 6 छात्राओं ने हिफ़्ज़ के साथ मैट्रिक पास किया ● प्रौढ़ शिक्षा ● वोकेशनल सेन्टर ● कटिंग और सिलाई: 6 बैच 70 छात्राएं ● ज़री वर्क्स : 3 बैच 40 छात्राएं ● 1993 ई० से 2012 ई० तक 66 अनाथ बच्चियों और 41 मां-बाप वाली बच्चियों ने मैट्रिक पास किया ● वार्षिक ख़र्च : 22 लाख रुपये से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● इदारा 120 अनाथ बच्चियों का सारा ख़र्च पूरा करता है ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक यतीम बच्ची का वार्षिक ख़र्च 12,000/- रुपये है—आप भी एक अनाथ बच्ची का ख़र्च उठा कर सवाब में शरीक हों ।

सहायता के विभिन्न रूप : ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● दीनी किताबें ● ज़मीन की ख़रीदारी और क़र्ज़ की अदायगी ● स्टाफ़ की मासिक आय के लिए 1,00,000/- रुपये से अधिक ● मां-बाप या रिश्तेदारों के नाम कमरा या हॉल बनवाना और निर्माण कार्यों के लिए ईंटें, सीमेंट, सरिया और अन्य सामग्री या उसका मूल्य देना ● यहां प्रतिवर्ष हिसाब चेक किये जाते हैं और ऑडिट होता है । ● इदारा में खुद आकर बराबरी का नमूना देखें कि अनाथ बच्चियां और वे बच्चियां जिनके मां-बाप हैं किस तरह मिलकर रहा करती हैं ।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

विदेशी चन्दा देने वाले : भारत सरकार से "मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया) को विदेशों से चन्दा लेने का इजाज़तनामा प्राप्त हो गया है ।

Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

विदेशों में रहने वाले अब BANK A/c No. 300402010009042

BANK CODE NO. UBININBBJAM में अपनी रक़म भेज सकते हैं ।

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें—"THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"

Address for correspondence : रक़म भेजने और संपर्क करने का पता

GENERAL SECRETARY, THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE

At : KOLOWNA, P.O.: CHERKI-824237, Distt.: GAYA (BIHAR) INDIA, ☎ 0631-2734437 ● Mobile : 9934480190

E-mail : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, Website : www.gmgo.org

LOCAL DONORS मक़ामी चन्दा देने वाले

BANK CODE-UBI No. 530042 UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

CORE BANKING A/C NO.: 300402010007752

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

संस्थापक महासचिव : इक़बाल अहमद ख़ां

ग़रीबी उन्मूलन में ज़कात का महत्वपूर्ण योगदान

❖ डॉ॰ एम॰ ए॰ रशीद

इस्लाम ने भीख मांगने की प्रवृत्ति को अवैध ठहराया है और उसने इस व्यवसाय की कठोर निंदा की ताकि प्रत्येक व्यक्ति मेहनत, परिश्रम से ही धन अर्जन करे और ग़रीबी समाप्त हो सके, आप (सल्ल॰) ने कहा "जिसने भीख मांगने का रास्ता अपनाया, अल्लाह उसके लिये ग़रीबी का रास्ता खोल देता है"।

व्यक्ति की बुनियादी आर्थिक समस्या यह है कि देश के विकास को बनाये रखते हुए किस प्रकार उसकी आवश्यकताओं को पूरा किया जाये और किस प्रकार क्षमता एवं योग्यता के अनुसार अपने एवं समाज के विकास तथा अपने लक्ष्य तक पहुंचने के अवसर उसे प्राप्त हो सकें । इस्लाम के आर्थिक प्रबंधन में इन्हीं मूल समस्याओं का समाधान होता है। संपूर्ण मानवता की बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु साधनों की उपलब्धता उसकी दृष्टि में रहती है । इस प्रकार व्यक्ति जब धन कमाने लगता है तो उस पर धन कमाने में वैधता की लगाम भी लगायी जाती है कि वह अवैध एवं भ्रष्ट तरीके न अपनाए तथा इस्लाम, संपत्ति को जोड़-जोड़ कर संग्रह करने की क्रिया को भी स्पष्ट शब्दों में निंदा करता है, क्योंकि इस प्रकार से संपत्ति की परिक्रमा कुछ ही लोगो तक सिमटी रह जाती है । दूसरी ओर प्राकृतिक रूप से संपत्ति समेट-समेट कर एकत्रित करने वाला स्वयं की कुआचरण के रोग, कंजूसी से ग्रस्त हो जाता है । इस संबंध में पवित्र क़ुरआन (3:180) में उस व्यक्ति को दुष्परिणाम का संकेत देता है, "और जो लोग कंजूसी करते हैं उस चीज़ में जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल (कृपा) में से दिया है, वे हरगिज़ यह न समझें कि यह उनके हक़ में अच्छा है । बल्कि यह उनके हक़ में बहुत बुरा हे, जिस चीज़ में वे कंजूसी कर रहे हैं उसका क़ियामत के दिन उन्हें तौक़ पहनाया जाएगा । आकाशों और धरती की विरासत अल्लाह ही के लिए है, और अल्लाह जो कुछ भी तुम करते हो, उसे जानता है ।"

धन को संग्रहित करने और उसको ब्याज के द्वारा समाज में चलाने से धन सिमट-सिमट कर कुछ लोगों के हाथों में इकट्ठा हो जाता है और जनसाधारण की ख़रीदने की शक्ति दिन प्रतिदिन घटती चली जाती है जिसके परिणाम-स्वरूप उद्योग, व्यवसाय की आर्थिक नीति में मंदी का दौर दिखायी देने लगता है । इस प्रकार अनेकों की आर्थिक जिंदगी विनाश के दुहाने पर पहुंच जाती है जो अन्ततः पूंजीवाद के भी विनाश का कारण बन जाती है ।

पवित्र क़ुरआन (9:34) में कहा गया–"ऐ ईमान लाने वालो ! अहले किताब के अक्सर विद्वान व धर्मगुरु लोगों के माल अवैध तरीक़ों से खाते हैं और लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और जो लोग सोना-चांदी जमा करके रखते हैं और उन्हें अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते, उन्हें भयंकर दुःख देने वाली यातना की मंगल सूचना दे दो ।"

ये इस्लाम की आर्थिक नाति की वे शिक्षाएं हैं जो पूंजीवाद की जड़ पर सीधा प्रहार करती हैं क्योंकि पूंजीवाद का उद्देश्य बचत को जमा कर संपत्ति को बढ़ाने में उस संग्रहित संपत्ति को लगाने तक सीमित रहता है । लेकिन इस्लाम ग़रीबी को मिटाने हेतु ख़र्च करने की शिक्षा देता है जिनमें कल्याणकारी कार्य निहित होते हैं । पवित्र क़ुरआन इस संबंध में (2:219) बताता है कि–"...और वे तुमसे पूछते हैं कितना ख़र्च करें ? कह दो : जो तुम्हारी आवश्यकता से अधिक हो...।"

"और तुम्हारी संपत्ति में मांगने वाले और धनहीन का हक़ है ।"

(क़ुरआन, 51:19)

इस्लाम कहता है कि ख़र्च करने से व्यक्ति ग़रीब नहीं हो जाएगा बल्कि उसकी संपत्ति बढ़ेगी और उसमें बरकत होगी । "शैतान तुम्हें निर्धन होने से डराता है और कंजूसी जैसी शर्मनाक बात का आदेश देता है मगर अल्लाह तुमसे बख़्शिश और अधिक व्यापकता का वादा करता है ।"

(क़ुरआन, 2:268)

वास्तव में इस्लाम के ये दृष्टिकोण बहुत ही मज़बूत

आधारों पर स्थापित हैं, क्योंकि धन को संग्रहित करने और उसको ब्याज के द्वारा समाज में चलाने से धन सिमट-सिमट कर कुछ लोगों के हाथों में इकट्ठा हो जाता है और जनसाधारण की ख़रीदने की शक्ति दिन प्रतिदिन घटती चली जाती है जिसके परिणामस्वरूप उद्योग, व्यवसाय की आर्थिक नीति में मंदी का दौर दिखायी देने लगता है । इस प्रकार अनेकों की आर्थिक जिंदगी विनाश के दुहाने पर पहुंच जाती है जो अन्ततः पूंजीवाद के भी विनाश का कारण बन जाती है ।

ऐसे विनाश को रोकने के लिए इस्लामी आर्थिक नीति ज़कात का प्रबंधन हितकारी बन जाता है, और उन लोगों को जिन्हें अपने परिश्रम से आवश्यकता से अधिक धन प्राप्त किया जाता है उन्हें धन संग्रहित न करते हुए बहुत से दान में ख़र्च किया जाता है जिसमें सोसायटी के निम्नवर्ग के लोग ही लाभ उठा सकते हैं । इस प्रकार इस्लाम जहां अपनी उत्तम शिक्षा तथा प्रेरणा के प्रभावी उपायों से समाज में कल्याण, बंधुत्व एवं एकता तथा पारस्परिक सहयोग की चेतना पैदा करता है वहीं ज़कात के प्रबंधन द्वारा पूंजीवादियों की संपत्ति में से एक भाग सोसायटी के कल्याण हेतु अति आवश्यक रूप से निकलवाता है । "ऐ नबी! तुम उनके मालो में से 'सदक़ा' लेकर उन्हें पवित्र करो और नेकी की राह में उन्हें बढ़ाओ ।"

(क़ुरआन, 9:103)

ज़कात की ऐसी व्यवस्था पर कहा जाता है कि यह मुस्लिम समुदाय की कोऑपरेटिव सोसायटी है, यह उनकी इंश्यूरेंस कंपनी है, यह उनका प्रोविडेंट फ़ंड है, यह उनका असहायों का दान पूंजी है, यह उनके अपाहिजों, बीमारों, अनाथों, विधवाओं, का आर्थिक साधन है । और इन सबसे बढ़कर यह वह चीज़ है जो मिल्लत को भविष्य की चिंता से मुक्त कर देती है । उसका सीधा-सदा सिद्धान्त यह है कि आज तुम धनी हो तो तुम दूसरों की सहायता करो और अगर कल तुम असहाय हो गये तो दूसरे तुम्हारी सहायता करेंगे । तुम्हें यह चिंता करने की आवश्यकता नहीं है कि ग़रीब हो गये तो क्या होगा ? मृत्यु हो गयी तो पत्नी और बच्चों का कैसे बनेगा ? कोई आपदा आन पड़ी, रोगी हो गये, घर में आग लग गयी, बाढ़ से नुक़सान हो गया, दीवालिया निकल गया, तब इन सब परेशानियों से निकलने का क्या रास्ता होगा ? यात्रा में रुपये न रहे तब शेष सफ़र कैसे संभव होगा ? इन सब चिंताओं से मात्र ज़कात परेशानी को दूर करने का माध्यम बन जाती है । तुम्हारा काम मात्र इतना है कि अपनी जमांपूंजी में से ढ़ाई प्रतिशत राशि को अल्लाह की इंश्यूरेंस कंपनी में अपनी बीमा करा लो । क्योंकि इस समय तुमको इस धन की आवश्यकता नहीं है । यह उनकी आवश्यकताओं का धन है जिसे जिसे उसकी आवश्यकता रखते हैं । कल जब तुम उसकी आवश्यकताओं में आओगे या तुम्हारा कोई इस धन की आवश्यकता की श्रेणी में आएगा तो न मात्र तुम्हारा अपना दिया हुआ माल बल्कि उससे भी अधिक तुम को वापिस मिल जाएगा । इस प्रकार इस्लामी आर्थिक नीति के इन उद्देश्यों से ग़रीबी को मिटाना अत्यधिक संभव है । क्योंकि इस्लाम ज़कात, दान, द्वारा धन को सभी व्यक्तियों तक पहुंचाता है ताकि प्रत्येक व्यक्ति क्रय-विक्रय में भागीदार बन सकें । लघु उद्योगों को बढ़ाने में तथा उसके द्वारा खेतियां फलें-फूलें व्यापार से अत्यधिक बढ़ावा मिल सके तथा जनसाधारण में कुछ एक करोड़पति, लखपति न हों बल्कि सब ख़ुशहाल प्रसन्नचित हों ।

SHATABDI FOUNDATION, GAYA

- Started Shatabdi Public School in 2001 with primary classes, has now developed into a 10+2 CBSE affiliated educational institution with quality education in modern subjects with moral orientation.
- Presently there are around 1400 students who are provided modern teaching facilities. The Foundation also adopts poor/ orphan students
- Free education is given to poor students of the locality after school time.
- Our immediate needs are—Purchase one more school bus, Construction of Prayer Hall & Purchase of 30 Computers.

(Prof. Z. H. Khan) Chairman

(Prof. M. B. Zaman) Secretary

SHATABDI PUBLIC SCHOOL

Katari Hill Road, Gaya-823001 (Bihar) INDIA

भारतीय नारी की सामाजिक स्थिति और डॉ॰ अम्बेडकर

■ डॉ॰ सुरेश उजाला

भारतीय समाज में सामान्यत: महिलाओं की सामाजिक दशा को सम्मानजनक कहा जाता है । लक्ष्मी-सरस्वती-दुर्गा आदि-इत्यादि के रूप में स्त्रियों की पूजा-अर्चना होती रही है । महिला को पुरुष की अर्द्धांगिनी और सहयोगी के रूप में परिभाषित किया जा रहा है । समय बदला यह सामाजिक दशा भी परिवर्तित होती गयी । पुरुष महिला के मान-सम्मान और उनके हक़ों को छीनता गया । परिणामस्वरूप महिलाओं की स्थिति में निरंतर गिरावट आती गयी । बड़े-बड़े अवतारों और विद्वानों को जन्म देने वाली यह महिला उनके ही द्वारा सतायी जाने लगी । छक्के देकर बाहर खदेड़ देना, उसे दर-दर की ठोकर खाने के लिए विवश कर देना, तमाम उदाहरण उसकी उपेक्षा और बहिष्कार के समाज में उपस्थित होने लगे । जो महिला अपने पति के जीवन-काल में उसकी सुख-सुविधा-समृद्धि और उसकी इच्छा-पूर्ति का साधन होती थी, वही महिला पति के कहने पर बहिष्कृत समझी जाती थी । सिंगार-कपड़े-आभूषण आदि पहनना उसके लिए मज़ाक़ की वजह बनती थी ।

डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर किसी भी समाज की उन्नति, उस समाज की महिलाओं की उन्नति के आधार पर आकलन करते थे । भारतीय समाज में महिलाओं की उपेक्षित और घृणित दशा को देख डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर काफ़ी दुखी थे । महिलाओं की यह दशा अछूत परिवारों में ही नहीं अपितु तथाकथित उच्च परिवारों में भी मौजूद थी । महिलाओं की दशा और दिशा प्राचीन समय में चाहे ठीक रही हो किंतु उत्तर वैदिककाल, रामायण काल तथा महाभारत काल में काफ़ी ख़राब रही । घर से निकाल देना, जुए में दांव पर लगाना आदि कोई ख़ास बात नहीं थी । इससे स्वत: ही पता चलता है कि उस समय महिलाओं की सामाजिक दशा क्या रही होगी । डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर ने महिलाओं की इस अवनति का कारण धर्म-ग्रंथों के उल्लेख और उसमें विद्यमान नियमों को बताया, जिनके कारण महिलाओं का सर्वतोन्मुखी विकास न हो सका । इन नियमों और प्रतिबंधों को धार्मिक जामा पहनाया गया । जिनको 'तोड़ना उनका उल्लंघन करना', धर्म का विरोध तथा अधर्म बताया गया । जिसकी वजह से भारत में महिलाओं का आन्दोलन न हो सका । डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर ने अपनी पुस्तक 'हिन्दू नारी का उत्थान और पतन' में इसकी पूर्ण-रूपेण विवेचना की है ।

महिलाओं की पुरुषों द्वारा अधीनता, नियंत्रणता, परतंत्रता, दुष्प्रवृत्ति से रक्षा, दुर्बल पतियों द्वारा भी पत्नी की रक्षा का प्रयत्न आदि-इत्यादि उपर्युक्त पुस्तक में खुलासा किया गया है । जो महिलाओं के विरोध में उल्लेखित हैं । जिनका ज़िक्र इस छोटे लेख में कर पाना संभव नहीं है । इससे पूर्व प्राचीन समय में महिलाओं का मान-सम्मान बरक़रार था इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता । क्योंकि राजाओं के राज्याभिषेक के समय जिन महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका होती थी उसमें रानी भी होती थी । राजा दूसरों की तरह रानी को भी वर प्रदान करता था (जायसवाल-इंडियन पॉलिटी, भाग-2, पृ॰ 16) राज्याभिषेक के पूर्व चयनित राजा केवल रानी की नहीं वरन वह नीची जाति की अपनी अन्य पत्नियों की भी स्तुति करता था (वही पृ॰ 17)। इसी प्रकार वह राज्याभिषेक के बाद अपने प्रमुख शासनाधिकारियों की पत्नियों का भी अभिवादन करता था (वही पृ॰ 82)। ऐसे तमाम उदाहरण हैं, लेकिन मनुस्मृति के बाद महिलाओं की ऐसी अवनति व दुर्गति हुई, जो स्वतंत्र भारत में आज तक विद्यमान है ।

डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर की नारी उत्थान में बहुत रुचि थी । इसी कारण डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर ने अपने लेखों, भाषणों और ग्रंथों में बाल-विवाह, विधवा पुनर्विवाह, महिलाओं

को सम्पत्ति में हिस्सेदारी, महिलाओं की शिक्षा और स्वतंत्रता, उनके प्रति मान-सम्मान का व्यवहार आदि विषयों पर अपनी कलम चलायी और उन विषयों को शब्द फलक पर उभारा । ताकि स्त्री-पुरुष दोनों समान स्तर पर, अवसर और अधिकार प्राप्त कर सकें ।

डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर जितना भारत के शूद्रों, अतिशूद्रों तथा अछूतों की सामाजिक स्थिति के प्रति सजग थे उससे कहीं ज़्यादा समाज में अतिपीड़ित महिलाओं की स्थिति के बारे चिंतित थे । डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर का उद्देश्य-बिन्दु पुरानी व्यवस्था का परिमार्जन ही नहीं अपितु नयी सामाजिक व्यवस्था को स्थापित करना था । डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर की पुस्तक 'जाति प्रथा का उन्मूलन' इस बात का सुबूत है कि वे समाज के नैतिक और धार्मिक स्तर पर सुधार लाना चाहते थे । डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर ने स्त्रियों की सामाजिक दशा को उन्नतशील और उत्थानोन्मुख संविधान के तहत उतना ही बनाया, जितना प्राचीन समय में पतनोन्मुख था ।

डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर ने अपनी पुस्तक 'हिन्दू नारी का उत्थान और पतन' में नारी की धर्मान्धता और स्वतंत्र चिंतन के बारे में खुलकर विवेचना की है क्यों स्त्रियां अपना आन्दोलन भारत में खड़ा नहीं कर सकी । क्यों अपने अधिकारों के प्रति चेतना-शून्य रहीं । डॉ भीमराव अम्बेडकर ने दिनांक : 19 जुलाई वर्ष 1942 को नागपुर में आयोजित 'दलित वर्ग परिषद' में महिलाओं को सम्बोधित करते हुए कहा था कि 'दलितों की प्रगति एवं कल्याण की चाह रखने वाले मनुष्यों तथा महिलाओं को बड़ी संख्या में इकट्ठा होता देखकर निश्चित रूप से सभी को खुशी हो रही होगी । मैं महिला संगठनों पर बहुत अधिक उम्मीदें रखने वाला इन्सान हूं । दलितों की उन्नति के लिए पुरुषों के साथ महिलाओं को भी संगठित होना चाहिए। नारी जगत की प्रगति जिस अनुपात में हुई होगी उसी मानदंड से मैं उस समाज की प्रगति को आंकता हूं ।' मालाबार भू-भाग में महिलाएं अपने गुप्तांगों को पत्तों से ढक कर रखती थी । डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर ने उन्हें कपड़े पहनना सिखाया । साथ उन्हें इन्सान बनने का उपदेश दिया । नागपुर के एक भाषण में उन्होंने महिलाओं को संबोधित करते हुए कहा कि–'आप सफ़ाई से रहना सीखो, सभी अनैतिक बुराइयों से बचो, हीन भावना को त्याग दो, शादी-विवाह की जल्दी न करो और न ही अधिक संतानें पैदा करो । पत्नी को चाहिए कि वह अपने पति के कार्य में एक मित्र, एक सहयोगी के रूप में अपना दायित्व निभाये। यदि पति गुलाम के रूप में बरताव करे तो उसका खुलकर विरोध करो, उसकी बुरी आदतों का निषेध करना चाहिए और समानता का आग्रह करना चाहिए...।' 'यदि तुम्हारे पति शराब पीकर या जुआ खेलकर आयें तो दरवाज़ा मत खोलो, उन्हें खाना मत दो क्योंकि वे शराब पीना छोड़कर, उतने पैसों से बच्चों को तन्दुरुस्त रखने के लिए अच्छा खाना खिला सकते हैं । अच्छे कपड़े पहना सकते हैं ।'

डॉ॰ अम्बेडकर ने महिलाओं के उत्थान का कार्य दलित, शोषित, उत्पीड़ित अछूत समाज से ही नहीं अपितु भारतीय समाज में रहने वाली प्रत्येक महिला वर्ग के लिए

Jamaat-e-Islami Social Service Society (Regd), Gaya

The Society is in service in the field of education, health and Islamic Understanding for the last 34 years. Our resources are limited, our task is tremendous. We seek your co-operation in the following activities:-

1. **IQRA PUBLIC SCHOOL :** Besides 800 paying students, about 150 poor or orphan girls & boys are provided free education upto Matriculation with Islamic Carriculam.
2. **MILLAT HOSPITAL :** Every year about 15,000 poor & needy patients are provided with free medical treatment & medicine besides other services.
3. **ISLAMIC INFORMATION CENTRE :** Established at Bodh-Gaya, where lakhs of foreigners visit every year during Nov-March. The Centre provides reading materials on Islam, distributes Islamic literature and invites interested visitors for discussion besides inter-faith dialogue on regular basis.

Kindly send your Cheque/Draft in favour of the society

(Nayyarruzzama)
Chairman

(Prof. Inamul Huque)
Secretary

J I S S S

Millat Campus, Leitch Road, Gaya-823001

शुरू किया था । बम्बई लेजिस्लेटिव कौंसिल के सदस्य और वायसराय की कार्यकारिणी परिषद में लेबर मेम्बर रहते समय महिलाओं के कल्याण का कार्य जो डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर ने किये उन्हें भला कौन विस्मृत कर सकता है । वर्ष 1955 में डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर ने 'हिन्दू कोड-बिल' की संरचना तथा प्रस्तुति संपूर्ण महिला जगत की मुक्ति के लिए घोषणा पत्र के रूप में भारतीय संसद में की थी ।

डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर का महिलाओं के कल्याण हेतु सबसे बड़ा कार्य पुरुषों के समान अधिकार दिलाना था । जो उन्होंने भारतीय संविधान की धारा-तेरह और चौदह में अपेक्षित प्राविधान करके पूरा किया । चौदहवीं धारा के अनुसार 'भारतीय राज्य क्षेत्र में किसी व्यक्ति को विधि के समक्ष समानता से अथवा विधियों के समान संरक्षण से, राज्य द्वारा वंचित नहीं किया जाएगा ।' और पन्द्रहवीं धारा के अनुसार–'राज्य किसी नागरिक के विरुद्ध केवल धर्म, मूल वंश, जाति, लिंग, जन्म स्थान अथवा इनमें से किसी एक आधार पर कोई विभेद नहीं करेगा ।' डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर ने हिन्दू कोड-बिल के द्वारा सदियों से उपेक्षित पीड़ित महिलाओं को समान अधिकार एवं संरक्षण की बात पर बल दिया । ताकि उन्हें सम्पत्ति, विवाह-विच्छेद, उत्तराधिकार, गोद लेने, बालिग़ नारी की अनुमति के बिना विवाह न करने के संबंध में समान अधिकार प्राप्त हो सके । डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर ने यह भी लिखा था कि एक व्यक्ति सिर्फ़ एक ही पत्नी रख सकेगा तथा विवाह-विच्छेद हुए बिना वह दूसरी शादी नहीं कर सकेगा । डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर परिवार नियोजन के कट्टर पक्षधर थे । उन्होंने नारियों के समर्थन में अपनी आवाज़ सदैव बुलन्द की जो आज और अब भी सार्थक और प्रासंगिक है । यह कहना सर्वथा उचित होगा कि डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर ने महिला वर्ग के लिए न्याय और समानता की सदैव वकालत की । हालांकि सर्वविदित है कि हिन्दू कोड बिल मंत्रिमंडल, पार्लियामेंट तथा बाहर के विरोध की वजह से उस वक़्त पारित नहीं हो सका, परन्तु उसके बाद उसे अलग-अलग भागों में पारित कर विधि सम्मत बनाया गया ।

हिन्दू कोड बिल डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर के हाथों पास हुआ अथवा नहीं हुआ है यह अलग बात है लेकिन यह पूर्णतया स्पष्ट है कि इस बिल से नारी समाज में अपने विषय में सोचने और समझने की भावना का समावेश हुआ । महिलाओं में आज राजनैतिक चेतना का जो असर बढ़ा है वह इसी बिल का परिणाम है । नारी समाज की गुलामी की बेड़िया काटने और उन्हें आज़ादी दिलाने का श्रेय डॉ॰ भीगराव अम्बेडकर को ही जाता है । ऐसे समय में नारी समाज का भी यह दायित्व बनता है कि वे अपनी भाग्यवादी मानसिकता को छोड़े, क्योंकि भारतीय नारियों का भाग्यवादी और अंधविश्वासी दृष्टिकोण उनकी दयनीय और धूमिल दशा का ज़िम्मेदार है । साथ ही पुरुष समाज ने भी उनकी उपेक्षा की है जिसका वह ज़िम्मेदार है । आज महिलाओं को चाहिए कि वे स्वत: शिक्षित और संगठित होकर न्याय और अधिकारों के लिए संघर्ष करें, सजग रहें ।

संपर्क–
108 तकरोही पं॰ दीन दयालपुरम् मार्ग,
इंदिरा नगर, लखनऊ-227105 (उ॰प्र॰)

तपन

जाड़े की धूप अब तपन लगने लगी,
पैर की बिवाई अब दुखन करने लगी ।

आत्मनिर्भरता के आंकड़ों में हम आगे बढ़ गये,
फुटपाथों की ज़िन्दगियां और अधिक बढ़ने लगीं ।

सुहाग के आभूषण अनगिनत पहना दिये,
देश की हज़ारों बहुएं फिर भी जलती रहीं ।

हरित क्रांति के शब्द जाल में हम बहुत खुश हो गये,
पर, राशन की दुकानों पर स्टाक शून्य दिखती रहीं ।

हथियारों की दौड़ में हम तेज़ी से आगे बढ़ गये,
अपराधियों के बमों से निरपराध मरने लगे ।

समाजवाद का राग सुनते कान बहुत पक गये,
अलगाववाद की जड़ें और गहरी होने लगीं ।

उदारनीति के भंवर जाल में इतने हम संपन्न हुए
शास्त्री जी के जय किसान, आत्महत्या करने लगे ।

जाड़े की धूप अब तपन लगने लगीं,
पैर की बिवाई अब दुखन करने लगीं ।

ईश्वर दयाल जायसवाल
संयोजक-अदबी विचार मंच
मो॰ हयातगंज, टांडा, अम्बेडकर नगर (उ॰प्र॰)

بسم اللہ الرحمن الرحیم

"नेकी यह है कि
अल्लाह की मुहब्बत में
अपना दिलपसन्द माल
रिश्तेदारों और यतीमों पर,
मिस्कीनों और मुसाफ़िरों पर,
मदद के लिए हाथ फैलाने
वालों पर और ग़ुलामों की
रिहाई पर ख़र्च करो ।"

(कुरआन)

Ek Hamdard, Ranchi
(Jharkhand)

ऐसे पनपेगा सद्भाव

'कान्ति' फ़रवरी 2013 के अंक का आपका संपादकीय बहुत ही चिंतनपरक, विश्लेषणात्मक एवं उपयोगी था । सुन्दर लेखन के लिए बधायी । आपके पत्र में हिन्दू सामान्य जन व विशेष जन दोनों की रुचि बढ़ती जा रही हैं–ऐसा पाठक-पत्रों से पता चलता है । यह आपके परिश्रम व सदाशयता का कमाल है ।

भारतवर्ष–अपने देश की प्रगति पर आज समस्त विश्व की दृष्टि है । चिंतन की जो अजस्र धारा यहां बहुत पुराने काल से चली और फिर वेदों तक पहुंच कर और समृद्ध हुई । तथा बौद्ध व जैनों में अनीश्वरवाद होने पर भी भारत के विकास में उनके तार्किक विचारों ने अपार सहयोग दिया है ।

इसके अतिरिक्त इस्लामी ज्ञानियों, विद्वानों, संतों ने व अनेक दिशा-लेखक-कवि-कलाकारों व साहित्यिकों ने भारतीय बौद्धिक आध्यात्मिक परम्पराओं को समृद्ध संपन्न बनाने में अपूर्व-अप्रतिम योगदान दिया है । भारतीय मुसलमान मत-निरपेक्षवाद या सर्व-समन्वयवाद व आपसी समझ में विश्व के मुसलमानों से बहुत आगे हैं, तर्क व ज्ञान से अधिक संपन्न हैं । अत: हमें तो लगता कि हिन्दू-मुस्लिम या कि ईसाई मान्यताओं से संबंधित समस्याओं का हल भारत के मुसलमान ही निकालेंगे ।

मेरा विचार व कल्पना है कि 25 या 50 साल बाद विज्ञान की प्रगति और उत्तम प्रशिक्षण के कारण मानवीय विश्वास के विभाजन समाप्त हो जाएंगे और आस्था-विश्वास प्राय: एक से हो जाएंगे । इस विज्ञानाधारित, संतुलित और समन्वित समाज को विकसाने का कार्य 'कान्ति' को क्यों न मिले । कृपया इस पर चिंतन व संवाद करें । विज्ञ जनों से और मानवता के हित में उपयुक्त क़दम उठाएं ।

एक बात आप पहले से ही जानते हैं । फिर भी सुझाव-परामर्श देने का विचार रखता हूं–

(1) क्या ही अच्छा हो कि इस्लाम की पत्रिका 'कान्ति' ही एक ऐसा मंच बने जो इस्लाम को प्रमुख मानते हुए भी वेदोपरिषद्, बाइबल और तौरेत आदि से समानभाव वाले प्रसंग निकाले । तथा विरोध और बेमेल तत्वों पर अहंवादी ध्यान देने की बजाय सामान्य, समान और सामंजस्य पूर्ण तत्वों, कथनों, प्रसंगों को इस पत्रिका में प्रस्तुत करे ।

आप भी स्वयं महसूस कर रहे होंगे कि भाविस्यक आस्था धाराएं एकांगी नहीं बहुलांगी होंगी, अनैक्यात्मक नहीं एकात्मक होंगी । विश्व के अनेक धर्मों में सबसे युवा धर्म इस्लाम ही यह कार्य करने में संक्षम है । पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने किसी धर्म का विरोध के नाते विरोध नहीं किया तथा बलपूर्वक धर्मांतर की बात उन्हें नापसन्द थी । अत: उनके गौरव-वचनों को ध्यान में रखकर सर्वधर्म सम्मिलन का नहीं बल्कि सर्वधर्म के एक से भागों को जन साधारण के सामने रखा जाए । तथा जोशीले प्रचारक भी अपना-अपना धर्म प्रसार-प्रचार करें परन्तु दूसरे की बुराई करके और अहंवादी श्रेष्ठता दिखाकर नहीं, बल्कि वार्तालाप द्वारा अपने धर्म की श्रेष्ठ बातों को खुलकर सामने रखें और चुनाव करने का खुला अवसर दिया जाए । छोटी लकीर को बिना मिटाये बड़ी लकीर खींच कर पहली लकीर को छोटा कर दिया जाए ।

मेरा विचार व कल्पना है कि 25 या 50 साल बाद विज्ञान की प्रगति और उत्तम प्रशिक्षण के कारण मानवीय विश्वास के विभाजन समाप्त हो जाएंगे और आस्था-विश्वास प्राय: एक से हो जाएंगे । इस विज्ञानाधारित, संतुलित और समन्वित समाज को विकसाने का कार्य 'कान्ति' को क्यों न मिले । कृपया इस पर चिंतन व संवाद करें । विज्ञ जनों से और मानवता के हित में उपयुक्त क़दम उठाएं ।

(2) "नारी पर अत्याचार" का प्रश्न अत्यंत जटिल है । आपने उस पर अति उपयुक्त व्याख्या दी ही है, परन्तु इस विकटतम समस्या का निदान ही नहीं कर पा रहे आज

के तथाकथित विद्वान तो फिर उपचार में क्या करेंगे । इस नारी विषय पर इस्लाम को चिंतन शत-प्रतिशत उपयुक्त है–आज भी आगे भी । आप जो स्वयं जानते ही हैं फिर भी मैं इस भयावह समस्या के क्यों-कैसे पर कुछ बिन्दु प्रस्तुत कर रहा हूं–

(क) यह कुदरती नियम है कि नारी को देखकर, नारी अंगों पर दृष्टि पड़ते ही पुरुष मन में विचलन व स्पन्दन पैदा होते ही हैं, होते ही हैं । यह भावनात्मक विषय है । इसमें विचार की शक्ति निष्प्रभावी ही होती है । इसका उपाय त्वरित रूप में तो दंड ही है, परन्तु दीर्घकालीन रूप में प्रशिक्षण ही एक मात्र उपाय है ।

(ख) नारी-आकर्षण सामान्य, तीव्र व विकृत तीन प्रकार का मुख्य रूप से होता है । सामान्य तो हानिकर नहीं है । तीव्र आकर्षण में भूल होने की गुंजाइश रहती है । वह बहुत तीव्र होने पर विकृति की ओर जा सकता है, पर विकृत आकर्षण को मानसोपचार, मनस् विश्लेषणात्मक चिकित्सा व औषधि प्रयोग से ठीक किये जाने की व्यवस्था हो और तिस पर भी विकृति न हटे तो 'दंड' ही एक मात्र रास्ता है ।

(ग) हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) स्त्री अंग ढकने की बात कही है, वैसी ही वेद में भी बहुत स्पष्ट है । पर इसे कहते ही मीडिया तथा अंग्रेज़ी-शिक्षित आधुनिक बुद्धिवादी चिल्लाने लगते हैं और नवयुवतियों या उनकी पैरोकार अधिक आयु की स्त्रियां तीक्ष्ण विरोध करने लगती हैं । यह तार्किक धर्मस्थ कथन कोई समझने को तैयार ही नहीं है, अत: चुप रहने के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं है ।

(घ) मरणोपरांत जीवन चाहे परलोक में जन्नत-दोज़ख़ का हो चाहे हिन्दू पुनर्जन्म रूपी मरणोपरांत की नियति–इस पर आज के सामान्य जनों विशेषकर युवाओं की किंचित भी श्रद्ध नहीं है । परलोक की अवश्यंभाविता तथा चैतन्य तत्व की निरंतरता–शाश्वतता का विचार ठीक से समझा जाए तो मनुष्य सब पुकार के अपराध व कुकृत्य से बचना चाहेगा । पर 2-3 वर्षीय विज्ञान की घोषणाओं से लाखों और हज़ारों वर्षीय अनुभवपुष्ट धार्मिक घोषणाओं को लोग काट रहे हैं, त्याग रहे हैं, वर्जित कर रहे हैं । परन्तु चेतना के सातत्य को समझे बिना सुधार की गुंजाइश प्रत्यल्प है ।

(न) ब्रह्मचर्य का जो मूढ़ अर्थ रूढ़ हो गया है उसने बहुत हानि की है भारत की । 'ब्रह्मचर्य' का सीधा-सरल अर्थ ब्रह्म या ईश्वर के प्रति विचारचर्या व कर्मचर्या है । न जाने ब्रह्मचर्य का स्त्री-संपर्क व सहवास विरोधी, अर्थ कैसे प्रचलित हो गया ? जैसे कुरआन मजीद में ब्रह्मचर्य टाइप की कोई बात नहीं है, वैसे ही वेद में भी स्त्री विरोध या स्त्री सहवास के विरोध का कोई प्रसंग नहीं है । वहां ब्रह्मचर्य तपस्या-उपासना व ईश्वराराधन की ही प्रमुख वृत्ति है । महर्षि विश्वामित्र, जो भारतीय हिन्दुओं के महान गायत्री मंत्र के प्रस्तोता हैं गायत्री मंत्र के बाद भी संतानों के पिता बने हैं । इस दृष्टि को पुन: सामने लाना होगा ।

(च) "नारियों तुम्हारी खेती है"–इस वाक्य पर सुधारवादी बहुत नाक-भौंह सिकोड़ते हैं । जबकि नबी (सल्ल०) का कथन था कि नारी-संपर्क सन्तति को जन्म देने के प्राकृतिक कर्तव्य के पालन के लिए है । जैसे खेती की उपज के उपयोगी होने के कारण खेत व खेती का उपयोग व ज्ञानपूर्ण सीमित उपभोग उचित है वैसे ही नारी का उपयोग व ज्ञानपूर्ण सीमित उपभोग सहमति पूर्ण सहवास उचित है । भारतीय कामशास्त्र के अनेकों ग्रंथ व आयुर्वेद भी इस सीमित स्त्री-उपभोग से सहमत है । संन्यासियों के अत्यधिक, अत्युक्तिपूर्ण नारी विरोध ने ही हिन्दू मन की नारी संबंधी विकृतियों को जन्म दिया है ।

ध्यातव्य है कि संन्यास को वेदों ने महत्व ही नहीं दिया । व्रात्य व श्रमण या आर्हत नाम से उनका अत्यंत हल्का प्रयेग मस्त्र दिया है । बल्कि गृहस्थ जीवन से विमुख को महत्व ही नहीं दिया । वेदोक्त कोई भी कर्मकांड व उपासना स्त्री के अभाव में हो ही नहीं सकती ।

अब प्रश्न है कि अंधों का इलाज तो किया जा सकता है, परन्तु आंख होने पर भी आंखें बन्द किये रहने वालों का क्या इलाज करें ?

प्रत्येक धर्म ने, इस्लाम व हिन्दू-ईसाई सभी ने 'नारी' की उत्पत्ति पुरुष के बाद बतायी है । अर्थात् मानव विकास में नारी के योगदान की उपेक्षा परमात्मा ने भी नहीं की । फिर भला नारी पर अत्याचार कितना बड़ा गुनाह व पाप है ।

कृपया ज्योति फैलाने का कार्य करते रहे । पत्र कुछ बड़ा हो गया । परंतु कम से कम लिखने का प्रयास किया है हालांकि विषय जटिल, विस्तृत और अतिगहन है ।

डॉ० ज्ञानचन्द्र

6562/1, चमेलियान रोड,

दिल्ली-110006

देखते रह जाओगे

रबड़ का नाड़ा
बाबाओं का झाड़ा
और बढ़ता भाड़ा
देखते रह जाओगे ।

बेशर्मी का दौर
प्रदूषण का शोर
और घोटालों का ज़ोर
देखते रह जाओगे ।

बात में झूठ
भाइयों में फूट
और बाज़ार की लूट
देखते रह जाओगे ।

ज़ख़्म गहरा
लगता पहरा
और शासन बहरा
देखते रह जाओगे ।

लड़ाई के दंगल
रिश्ते में अंकल
और घटते जंगल
देखते रह जाओगे ।

रंगे हुए केश
गेरुआ भेष
और बढ़ता द्वेष
देखते रह जाओगे ।

मरता फ़र्ज़
बढ़ता मर्ज़
और चढ़ता क़र्ज़
देखते रह जाओगे ।
गुटकों का चलन
रिश्तों में जलन
और चरित्र हनन
देखते रह जाओगे ।

ऋण का शिकंजा
भ्रष्टाचार का पंजा
और आदमी गंजा
देखते रह जाओगे ।
बेर झाड़ी का
वैद्य नाड़ी का
और धंधा कबाड़ी का
देखते रह जाओगे ।

पशु की चीचड़
आदमी लीचड़
और राह में कीचड़
देखते रह जाओगे ।

रोहित यादव
सैदपुर, मंडी अटेली-123021 (हरि०)

फ़ैशनी दोहे

कपड़ा मिल की मालकिन तन कपड़ा न भाय,
डाले वह जो बदन पर उतरा-उतरा जाए ।

नाम मात्र के वस्त्र में वह तन को दर्शाय,
लाज नहीं आती उसे दर्शक खूब लजाय ।

चीर हटा कर वक्ष से बेटी घर से जाय,
दे उलाहना बाप को हंसी सभी को आय ।

तन से वस्त्र हटाय के इतराय जब नार,
सुधीजनों की देखकर आंखें जातीं हार ।

वस्त्र घटा कर बदन से बोल्ड बने यदि नार,
गधि, कुतिया को क्या कहें बिन कपड़ों के यार ।

तन पर कपड़ें हैं नहीं ये फैशन की बात,
जो ईश्वर ने है दिया लिखा रहीं वह गात ।

फ़ैशन की आंधी चली उड़ा देह से चीर,
आदम युग-सा दीखता नयन बिखेरें नीर ।

फ़ैशन के आकाश में, परियां उड़तीं रोज़,
फ़ैशन से सब त्रस्त हैं, फिर भी नित नयी खोज ।

डॉ० राकेश अग्रवाल
'हिमदीप' राधापुरी, हापुड़-245101 (उ०प्र०)

आंखें : क़ुदरत का अनमोल तोहफ़ा

■ बिजेन्द्र कोहली गुरदासपुरी

हमारी खोपड़ी में दो सॉकेटों में दो छोटे-छोटे यंत्रों के रूप में आंखें सुरक्षित हैं जिनका व्यास लगभग 2.5 सेंटीमीटर होता है । इनकी तीन परतें होती हैं कॉर्निया ही ऐसा पारदर्शक भाग है जिसमें रुधिर नलिकाएं नहीं होतीं और जिसे एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के शरीर में लगाया जा सकता है तथा एक अंधे व्यक्ति के जीवन में भी उजाला लाया जा सकता है । तभी तो यह कहा जाता है कि जो लोग जीते जी अपने मरने के बाद अपनी आंखें दान कर जाते हैं, वे मरकर भी अमर हो जाते हैं ।

आंख की आइरिस के रंग के कारण ही आंखों का रंग होता है । आयरिस के मध्य में आंख की पुतली होती है जो प्रकाश को नियंत्रित करती है । यह कम प्रकाश में फैलती है और ज़्यादा प्रकाश में सिकुड़ जाती है । आंख का लैंस फाइबर्स का बना होता है और इसमें एक विशेष क्षमता होती है कि इस लैंस की मोटाई कम या ज़्यादा हो सकती है । यदि यह लैंस मोटा हो जाए तो इसकी दूरी कम हो जाती है और नज़दीक की वस्तुएं स्पष्ट दिखायी देने लगती हैं लेकिन दूर की वस्तुएं स्पष्ट नहीं दिखायी देती हैं । इसी प्रकार अगर लैंस की मोटाई कम हो जाए तो इसकी फोकस दूरी बढ़ जाती है और ऐसा होने पर दूर की वस्तुएं स्पष्ट दिखायी देती हैं । आंख का निकटतम बिन्दु 25 सेंटीमीटर है अर्थात कम से कम इतनी दूरी तक तो स्पष्ट दिखायी देता ही है ।

दो आंखों का एक प्रतिबिम्ब पीले बिन्दु पर पड़ता है जो रेटिना का विशेष भाग है और जहां कोन एवं राड़ सैल होते हैं । दो आंखों का एक प्रतिबिम्ब देखने से त्रिआयामी चित्र मानस पटल पर पड़ता है और इससे चित्र की गहराई का ज्ञान होता है तथा दूरी की स्पष्टता का भी ज्ञान होता है ।

इन्सान, बन्दर, बिल्ली, पक्षी, सांप, मेंढक, मछली, कीड़े इत्यादि प्राणी एवं जीव-जंतु अपनी आंखों के ज़रिये विभिन्न रंग देख सकते हैं क्योंकि इनकी आंखों में विशेष कोन सैल होते हैं । ये हरा, लाल, नीला रंग देख सकते हैं । गाय-भैंस रंग नहीं देख सकते । उन्हें सलेटी रंग ही नज़र आता है । उल्लू एवं बिल्ली रात के समय ज़्यादा देखते हैं, क्योंकि इनकी आंख की रेटिना में राड सैल ज़्यादा होते हैं । मधुमक्खी, चींठी, मकड़ी और गोल्ड फिश अल्ट्रा वायलेट प्रकाश को भी देख सकती हैं । ख़रगोश एवं गिरगिट दोनों आंखों से अलग-अलग देख सकते हैं ।

वस्तुत: आंख एक यंत्र है, वस्तु के प्रतिबिम्ब की संवेदना दिमाग़ तक नेत्र-नाड़ी द्वारा पहुंचती है । हमारा दिमाग़ देखता है, पहचान करता है और हमें बताता है कि हम क्या देख रहे हैं । रंग देखने के कोन सैल तीन तरह के होते हैं । लाल, हरी व नीली कोन कोशिकाओं में अलग-अलग रंग देखने की क्षमता होती है ।

आंख की छह मांसपेशियां होती हैं जो आंखों को घुमाती हैं । यदि ये कमज़ोर हों तो आंखों में भेंगापन आ जाता है । यदि लैंस अपनी पारदर्शिता पूरी तरह से खो बैठे तो इसे अंधापन या 'सफ़ेद मोतिया' कहते हैं । ऐसी स्थिति में लैंस निकालकर बड़े लैंस की ऐनक लग जाती है ।

यदि आंख के अगले चैम्बर में एक्वस रस बढ़ जाए तो यह आंख के पीछे की तरफ़ रेटिना पर दबाव डालता है । इससे रेटिना कोशिकाएं दबाव पड़ने की वजह से नष्ट हो जाती हैं और इनकी रुधिर नलिकाएं व संवेदी नाड़ियां भी नष्ट हो जाती हैं एवं अंधापन हो जाता है । इसका इलाज है कि आंख के एक्वस ह्यूमर को थोड़ा निकाल लिया जाता है । आंख में एक नलिका होती है जो एक्वस ह्यूमर की मात्रा को स्थिर रखती है । इसे 'शलीय नली' कहा जाता है । इस नली को खोल दिया जाता है या नयी नलिका बना दी जाती है, इसे 'काला मोतिया' कहते हैं ।

यदि आंख का कॉर्निया या लैंस ऊबड़-खाबड़ हो जाए तो व्यक्ति को लहरों जैसी सड़कें या लोग नज़र आते हैं । इस स्थिति को ठीक करने के लिए बेलनाकार लैंस की ऐनक लगती है । अपनी आंखों को दोषरहित रखना हर मानव की अपनी ज़िम्मेदारी है क्योंकि 'आंख' हैं तो जहान हैं अर्थात अगर आंखें ही नहीं हैं तो यह दुनिया बिल्कुल नीरस और उबाऊ हो जाएगी ।

शिक्षा में मातृभाषा का महत्व

■ एस॰ बी॰ मुरकुटे

भाषा संस्कृति की देन है और उसकी अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से होती है । मातृभाषा भाषा का सबसे सरलतम रूप है जिसे कोई भी बच्चा बिना प्रयास के सीख लेता है । छोटा बच्चा अपनी मातृभाषा में सोचता है, कल्पनाएं करता है और स्वप्न देखता है । मातृभाषा बच्चे के जीवन का अभिन्न अंग बन जाती है । भाषा बच्चे के जीवन की अमूल्य निधि बन जाती है । भाषा बच्चे के हृदय की धड़कन बन उसे जीवन देती है ।

बालक के विकास का मूलाधार मातृभाषा है । मातृभाषा के द्वारा ही बालक के व्यक्तित्व का विकास, नागरिकता के गुणों का पोषण, जीविकोपार्जन की क्षमता, सौंदर्यानुभूति की क्षमता, सांस्कृतिक चेतना और सृदनात्मक शक्ति का विकास होता है । मातृभाषा का संबंध समाज, संस्कृति, मानव, मन-मस्तिष्क तथा भाषा विशेष की भाषा व्यवस्था से होता है । मनोवैज्ञानिकों के अनुसार मातृभाषा समस्त मानसिक क्रियाओं, मनोभावों और मनोवेगों की अभिव्यक्ति का साधन है । मातृभाषा के माध्यम से ही समस्त मानसिक क्रियाएं होती हैं । मातृभाषा हमारी संकल्पनाओं का भी आधार है । समाजशास्त्री दृष्टि से भाषा सामाजिक संगठन, सामाजिक मान्यताओं और सामाजिक व्यवहार को व्यक्त करती है ।

प्रसिद्ध भाषाशास्त्री रॉबर्ट लैंडे ने कहा है–भाषा का गहन संबंध मानव अनुभूति तथा क्रियाओं से है । मातृभाषा व्यक्ति के लिए माता के समान वंदनीय तथा आत्मीय होती है । हमने अपने देश में अंग्रेज़ी की शिक्षा अनिवार्य कर दी है जो बच्चों पर एक अनावश्यक बोझ है । अंग्रेज़ी माध्यम की शिक्षा ने हमारे देश के करोड़ों बच्चों को दिमाग़ी तौर पर पंगु तथा अपाहिज बना दिया है । त्रिभाषा समूह के अंतर्गत अंग्रेज़ी का अध्ययन अनिवार्य है । यह ठीक है । अंग्रेज़ी अध्यापक की कक्षा में एक सन्नाटा रहता है, अंग्रेज़ी अध्यापक यह समझता है कि उसका बड़ा दबदबा है । इसके विपरीत हिन्दी या मातृभाषाओं की कक्षा में बालक मुखर रहते हैं । वे अपनी कठिनाइयां पूछ सकते हैं । देश के केवल दो प्रतिशत लोगों की मातृभाषा अंग्रेज़ी है और तीन प्रतिशत छात्र अंग्रेज़ी माध्यम से शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं । शेष 97 प्रतिशत छात्रों पर ज़बरदस्ती अंग्रेज़ी थोपी जा रही है ।

जहां खोजने पर नहीं मिलती लड़कियां

❖ विद्या प्रकाश

पढ़ने सुनने में थोड़ा अटपटा अवश्य लगता है मगर है हक़ीक़त । हरियाणा का एक गांव ऐसा भी है जहां लड़कों के मुक़ाबले में लड़कियों की संख्या आधी भी नहीं है । इससे बड़ी विडम्बनापूर्ण स्थिति क्या होगी कि गांव के युवा सरपंच को अपने विवाह के लिए भी एक अदद लड़की खोजने में खासी परेशानी का सामना करना पड़ा क्योंकि न केवल इस गांव बल्कि आसपास के क्षेत्रों में भी हालत इससे मिलती-जुलती है तथा इस इलाक़े में लड़कियों की कमी है।

झज्जर ज़िला लिंगानुपात को लेकर चर्चित है । यह देश का अकेला ऐसा जनपद है जहां वर्ष 2010 की जनगणना के अनुसार 1000 लड़कों पर लड़कियों की संख्या केवल 774 थी । जनपद के बरहाणा गांव में लैंगिक अनुपात की स्थिति बद से बदतर है । वर्ष 2010 की जनगणना में इस गांव में 1000 लड़कों पर केवल 378 लड़कियां थी । गांव के युवा सरपंच प्रदीप कुमार के कथनानुसार लाख प्रयासों के बावजूद अभी भी गांव में लड़कियों की संख्या 400 के आसपास है । वर्ष 2010 में गांव में कुल 203 बच्चों का जन्म हुआ था जिनमें लड़कों की संख्या 148 थी जबकि लड़कियों की संख्या महज 55 तक सीमित थी । जब यह मुद्दा विश्व स्तर पर उछला तो आंकड़ों में हेराफेरी आरंभ हो गयी ।

आंकड़ों में इस हेराफेरी का अंदाज़ा इसी से किया जा सकता है कि वर्ष 2011 में गांव में 164 बच्चों की पैदाइश बतायी गयी और यह जानकारी दी गयी कि इन बच्चों में 94 लड़के तथा 70 लड़कियां थी । यदि इस संबंध में सभी पहलुओं पर गंभीरतापूर्वक विचार किया जाए तो सरपंच प्रदीप कुमार द्वारा प्रदत्त एवं सूचित आंकड़ों को ही प्रामाणिक, विश्वसनीय तथा तथ्यपूर्ण माना जा सकता है । लैंगिक अनुपात में भारी अन्तर के चलते विवाह से संबंधित अनेकानेक समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं तथा समय पर विवाह न हो पाने के कारण अवैध संबंधों को बढ़ावा मिल रहा है ।

टिमटिमाते तारे

तारे न तो टिमटिमाते हैं और न वे छोटे-छोटे होते हैं। वायुमंडल की विभिन्न परतों से गुज़रते उनके प्रकाश के कारण वे हमें टिमटिमाते नज़र आते हैं। उनके और हमारे बीच की दूरियां इतनी ज़्यादा हैं कि टेलिस्कोप से देखने पर भी हम उनका वास्तविक रूप नहीं देख सकते। दरअस्ल कोई भी तारा अपनी धुरी पर घूमता हुआ, हज़ारों-लाखों डिग्री सेल्सियस के तापमान वाला गर्म गैस का विशाल गोला है। इतना विशाल कि लाखों धरतियां एक में समा जाएं। तारे को जिस तरह बहुकोणीय चित्रित किया जाता है, वैसा भी नहीं होता। अपने नज़दीकी तारे सूर्य की प्रचंडता को महसूस कर हम सुदूर टिमटिमाते तारों का अनुमान लगा सकते हैं।

तारे बहुत दूर भले ही हों, हम उनके प्रकाश का अध्ययन कर उनके बारे में बहुत कुछ जान सकते हैं। तारों का प्रकाश कई तरह की ऊर्जा के विभिन्न रूपों का मिश्रण है। जो प्रकाश हम अपनी आंखों से देखते हैं, वह अंतरिक्ष से आता विद्युत-चुंबकीय विकिरण का छोटा-सा हिस्सा है।

हमारी आंखें एक सीमा तक ही देख पाती हैं और हम पराबैंगनी (अल्ट्रावायलेट), एक्स तथा गामा किरणों को नहीं देख सकते, जो कि हमें दिखायी देने वाले प्रकाश से ज़्यादा ऊर्जावान है। हम इन्फ्रारेड किरणों को भी नहीं देख सकते जिसकी हम अपनी त्वचार पर गर्मी महसूस करते हैं। इसके साथ ही हम रेडियो तरंगों को भी नहीं देख सकते जो कि रेडियो और टेलीविज़न का प्रसारण संभव बनाते हैं।

हर तारा प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रकाश तरंगों के मिश्रण को छोड़ता है। ये तरंगें अंतरिक्ष में प्रकाश की गति (186,000 मील प्रति सेकेंड) से यात्रा करती हैं। वैज्ञानिक टेलिस्कोपों की मदद से तारों के प्रकाश को इकट्ठा करते हैं, फिर उन्हें अलग-अलग वर्गों में विभक्त करते हैं जिससे पता चलता है कि तारा किस-किस चीज़ से बना है और वह कितना गर्म है। हमारे वायुमंडल में प्रत्यक्ष दिखने तरंगें ही यात्रा कर सकती हैं। इन्हें तरह-तरह के टेलिस्कोप से इकट्ठा किया जाता है। इन टेलिस्कोपों को वायुयानों, राकेट और गुब्बारों से ऊपर भेजा जाता है ताकि वे वायुमंडल द्वारा रोके जाने वाले प्रकाश को ऊपर ही इकट्ठा कर सकें।

अपने गुरुत्व बल के कारण तारों के गैस आपस में जुड़ी रहती है। सभी तारे अपनी गैसों को जलाकर ऊर्जा प्राप्त करते हैं। यहां 'जलना' कोयला जलने जैसा नहीं होता। बल्कि इसके केन्द्र में नाभिकीय प्रतिक्रियाएं होती हैं जिसे 'न्यूक्लीयर फ्यूजन' कहा जाता है। किसी भी तारे में गैस की मात्रा का बहुत महत्व होता है क्योंकि यही तारे के गुरुत्व, तापमान, दबाव, घनत्व और आकार को प्रभावित करता है।

सूर्य की तरह ज़्यादातर तारे मुख्यत: दो गैसों--हाइड्रोजन और हीलियम से बने हैं। इनमें कम मात्रा में और भी तत्व होते हैं। ये गैसें तारे के केन्द्र में संपीड़ित होती हैं जो सघन और गर्म बन जाती हैं--इतनी गर्म कि यहां 'न्यूक्लीयर फ्यूजन' होने लगता है। हाइड्रोजन के परमाणु मिलकर हीलियम बनाते हैं। इससे द्रव्यमान कम होता जाता है और ऊर्जा मुक्त होती रहती है। यह ऊर्जा केन्द्र से यात्रा करती हुई तारे की सतह तक पहुंचती है जहां यह प्रकाश और गर्मी के रूप में मुक्त होती है।

● दिनेश रावत

इस्लामी पुस्तकें

आपकी अमानत आपकी सेवा में	(मौलाना क़लीम सिद्दीक़ी)	₹10
हमें हिदायत कैसे मिली?	(मोबीन शाह)	₹20
अनमोल इस्लाम और आज का दौर	(सलीम अहमद हाशमी)	₹60
मय्यित के अहकाम व मसाइल	(शाहिद हुसैन नदवी)	₹25

पुस्तक विक्रेता और दावती काम करनेवालों के लिए विशेष छूट

KHALID BOOK DEPOT

Head Office: Chander Ghata, Maqbara, Kota - 6 (Raj.)
Ph.: 0744-2381650, 08233318955 E-mail: mkkhan123456@gmail.com

Branch Office: **JAMAL BOOK DEPOT**
25/B-1 (Basement) Rehman Complex, Batla House Chowk, Jamia Nagar, N.Delhi-25 | Ph.: 9990507638

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से मुद्रित।
फोन: 09818799223, 011-26949430
संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णत: प्रतिबंधित है।

अल-मर्कज़ुल इस्लामी वेल्लोर (तमिलनाडु)

आर॰एन॰ पलायम, वेल्लोर-635757

फ़ोन : 0416-2223825

इस्लामिक सेन्टर वेल्लोर (तमिलनाडु) नवमुस्लिम पुरुषों एवं महिलाओं की शिक्षा एवं प्रशिक्षण के लिए सन 78 ई॰ से स्थापित भारत की अपने तरह की पहली संस्था है जिसकी निम्नलिखित विशेष गतिविधियां हैं–

- दक्षिण तमिलनाडु के चार ज़िलों–मदुराई, रामनाथपुरम, थैनी, तंजावर में जहां बड़ी संख्या में लोग हिदायत क़बूल कर रहे हैं, 25 मस्जिदों के निर्माण के बाद इमामों की नियुक्ति और मस्जिदों की देखभाल इस्लामिक सेन्टर, वेल्लोर के सीधे निगरानी में है ।
- नवमुस्लिम पुरुषों एवं महिलाओं और नयी नस्लों की स्थायी शिक्षा एवं प्रशिक्षण के लिए सुबह-शाम मस्जिदों में मकतब की व्यवस्था । नवजवान नस्ल के लिए आधुनिक एवं सामयिक शिक्षा के लिए स्कूल व कॉलेज की फ़ीस और छात्रावास की सुविधा उपलब्ध है ।
- हिदायत पाने वालों के लिए इस्लाम की बुनियादी शिक्षा–अक़ीदा, इबादत, पाकी, दुआएं और सूरतों को याद कराने के अलावा इस्लामी मान्यताओं से अवगत कराने के लिए चार महीनों का दीनियात का कोर्स, खाने, रहने और सफ़र के ख़र्च की सहूलतों के साथ मदर्सा और होस्टल (छात्रावास) की सहूलत वेल्लोर शहर में उपलब्ध है ।
- नवमुस्लिमों की उच्च शिक्षा के लिए तीन वर्षीय कोर्स ''कुल्लियतुल इस्लाम'' व ''कुल्लियतुल मआरिफ़'' लड़कों और लड़कियों के लिए अलग-अलग मदर्से और खाने व रहने की व्यवस्था है ।
- चेन्नई शहर में इस्लामिक एकेडमी और पोस्टल लाइब्रेरी के ज़रिया इस्लाम से अवगत होने का एक पाठ्यक्रम (20 सेट) तमिल व अंग्रेज़ी भाषा में देशवासियों तक इस्लाम की हक़्क़ानियत पहुंचाने के ज़रिये के तौर पर अपनाया गया है ।
- देहोतों की कुल 16 मस्जिदों में इमामों, ख़तीबों, 6 दाइयों, कुल्लियतुल इस्लाम और कुल्लियतुल मआरिफ़ के लिए 16 शिक्षक, चार माह के दीनियात के कोर्स के लिए 6 शिक्षक, छात्रावास के लिए 2 वार्डन, मतबख़ के लिए चार कारकुन, चौकीदार, प्रशासनिक ज़िम्मेदारी के लिए 10 लोगों की निगरानी में इस्लामिक सेन्टर, वेल्लोर ख़ालिस नवमुस्लिमों और नवमुस्लिम परिवारों की सेवा में लगा हुआ है ।
- नवमुस्लिम लोगों विशेषकर लड़कियों के शादी-विवाह, उच्च शिक्षा, सामाजिक समस्याओं का समाधान और उन्हें ख़ुशगवार और पुरबहार इस्लामी आचार विचार से सुशोभित जीवन के लिए इस्लामिक सेन्टर, वेल्लोर संघर्षरत है ।
- तमिलनाडु के 32 ज़िलों के अलावा दक्षिणी और उत्तरी भारत विशेषकर केरल, कर्नाटक आंध्र प्रदेश, गोवा, पांडेचेरी, महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल के नवमुस्लिमीन भी इस्लामिक सेन्टर, वेल्लोर से लाभांवित होते हैं ।
- अब तक 7773 लोग दीनियात का कोर्स पूरा कर चुके हैं, जिनमें 4879 पुरुष और 2876 महिलाएं हैं ।

उपरोक्त सेवाएं मिल्लत के सहयोग से ही अंजाम पा रही हैं । अतियात़, सदक़ात एवं ज़कात से सहयोग की अपील की जाती है । मनी ऑर्डर या ड्राफ़्ट सेन्टर के पते पर भेजवाए जा सकते हैं ।

यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया
On line Account UBINO 533301
Vellor Branch A/c No. 330010100190006

ए॰ शब्बीर अहमद
अध्यक्ष

सी॰ तुफ़ैल अहमद
जनरल सेक्रेट्री

Posted on 20-21 June 2013
July 2013
E-mail: kantimonthly@hotmail.com
Publishing Date: 18.6.2013

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2012-2014
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2012-14

COMMITMENT TO QUALITY

THE FOUNDATION STONE OF OUR EVERY VENTURE

AFFLUENCE
PRIME OFFICE SPACES, VADDEM



GRANDEUR
2 & 3 BEDROOM APARTMENTS & PENTHOUSES, DABOLIM



Serenity
Luxurious Three Bedroom Row Villas, Dabolim



The Mohidin Group is committed to excellence in quality and value for money since 1958. Be it residential or office spaces, we deliver world-class structures with the most contemporary designs and high-quality fittings. With foundations as strong as these, it is needless to say what the final outcome will be.

MOHIDIN PROPERTIES & HOLDINGS

0-1, FIRST FLOOR, COMMERCE CENTRE, NEXT TO OLD BUS STAND, VASCO-DA-GAMA, GOA, INDIA - 403802
PHONE : +91 9373113145, 0832 - 2512415, 2512418, 2514755 FAX : +91 832 2514755
EMAIL : groupmail@mohidins.com | www.mohidinproperties.com